डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित | अश्विन कृष्ण पक्ष 30, संवत 2081 | डालटनगंज (मेदिनीनगर), बुधवार, 02 अक्टूबर 2024, वर्ष-30, अंक- 348, पृष्ठ-16 ₹3.00 रजिस्ट्रेशन नं: आरएनआई. 61316/94 | www.rastriyanaveenmail.com

सत्यमेव जयते

झारखण्ड सरकार GOVERNMENT OF JHARKHAND

आजादी का बिगुल फूंकने वाले

अमर शहीदों के झारखण्ड में

श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री

जी का हार्दिक अभिनंदन और जोहार

2 अक्टूबर, 2024

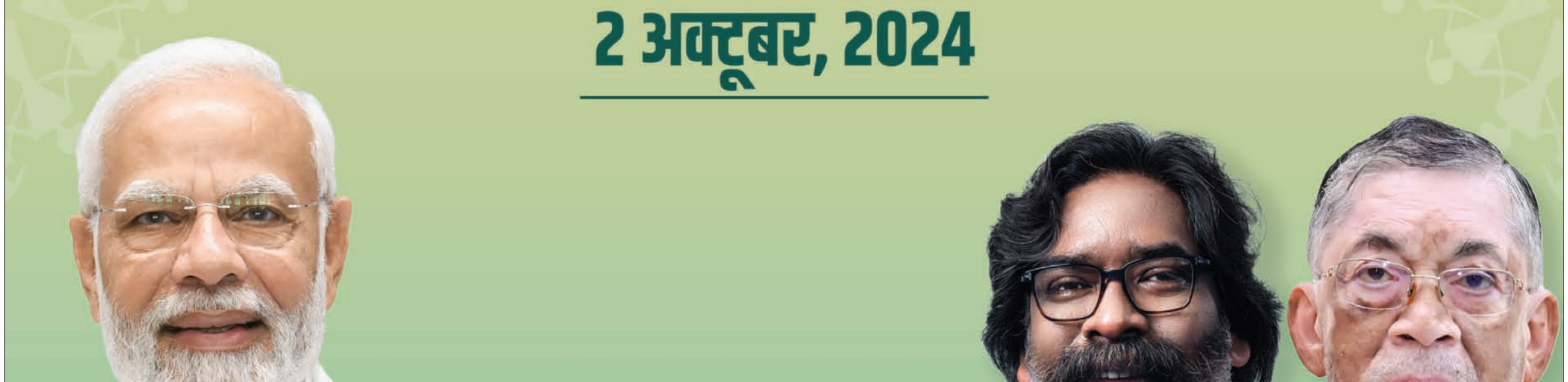

PR No. 337911 (IPRD) 2024-25

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

एक नजर

रामचरितमानस नवाह्न परायण महायज्ञ को लेकर कलश यात्रा आज

हुसैनाबाद। जपला महावीर जी भवन महायज्ञ समिति के तत्वावधान में भवन परिसर में आयोजित 44 रामचरित मानस परायण महायज्ञ को लेकर तैयारी पूरी कर ली गयी है। इस महायज्ञ को लेकर 2 अक्टूबर को भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया है। समिति के अध्यक्ष राजेंद्र पाल ने बताया कि कलश यात्रा महावीर जी भवन परिसर से शुरू की जाएगी, जो हुसैनाबाद में नगर का भ्रमण करते हुए देवरी सोन नदी से जलभरी की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। यज्ञ आचार्य धर्मराज पांडेय के नेतृत्व में अनुष्ठान की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। इसके लिए समिति के लोग काफी सक्रिय हैं। उन्होंने इस आयोजन में अधिक से अधिक श्रद्धालुओं को शामिल होने की अपील की है।

हैदरनगर के आरके प्लस टू उवि का मोहम्मदगंज में बना केंद्र

नवीं दसवीं की जांच परीक्षा में 1575 परीक्षार्थी शामिल

मोहम्मदगंज। स्थानीय स्तरोन्नत उच्च विद्यालय में मंगलवार को हैदरनगर स्थित आरके प्लस टू उवि के नवीं व दसवीं कक्षा की जांच परीक्षा ली गई। केंद्राधीक्षक राकेश कुमार सिंह ने बताया कि जैक संचालित इस परीक्षा में क्रमशः 817 व 758 परीक्षार्थी शामिल थे। जबकि 29 व 36 अनुपस्थित रहे। ओएमआर शीट पर हिंदी,अंग्रेजी व अन्य भाषाई परीक्षा ली गई। परीक्षा शांतिपूर्ण व कदाचार मुक्त संपन्न हुई। अब 4-5 अक्टूबर को 11वीं-12 वीं परीक्षा होगी। इसके लिए दो अलग-अलग सब सेंटर भी होंगे।

परीक्षार्थियों की संख्या के अनुपात में परीक्षा केन्द्र पर कोई सुविधा नहीं, हेडमास्टर नदारद

जमीन पर बैठाकर ली गई छात्राओं की परीक्षा

नवीन मेल संवाददाता

हैदरनगर। प्लस टू उवि हैदरनगर में अध्यनरत वर्ग नौवी और दशवी के विद्यार्थियों की टेस्ट परीक्षा का केन्द्र उत्क्रमित मध्य विद्यालय भजनिया व प्लस टू उत्क्रमित उच्च विद्यालय मोहम्मदगंज बनाया गया है। परीक्षार्थियों व उनके अभिवावकों में रोष इस बात को लेकर है कि उनकी संख्या के अनुपात में न तो परीक्षा केन्द्र स्थित विद्यालय में जगह है और न ही बैठने की दरी, बेंच - डेस्क व अन्य व्यवस्था। उन्होंने कहा कि पूर्व में उनकी टेस्ट परीक्षा गृह विद्यालय या बगल के विद्यालय में ली जाती रही है। इस बार इसे दूसरे प्रखंड ही नहीं बल्कि सुविधा व संसाधन विहिन विद्यालय में परीक्षा केन्द्र बना दिया गय है। भाजपा नेता रविन्द्र कुमार सिंह व कामेश्वर कुशवाहा ने कहा कि सरकार और उनके पदाधिकारी सपने तो बड़े बड़े देखते हैं, पर उन्हें यह अंदाजा नहीं होता कि जमीनी सच्चाई क्या है। उत्क्रमित मध्य विद्यालय भजनिया स्थित परीक्षा केन्द्र पर पहुंचे परीक्षार्थी सुबह 10 बजे तक बैठने की जगह की कमी से खड़े रहे। वहीं कई छात्राओं को बेंच - डेस्क की बात तो दूर उन्हें दरी तक नहीं बिछाये जाने से जमीन पर ही बैठना पड़ा है। दिलचस्प बात यह है कि इस स्कूल के शिक्षक से हेडमास्टर की उपस्थिति के संबध में पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि हेडमास्टर नहीं आये हैं।

मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के 100 से अधिक लाभुक चयनित

- सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में जमा लिया गया था आवेदन

नवीन मेल संवाददाता

मोहम्मदगंज। सामुदायिक भवन में आयोजित ग्रामसभा में मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के 100 से अधिक लाभुकों का चयन किया गया। ग्रामसभा की अध्यक्षता मुखिया कमला देवी ने की। संचालन पंचायत सचिव अविनाश कुमार ने किया। उन्होंने बताया कि आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम के तहत संपन्न शिविर में इस योजना के लिए प्राप्त आवेदनों के आधार पर सारी अहर्त्ता पूरी करने वाले योग्य लाभुकों का इस ग्रामसभा में चयन किया गया। इनमें मुख्य रूप से गाय-भैंस, बकरा-बकरी, कुकुट्ट और सुकर पालन के लिए इच्छुक लाभूक शामिल हैं। चयनित लाभुकों की सूची प्रखंड विकास पदाधिकारी पारितोष प्रियदर्शी की अनुशंसा के साथ संबंधित विभाग को भेजी जाएगी। ग्रामसभा में इस योजना के लिए इच्छुक सर्वाधिक महिलाएं शामिल थीं। ग्रामसभा में उपमुखिया रविरंजन कुमार सिंह के अलावा नंदकिशोर मेहता सहित अन्य कई वार्ड सदस्य भी शामिल थे।

न्यूज बॉक्स

पुलिस ने अवैध शराब भट्ठी को किया ध्वस्त

हरिहरगंज। पलामू एसपी के निर्देशानुसार शराब माफियाओं के खिलाफ हरिहरगंज थाना पुलिस ने रविवार को छापेमारी अभियान चलाया। बिहार की सीमा से सटे थाना क्षेत्र के सुदूरवर्ती कूलहिया गांव के बाहर चल रहे अवैध देशी महुआ शराब भट्ठी की सूचना पर पुलिस ने छापेमारी की। जहां पुलिस ने अवैध शराब भट्ठी को ध्वस्त किया। पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंदन कुमार के नेतृत्व में छापामारी दल ने जमीन में गाड़कर 7 ड्राम में रखे गये करीब 4 क्विंटल जावा महुआ के साथ ही निर्मित शराब को नष्ट कर दिया गया। हालांकि पुलिस को आते देख जंगल और पहाड़ी इलाके का लाभ लेकर धंधेबाज भागने में सफल रहे। इस संबंध में थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस अवैध शराब के धंधे से जुड़े व्यक्ति की संलिप्तता की पता कर रही है। छापेमारी दल में एसआई सतीश कुमार गुप्ता, बिगेश राय, धनंजय गोप, राकेश कुमार सिंह सहित सशस्त्र बल शामिल थे।

सम्मान पाने हैदरनगर से 31 जलसहिया का जत्था रांची रवाना

हैदरनगर। राज्य स्तरीय जलसहिया क्षमतावर्धन सह स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत प्रभात तारा मैदान धुर्वा, रांची में आयोजित कार्यक्रम में जलसहिया बहनों को सम्मानित किया जायेगा। उन्हें राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश ठाकुर की ओर सम्मान प्राप्तहोगा। मंगलवार की सुबह ट्रेन से रांची रवाना होने से पूर्व उन्होंने बताया कि सभी जलसहिया दीदियों को झार जल ऐप के माध्यम से स्मार्ट फोन से कार्य करने के लिए 12 हजार रुपये सम्मान राशि और प्रतिमाह दो हजार रुपये बतौर मानदेय डीबीटी के माध्यम से दिया जायेगा। यह पहल पेयजल एवं स्वच्छता के क्षेत्र में ग्राम स्तर पर कार्यरत जलसहियाओं के प्रति महत्वपूर्ण योगदान करेंगी। जिला जल व स्वच्छता विभाग पलामू ने बस की सेवा उपलब्ध कराई है। नोडल पदाधिकारी आनंद कुमार व मो.सलीम के नेतृत्व में हैदरनगर प्रखंड से रीता देवी, आरती देवी, गायत्री देवी, रिंकी देवी, सुषमा देवी, निर्मला देवी, नुसरत प्रवीन, ललिता देवी, सबीना खातून, रीना देवी, गीता देवी, शलीला, प्रमिला, विभा, पिंकी, नीलम, शकुंतला सहित 31 जलसहिया दीदी राज्य स्तरीय प्रशिक्षण व उत्साहवर्धन के साथ शामिल को रांची हुई है।

जपला एके सिंह कॉलेज में सेमिनार का आयोजन

हुसैनाबाद। एके सिंह कॉलेज जपला में मंगलवार को एनएसएस के द्वारा बच्चों के शारीरिक विकास एवं पोषण माह पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य सूर्य मणि सिंह ने की। प्राचार्य, शिक्षक प्रतिनिधि एवं आईक्यूएसी कोऑर्डिनेटर ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से छात्रों में दिव्या कुमारी, अंशु कुमारी, सीमा कुमारी, शीतल कुमारी, काजल कुमारी, किरण कुमारी, आलोक कुमार तथा सत्यम कुमार ने पोषण संबंधी अपने विचारों को रखा। कार्यक्रम का संचालन जंतु विज्ञान के विभागाध्यक्ष - सह- खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो. राहुल कुमार सिंह ने किया। वहीं अध्यक्षीय भाषण प्राचार्य सूर्य मणि सिंह सिंह ने विस्तार पूर्वक दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से बर्सर, प्रो. शशि भूषण, प्रो. रेखा कुमारी सिंह, अमरेंद्र कुमार सिंह आदि मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन कॉलेज के शिक्षक प्रतिनिधि डॉ.आनंद कुमार ने किया।

24 घंटे से पहले ही विधायक ने संवेदक से कराया सड़क मरम्मत कार्य

नवीन मेल संवाददाता

खबर का असर

उंटारी रोड। जिले के उंटारी रोड से बी मोड़ की तारफ जाने वाली मुख्य सड़क बांकी नदी किनारे बारिश से ओवर फ्लो होने कारण सड़क के नीचे से मिट्टी बह कर गड्ढा हो गया था। दैनिक समाचार राष्ट्रीय नवीन मेल ने मगंलवार को इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया था। बांकी नदी मुख्य सड़क किनारे गड्ढे दे रहा हादसों का आमंत्रण शीर्षक नामक खबर छपने के 24 घंटे के अंदर ही स्थानीय विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी ने संज्ञान में लेते हुए संवेदक से तत्काल सड़क की मरम्मती करवा दिया। यह जानकारी विधायक प्रतिनिधि सह पूर्व जीप सदस्य मनोज सिंह ने दी।

बांकी नदी मुख्य सड़क किनारे गड्ढे दे रहा हादसों का आमंत्रण

नवविवाहिता का संदेहास्पद स्थिति में मौत, जांच में जुटी पुलिस

नवांन मेल संवाददाता

हरिहरगंज। शहर के मेन रोड स्थित पंचमंदिर के सामने रहने वाले सुखदेव साव की बहू मिन्की कुमारी (20 वर्ष) की संदेहास्पद स्थिति में मौत हो गयी। घर के कमरे से उसका शव पंख से लटका हुआ पाया गया। घटना के वक्त घर में मृतका की बड़ी गोतनी संध्या देवी ही मौजूद थी। घटना की सूचना पाकर पुलिस घटना स्थल पर पहुंचकर शव को कब्जा में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस को मृतका का शव कमर में पलंग पर लिटाया हुआ मिला है। आसपास के लोगों ने बताया कि करीब 10 बजे सुबह संध्या देवी रोती हुई घर से बाहर आयी तथा छत पर चलने की गुहार लगायी। किसी अनहोनी की आशंका से आस-पास के

दुकानदार व अन्य लोग छत पर स्थित कमर में पंख से लटकते हुआ मिन्की कुमारी को देखा। उस वक्त मृतिका का पति सौरभ कुमार गुप्ता अपनी मां के साथ औरंगाबाद जिला के अंबा स्थित अपने रिश्तेदार के घर गया था। मोबाइल पर इसकी सूचना मिलने पर वह वापस घर आया। मृतका के मायका बिहार के औरंगाबाद जिले के नवीनगर थाना अंतर्गत तेंदुआ भुसवली से सूचना पाकर मृतका का पिता दूधेश्वर प्रसाद गुप्ता, माता, बड़ा भाइ रोहित कुमार गुप्ता व अन्य परिजन पहुंचे। इन सभी का रो-रो कर बुरा हाल है। मृतका के पिता ने बताया कि उनकी पुत्री का करीब पांच माह पहले सौरव गुप्ता के साथ शादी हुई थी। उन्होंने ससुराल पक्ष पर बेटी की हत्या करने का आरोप लगाया है। घटना के बाद मृतका के ससुराल के सभी सदस्य फरार बताए जाते हैं। इस संबंध में पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंदन कुमार ने बताया कि यह घटना प्रथम दृष्टया में आत्महत्या प्रतीत होता है, जबकि मृतका के पिता ने अपने दामाद व परिजनों पर बेटी की हत्या करने का आरोप लगा रहे है। पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

रघुवर सरकार का सुशासन भाजपा की पूंजी : ज्योतिरीश्वर सिंह

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ज्योतिरीश्वर सिंह ने रघुवर सरकार के कार्यकाल को भाजपा की सबसे बड़ी पूंजी बताया है। उन्होंने कहा कि झारखंड की सत्ता में भाजपा की वापसी के लिए रघुवर दास के 2014-2019 के कार्यकाल में सुशासन की चर्चा चुनावी मंचों से की जानी चाहिए। इसका व्यापक लाभ पार्टी को मिल सकता है। इस संदर्भ में सिंह ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, गृह मंत्री, प्रदेश चुनाव प्रभारी और सह प्रभारी को पत्र लिखा है। सिंह ने अपने पत्र में कहा कि पार्टी के पास कई अनुभवी नेता हैं, जिनमें बाबूलाल मरांडी, अर्जुन मुंडा और चंपई सोरेन शामिल हैं, जिनके कार्यकाल में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हुई हैं। उन्होंने विशेष रूप से बाबूलाल मरांडी के कार्यकाल का जिक्र किया, जब पलामू प्रमंडल में उग्रवादियों के बंकरों का उद्धेदन हुआ। अर्जुन मुंडा ने इस दिशा में और

काम किया। सिंह ने रघुवर दास के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि वह राज्य गठन के बाद पहले मुख्यमंत्री थे, जिन्होंने राजनीतिक स्थिरता के साथ पांच साल का कार्यकाल पूरा किया। उनके शासन में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक रुपये में जमीन की रजिस्ट्री शुरू की गई, और सीएम जनसंवाद के माध्यम से जनता की समस्याओं का समाधान किया गया। सिंह ने कहा कि राज्य में वर्तमान कुशासन के मुकाबले रघुवर सरकार का सुशासन पार्टी की सत्ता वापसी का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

सड़क किनारे खोदे गए गड्ढ़े से हादसे का खतरा नप प्रशासन की लापरवाही से क्षेत्रवासियों में आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। हुसैनाबाद अनुमंडल कार्यालय के गेट के समीप नगर पंचायत क्षेत्र के अंतर्गत पानी निकासी के लिए सड़क के किनारे खोदे गए गड्ढ़े से क्षेत्र में गंभीर हादसे की आशंका बनी हुई है। नगर पंचायत प्रशासन द्वारा इस नाले को खुला छोड़ दिया गया है, जिससे दुर्घटना होने का खतरा बढ़ गया है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि नाले को खुला रखने के बावजूद नगर प्रशासन ने वहां पर कोई सुरक्षा इंतजाम नहीं किए हैं। न तो किसी प्रकार की रुकावट का प्रबंध किया गया है और न ही कोई चेतावनी संकेतक लगाया गया है। इसका परिणाम यह है कि विशेष रूप से रात के समय, जब रोशनी कम होती है, बाइक सवार और अन्य वाहन चालक अनजाने में इस नाले में गिर सकते हैं, जिससे गंभीर दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उक्त गड्ढे के कारण यदि किसी दिन कोई अप्रिय घटना घटित हो जाती है, तो इसके लिए जिम्मेदार कौन होगा? यह सवाल

क्षेत्रवासियों के मन में गहराई से उभर रहा है। नगर प्रशासन की इस लापरवाही से क्षेत्र के लोग आक्रोशित हैं और मांग कर रहे हैं कि इस नाले को जल्द से जल्द सुरक्षित ढंग से बंद किया जाए, ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। 15 अगस्त 2024 के पूर्व से ही पानी निकासी हेतु उक्त गड्ढा खोदा गया था। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भी कई वाहन चालक इस नाले में गिरने से बाल-बाल बचे थे। जब सोशल मीडिया में इससे संबंधित खबर वायरल हुआ तो नगर प्रशासन ने उक्त स्थल के पास कुछ दिनों के लिए बैरिकेडिंग किया था,जिसे अब हटा लिया गया है। इस कारण पुनः अब किसी हादसे का खतरा बढ़ गया है। नगर प्रशासन को इस गंभीर मुद्दे पर ध्यान देने और उचित कार्रवाई करने की आवश्यकता है। स्थानीय नागरिकों ने नगर पंचायत प्रशासन से अनुरोध किया है कि वह अविलंब इस समस्या का समाधान करे, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। लोगों का कहना है कि सड़क सुरक्षा के नाम पर हेलमेट की चेकिंग करने वालों को मुख्य सड़क के पास का गड्ढा नजर नहीं आ रहा है जो सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक है।

एनसीपी अनुमंडल कमेटी की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष के निर्णय का स्वागत, एनसीपी का भाजपा में विलय

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। एनसीपी हुसैनाबाद अनुमंडल कमेटी के सभी प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक पार्टी कार्यालय में मंगलवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता अनुमंडल अध्यक्ष विनय पासवान ने की। कार्यकर्ताओं ने विभिन्न स्तरों पर पार्टी के संगठन की समीक्षा की। एनसीपी के पलामू जिला प्रवक्ता योगेंद्र सिंह उर्फ गुड्डू सिंह ने प्रदेश अध्यक्ष सह हुसैनाबाद विधायक कमलेश कुमार सिंह के निर्णय से कार्यकर्ताओं को अवगत कराया। एक-एक कार्यकर्ता ने प्रदेश अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह के निर्णय का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वह 20 वर्षों से कमलेश कुमार सिंह के साथ हैं। उनका जो भी निर्णय होगा उसे सभी मानने को तैयार हैं। उन्होंने सर्वसम्मति से 4 अक्तूबर को रांची जाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि 4 अक्तूबर को वह सभी अपने नेता कमलेश

कुमार सिंह के साथ भाजपा ने शामिल होंगे। हुसैनाबाद हरिहरगंज विधानसभा क्षेत्र में एनसीपी का एक एक कार्यकर्ता कमलेश कुमार सिंह के साथ है। वह जहां जायेंगे, एक-एक कार्यकर्ता उनके साथ रहेंगे। बैठक में अनुमंडल अध्यक्ष विनय पासवान, युवा अनुमंडल अध्यक्ष अभिषेक सिंह उर्फ हरी, युवा प्रखंड अध्यक्ष ओमप्रकाश राजवंशी, हंसराज सिंह, मीडिया प्रभारी प्रिंस शर्मा, विजय राजवंशी, हसन खलीफा, रविंद्र सिंह, बीरेंद्र सिंह, संजय सिंह, विमलेश सिंह, जियाउद्दीन खान, अनिल सिंह, मनोज सिंह, अनूप सिंह, विनय परहिया, संजय परहिया, विजय ठाकुर,जय प्रकाश उपाध्याय, सतेंद्र सिंह, रतन प्रसाद समेत अन्य शामिल थे।

पूर्व मंत्री स्वर्गीय मधु सिंह स्मृति भवन का शिलन्यास

कोनवाई वीरों का धरती है : विधायक

नवीन मेल संवादाता

पांकी। पांकी प्रखंड के कोनवाई पंचायत के डॉ. बिरेंद्र कृष्ण रामबली उच्च विद्यालय परिसर में मंगलवार को पांकी विधायक कुशवाहा डॉ. शशि भूषण मेहता ने पांकी विधानसभा के भूतपूर्व विधायक सह झारखण्ड सरकार के पूर्व मंत्री जननायक स्व.मधु सिंह स्मृति भवन निर्माण कार्य का शिलान्यास विधिवत रूप पूजा अर्चना व नारियल फोड़ कर किया। शिलान्यास कार्यक्रम से पहले विधायक डॉ मेहता ने पूर्व मंत्री स्व. मधु सिंह के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। साथ ही स्व.अमरनाथ सिंह के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मौके पर डॉ. मेहता ने कहा कि यह कोनवाई की धरती राजनीतिक, सामाजिक रुप से और

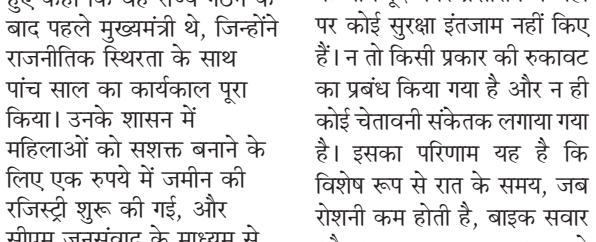

वीरों की धरती है। उन्होंने ने कहा कि आज हमने अपने राजनीतिक गुरु स्व.मधु सिंह के स्मृति भवन निर्माण कार्य शिलान्यास किया है, जिससे हमे बहुत ही गर्व महसूस कर रहा हूं। उन्होंने ने कहा कि जीवन भर राजनीतिक को जन सेवा के रूप में अपनाएं और गरीब एवं वंचितों को समाज की मुख्य धारा में लाने का काम किए। समाज को उनसे से प्रेरणा लेनी चाहिए। मौके पर बच्चन ठाकुर, कार्तिक सिंह, शैलेंद्र सिंह, रामचरित्र सिंह, रामबली सिंह, देवराज राम, शंभू सिंह, ब्रह्मदेव सिंह, नीलम देवी, शिवकुमार सिंह, बलवंत सिंह सहित कई लोग उपस्थित थे।

श्रमदान से बनी कच्ची सड़क के पुलिया की मरम्मत का काम पूरा, निर्बाध रूप से आवागमन शुरू

- राजबारा नदी की बाढ़ में बह गई थी पुलिया
- एक पखवाड़ा से अधिक दिनों से था आवागमन बाधित

नवीन मेल संवाददाता

मोहम्मदगंज। रामनगर के ग्रामीणों के श्रमदान और सहयोग से डीहई पहाड़ की तलहटी में बनी कच्ची सड़क की पुलिया राजबारा नदी में हाल की भारी बारिश से आई बाढ़ में बह गई थी। इससे एक पखवाड़ा से अधिक दिनों से रामनगर व आसपास के अलावा मोहम्मदगंज-महुडंड मुख्य पथ से जुड़े कई पठारी गांव के लोगों का प्रखंड मुख्यालय व अंतरराज्यीय मुख्य मार्ग से संपर्क भंग हो गया

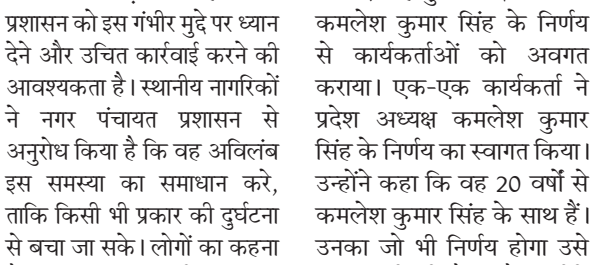

था। मंगलवार को अंतिम रूप से पुलिया और इस सड़क के क्षतिग्रस्त भाग की मरम्मत रामनगर के ग्रामीणों की सहयोग राशि और जेसीबी मशीन व ट्रैक्टर के माध्यम से पूरा करा दिया गया। इसमें बुजुर्ग रामजन्म राम के अलावा विजय, अंगद, अमर, राकेश, दीपक, पंकज, सत्येंद्र यादव व अन्य कई लोगों ने मौके पर मौजूद रहकर चिलचिलाती धूप में मरम्मत कार्य को पूरा कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने बताया कि इसके पहले कांग्रेस सहकारिता विभाग के डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन राहुल सिंह के प्रयास और रामनगर के ग्रामीणों के सहयोग से सड़क के क्षतिग्रस्त भाग की आंशिक तौर पर मरम्मत करा देने से दोपहिया वाहनों का आवागमन शुरू हो गया था। जबकि अब अंतिम रूप से मरम्मत के साथ छोटे चार पहिया वाहनों का धड़ाधड़ आवागमन होने लगेगा।

4 साल से पक्कीकरण की बाट जोह रहे हैं ग्रामीण

रामनगर के ग्रामीणों का कहना है कि माना कि उन्होंने बुजुर्ग रामजन्म राम और अन्य कई युवाओं की पहल पर गांव की जरूरत के लिए खुद के सहयोग और श्रमदान से उत्तर कोयल परियोजना उच्च विद्यालय से राजनडीह तक इस कच्ची सड़क को बनाया है। मगर इससे यह एक प्रकार से अबतक प्रखंड मुख्यालय और कादलकुर्मी-जपला अंतर्राज्यीय मुख्य मार्ग तक सीधी पहुंच से अछूते दर्जन भर गांवों में आवागमन का बड़ा माध्यम बन गया है। इसके बावजूद दुःखद पहलू यह है कि गुहार लगाने और लगातार सूर्खियों में छाए रहने के बाद भी किसी रहनुमा ने इसके पक्कीकरण कराने की सुधि नहीं ली है।

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित | अश्विन कृष्ण पक्ष 30, संवत 2081 | डालटनगंज (मेदिनीनगर), बुधवार, 02 अक्टूबर 2024, वर्ष-30, अंक- 348, पृष्ठ-16 ₹3.00 रजिस्ट्रेशन नं: आरएनआई. 61316/94 | www.rastriyanaveenmail.com

ऐके 47 के साथ दो उग्रवादियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए जंगल में रणनीति बना रहे थे

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। झारखंड जनमुक्ति परिषद (जेजेएमपी) नक्सली संगठन के दो उग्रवादियों को पुलिस ने एके 47 हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार नक्सलियों में सब जोनल कमांडर खुर्शीद अंसारी, पोचरा, लातेहार और फेंकू भुइयां बालूमाथ शामिल हैं। नक्सलियों के पास से पुलिस ने आठ जिंदा गोली बरामद की है। मंगलवार को जिले के पुलिस कप्तान ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि लातेहार थाना क्षेत्र के ग्राम सलया एवं नारायणपुर के बीच पहाड़ के तलहटी के जंगली क्षेत्र में जेजेएमपी के दो उग्रवादी हथियार के साथ संभवतः किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के फिराक में है। सूचना के सत्यापन के बाद छापेमारी दल का गठन किया गया। त्वरित कार्रवाई करते हुए सावधानीपूर्वक बताये गये स्थान की घेराबंदी कर तलाशी अभियान ▸▸शेष पृष्ठ 14 पर

प्रधानमंत्री मोदी आज आएंगे झारखंड

हजारीबाग में कई परियोजनाओं का करेंगे शिलान्यास और उद्घाटन

भाजपा की परिवर्तन यात्रा महासभा को भी करेंगे संबोधित

नवीन मेल संवाददाता

रांची। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार (02 अक्टूबर) को झारखंड दौरे पर हजारीबाग आएंगे। वे दोपहर करीब 2 बजे हजारीबाग में 83,300 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे। वे हजारीबाग के मटवारी गांधी मैदान में भाजपा की परिवर्तन यात्रा महासभा को भी संबोधित करेंगे। इस दौरान वे 3 घंटे 25 मिनट तक प्रदेश में ही रहेंगे। उनके आगमन को लेकर प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। देश भर में जनजातीय समुदायों के व्यापक और समग्र विकास को सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, प्रधानमंत्री 79,150 करोड़ रुपये से अधिक के कुल परिव्यय के साथ धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ करेंगे। यह अभियान 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 549 जिलों और 2,740 ब्लॉकों में 5 करोड़ से अधिक जनजातीय लोगों को लाभान्वित करते हुए लगभग 63,000 गांवों को शामिल करेगा। इसका उद्देश्य भारत सरकार के विभिन्न 17 मंत्रालयों और विभागों

एनसीपी विधायक के भाजपा में प्रवेश को लेकर उठा विवाद, असंतोष

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। हुसैनाबाद से एनसीपी विधायक कमलेश सिंह के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने की खबरों के बाद पार्टी के भीतर असंतोष की स्थिति उत्पन्न हो गई है। भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं ने संगठन मंत्री कर्मवीर सिंह और प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी से मुलाकात कर इस फैसले पर आपत्ति जताई। नेताओं का मानना है कि कमलेश सिंह का जनाधार कमजोर हो गया है और ऐसे नेता को पार्टी में शामिल करना कार्यकर्ताओं की मेहनत को अनदेखा करना होगा। इस विरोध का मुख्य नेतृत्व अशोक सिंह, भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ज्योतिरीश्वर सिंह, पूर्व प्रत्याशी विनोद सिंह, प्रफुल्ल सिंह, कामेश्वर कुशवाहा, रविंद्र सिंह ने किया। इन नेताओं का तर्क है 2019 के चुनाव में पार्टी के नेता बिना सिंबल के करीब 30000 वोट हासिल किए थे, जो यह दशार्ता है कि पार्टी की अपनी ताकत और जनाधार मजबूत है। इस स्थिति में, पार्टी को अपने कुनबे को बढ़ाने के साथ-साथ उम्मीदवारों की योग्यता और पृष्ठभूमि का भी ध्यान रखना चाहिए। कमलेश सिंह के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने की संभावनाएं पहले 3 अक्टूबर को सामने आई थीं, लेकिन अब कहा जा रहा है कि यह 4 अक्टूबर को हो सकता है। इस खबर ने पार्टी के स्थानीय नेताओं को चिंतित कर दिया है, जो मानते हैं कि अगर पार्टी ऐसे नेताओं को शामिल करती है, जिनका जनाधार कमजोर है, तो इससे पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओंकी मेहनत व्यर्थ जाएगी। इन नेताओं का मानना है कि उन्हें ऐसे विधायक के लिए काम करना पड़ेगा, जो बाद में पार्टी के आर्दशों ▸▸शेष पृष्ठ 14 पर

रांची में 'जलसहिया क्षमतावर्द्धन सह स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम में बोले सीएम हेमंत सोरेन

योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने में जलसहियाओं की भूमिका अहम

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि जलसहिया दीदियों की समस्याओं को हमारी सरकार ने सुलझाने का कार्य किया है। पूर्व की सरकारों ने जलसहिया दीदियों को उनके हक-अधिकार से उन्हें वंचित रखने का काम किया था। हमारी सरकार आम नागरिक और सरकार के विभिन्न अंगों को अपने साथ खड़े होने के लिए उन्हें उनका हक और अधिकार दे रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जलसहिया दीदियों की समस्याओं पर राज्य सरकार का पूरा ध्यान है। हमारी सरकार एक-एक समस्याओं का निदान करने का काम कर रही है। हमारी सरकार ने ग्राम स्तर पर कार्यरत जलसहिया दीदियों की मानदेय राशि को बढ़ाकर दो हजार रुपये प्रतिमाह किया है। हमारी सरकार ने राज्य के वृद्धजन, महिलाएं, नौजवान युवक-युवतियां, स्कूलों में अध्यनरत बच्चियों के लिए विशेष कार्ययोजना के साथ उनके समग्र विकास की दिशा में एक लंबी लकीर खींचने का प्रयास किया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को रांची के धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा आयोजित 'राज्य स्तरीय जलसहिया क्षमतावर्द्धन सह स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में आप सभी जलसहिया दीदियों के माध्यम से राज्य सरकार की कई महत्वाकांक्षी योजनाएं गांव-गांव तथा घर-घर तक पहुंचती हैं। आप याद कीजिए वह दिन जब पूर्व की सरकार में छोटे से कार्यकाल के भीतर मेरे मंत्री रहते आपसभी जलसहिया दीदियों की नियुक्ति हुई थी। आपकी समस्याओं को मुझसे ज्यादा कोई नहीं समझ सकता है। आज राज्य में आप सभी के उम्मीद और आकांक्षाओं की सरकार है। निश्चित रूप ▸▸शेष पृष्ठ 14 पर

मुख्यमंत्री ने कहा

यह सरकार इस राज्य के मूलवासियों-आदिवासियों की है

हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांव से चलती है

सरकार 'विष कन्या' की तरह होती है : गडकरी

केंद्रीय मंत्री ने कहा- जिसके साथ जाती है, उसे बर्बाद कर देती है

- ब्यूरो

नई दिल्ली। बिना लाग लपेट बोलने के लिए मशहूर व पक्ष-विपक्ष सभी दल के सांसदों के प्रिय केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने अपने संसदीय क्षेत्र नागपुर में एक कार्यक्रम में कहा, यह अनिश्चित है कि क्या निवेशकों को उनकी सब्सिडी का भुगतान समय पर मिलेगा, क्योंकि सरकार को लाडली बहिन योजना के लिए भी निधि आवंटित करनी है।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में उद्यमियों को निवेश करने के लिए आगे आना चाहिए, क्योंकि सब कुछ सरकार पर नहीं छोड़ा जा सकता। उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, मेरी राय है कि चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो, सरकार को दूर रखो। सरकार विष कन्या की तरह होती है, जो जिसके साथ जाती है, उसे बर्बाद कर देती है। इसलिए उस मामले में मत पड़ो। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने उद्यमियों से कहा कि वे सरकारी सब्सिडी पर निर्भर न रहें। उन्होंने कहा कि सरकार के पास महिलाओं के लिए हाल ही में शुरू की गई कल्याणकारी लाडली बहन योजना जैसी अन्य प्रतिबद्धताएं भी हैं। गडकरी ने कहा, अगर आपको सब्सिडी मिल रही है तो ले लो, लेकिन फिर यह तय नहीं है कि सब्सिडी कब मिलेगी। लाडली बहिन योजना शुरू होने के साथ ही उन्हें सब्सिडी के लिए आवंटित निधि इस काम के लिए इस्तेमाल करनी पड़ेगी। महायुति सरकार की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री माझी लाडली बहिन योजना के तहत 21 से 62 वर्ष की आयु की उन विवाहित, तलाकशुदा और निराश्रित महिलाओं को हर महीने 1,500 रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है, जिनकी पारिवारिक आय सालाना 2.5 लाख रुपये से ज्यादा नहीं है। आगामी विधानसभा चुनाव से पहले लाई गई इस योजना से हर साल सरकारी खजाने पर 46,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ने की संभावना है। लाडली बहिन पर ▸▸शेष पृष्ठ 14 पर

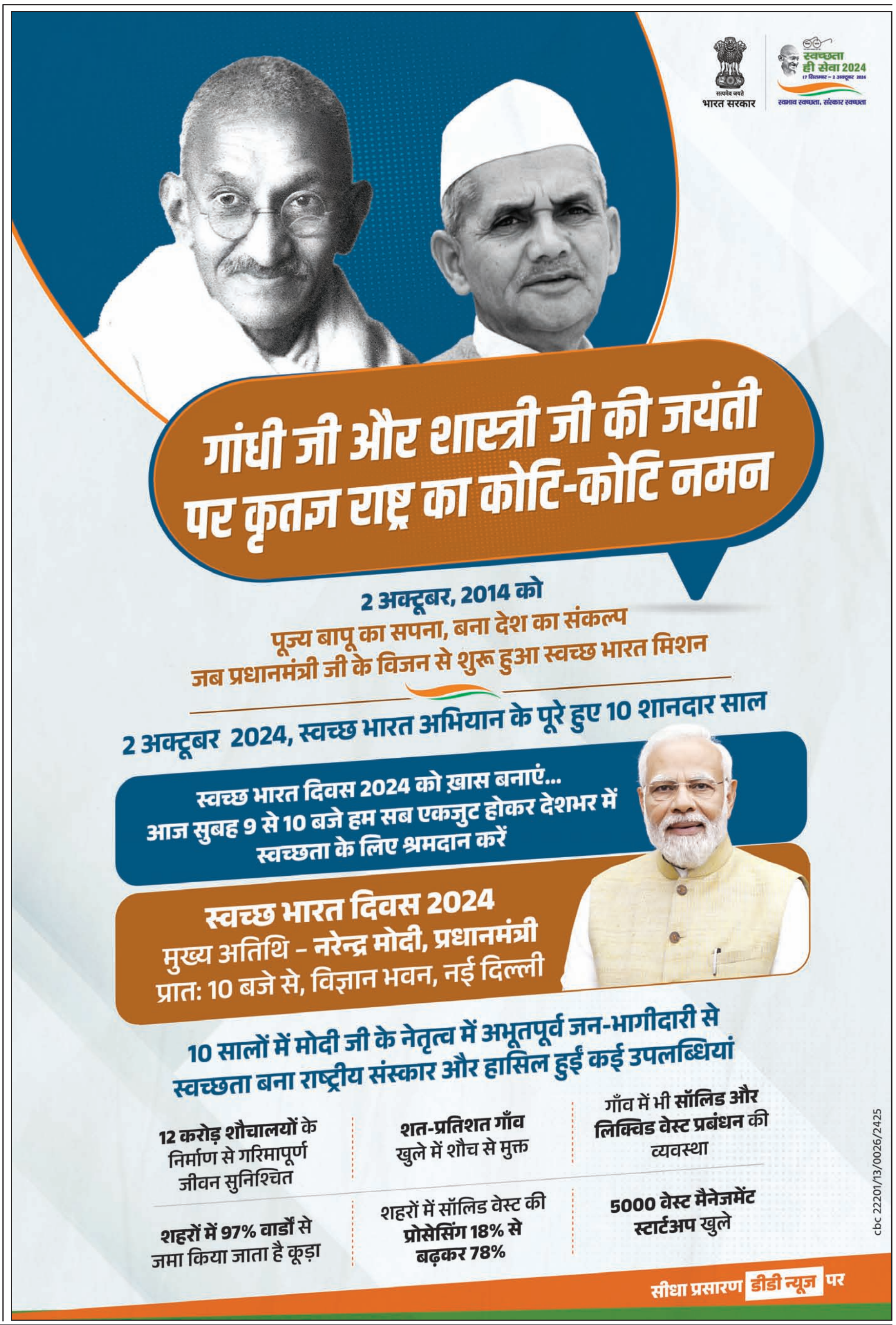

एक नजर

नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ताओं को वेलफेयर की राशि से वंचित करने की उठी मांग

मेदिनीनगर। पलामू जिला अधिवक्ता संघ के सदस्य विक्रम त्रिपाठी ने 275 अधिवक्ताओं के हस्ताक्षर युक्त आवेदन संघ के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद यादव को सौंपा है। इस आवेदन में संघ से मिलने वाली वेलफेयर की राशि केवल नियमित अधिवक्ताओं में वितरित करने और नन प्रैक्टिशनर अधिवक्ताओं को वेलफेयर की राशि से वंचित करने की मांग की गई है। आवेदन पत्र में कहा गया है कि वोट की राजनीति के चलते अब तक वेलफेयर की राशि का अनुचित वितरण किया जाता रहा है। नियमित अधिवक्ता साल भर कठिन परिस्थितियों में विधि व्यवसाय करते हैं, जिससे संघ को आर्थिक लाभ होता है।

जी.एल.ए महाविद्यालय में शैक्षणिक अराजकता पर उठी आवाज, एबीवीपी ने सौंपा ज्ञापन

सात दिन में समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो होगा आंदोलन: अभय वर्मा

महाविद्यालय में शिक्षक और कर्मचारियों की भारी कमी के कारण छात्रों की पढ़ाई प्रभावित

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकताओं ने गणेश लाल अग्रवाल महाविद्यालय में व्याप्त शैक्षणिक अराजकता और बुनियादी समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा। कार्यालय मंत्री उत्कर्ष तिवारी के नेतृत्व में सौंपे गए इस ज्ञापन में परिषद ने प्रशासन से सात दिनों के भीतर कार्रवाई की मांग की। ज्ञापन में महाविद्यालय में लंबे समय से शिक्षकों और शिक्षकेतर कर्मचारियों की कमी, परिसर में फैली गंदगी और लाइब्रेरी में छात्रों के बैठने की व्यवस्था न होने जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं को उठाया गया है। परिषद ने कहा कि गणेश लाल अग्रवाल महाविद्यालय में शिक्षक और कर्मचारियों की भारी कमी के कारण छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, जबकि महाविद्यालय का परिसर गंदगी से भरा पड़ा है, जिससे छात्र-छात्राओं को असुविधा होती है। इसके अलावा, लाखों रुपये की लागत से बनाई गई लाइब्रेरी में छात्रों के बैठने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है, जिससे छात्रों को अध्ययन करने में कठिनाई हो रही है। परिषद ने इन तीनों समस्याओं का समाधान तत्काल कराने की मांग की है। परिषद के कार्यकताओं ने चेतावनी दी है कि यदि सात दिनों के भीतर इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ, तो वे जोरदार आंदोलन करेंगे। इस मौके पर विभाग संयोजक अभय वर्मा ने कहा कि गणेश लाल अग्रवाल महाविद्यालय कभी शहर का सबसे प्रतिष्ठित संस्थान हुआ करता था, लेकिन वर्तमान प्राचार्य के लचर रवैये के कारण यह गर्त में जा रहा है। यदि प्राचार्य ने अपनी कार्यप्रणाली में सुधार नहीं किया, तो विद्यार्थी परिषद बड़े आंदोलन की तैयारी करेगी।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में चला स्वच्छता अभियान

मेदिनीनगर। मेरा युवा भारत (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार) द्वारा मंगलवार को कस्तूरबा गांधी आवासीय प्लस टू उच्च विद्यालय चैनपुर पलामू में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान में विद्यालय के कैंपस की साफ-सफाई की गई। इस दौरान कचरे और सिंगल यूज प्लास्टिक को एकत्रित कर निष्पादित किया गया। कस्तूरबा गांधी प्लस टू उच्च विद्यालय की वार्डन श्वेता त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के मौके पर स्वच्छ भारत अभियान को फिर से देश में शुरू किया गया। उक्त कार्यक्रम में स्वच्छता ही सेवा के तहत जिले के सभी प्रखंडों में सिंगल यूज प्लास्टिक को एकत्रित करने के लिए वृहद अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें नेहरू युवा केंद्र के पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक एवं युवा मंडल के सदस्य शामिल हैं। इस कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र के पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक मनोरंजन तिवारी, धीरज दुबे कुणाल पांडेय,ज्योति, सुप्रिया, संगीता, सोनाक्षी दुबे आदि कस्तूरबा गांधी के छात्राएं शामिल थी।

न्यूज बॉक्स

डॉ. रवि शंकर बने एनपीयू के नए परीक्षा नियंत्रक

मेदिनीनगर। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय के गणित विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. रवि शंकर को परीक्षा नियंत्रक के पद पर नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति बाल किशन मुंडा द्वारा कुलाधिपति के आदेश पर की गई है। डॉ. रवि पूर्व में जीएलए कॉलेज के गणित विभाग के विभागाध्यक्ष रह चुके हैं और शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान सराहनीय रहा है। डॉ. विजय प्रसाद के बाद से विश्वविद्यालय में स्थायी परीक्षा नियंत्रक की नियुक्ति नहीं हुई है। हाल ही में, परीक्षा विभाग के कंप्यूटर इंचार्ज एमके दीपक के कार्यकाल समाप्त होने के बाद, यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी अब डॉ. रवि शंकर को सौंपी गई है। डॉ. रवि की प्रशासनिक और शैक्षणिक क्षमता को देखते हुए, यह विश्वास जताया जा रहा है कि वे परीक्षा विभाग को सशक्त और प्रभावी तरीके से संभालेंगे।

सहायक लोक अभियोजक का हजारीबाग में स्थानांतरण, दी गई विदाई

मेदिनीनगर। पलामू सिविल कोर्ट में कार्यरत सहायक लोक अभियोजक अनुराग कुमार सिंह का हजारीबाग स्थानांतरण होने पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। स्थानांतरण उपरांत मंगलवार को लोक अभियोजक कार्यालय में आयोजित समारोह में लोक अभियोजक राजेश कुमार शर्मा ने अनुराग सिंह को माला पहनाकर और अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। लोक अभियोजक राजेश कुमार शर्मा ने कहा कि अनुराग कुमार सिंह एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ सहायक लोक अभियोजक के रूप में कार्य कर चुके हैं। उनकी कमी हमेशा खलेगी। उन्होंने सरकारी नौकरी में स्थानांतरण को स्वाभाविक प्रक्रिया बताते हुए कहा कि सिंह ने अपने सेवाकाल में सरकार की ओर से कई मामलों में अभियोजन पक्ष को मजबूती से प्रस्तुत किया और मुजरिमों को सजा दिलाई।

लोकसभा चुनाव कार्य में लगे कर्मियों का समाहरणालय में धरना, लंबित भुगतान की मांग

मेदिनीनगर। आज समाहरणालय के ब्लॉक ए में लोकसभा चुनाव 2024 के काम में लगे कर्मियों ने लंबित भुगतान में देरी के विरोध में धरना दिया। कर्मियों की मांग थी कि निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निदेर्शों के अनुसार, कोषांग गठन के बाद तीन महीने तक कार्य करने वाले सभी कर्मियों को एक महीने का अतिरिक्त वेतन दिया जाना चाहिए। धरना देने वाले कर्मियों का कहना था कि कई अधिकारियों और कुछ कर्मचारियों को यह वेतन मिल चुका है, लेकिन उनमें से कई कर्मियों और अनुसेवकों को अब तक भुगतान नहीं हुआ है। धरने की सूचना मिलने के बाद, उपायुक्त ने हस्तक्षेप किया और धरनारत कर्मियों से बात की। उपायुक्त ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आदेश दिया कि सभी कर्मियों और अनुसेवकों को जल्द से जल्द एक महीने का अतिरिक्त वेतन दिया जाएगा। उपायुक्त के आश्वासन के बाद धरना समाप्त हुआ और सभी कर्मी अपने काम पर लौट गए।

नारों और जुमलों से देश आगे नहीं बढ़ता : के.एन. त्रिपाठी

मेदिनीनगर। मंगलवार को स्थानीय शिवाजी मैदान में प्रतिज्ञा यात्रा के 22वें दिन का समापन प्रतिज्ञा सम्मेलन के साथ हुआ। इस अवसर पर डाल्टनगंज विधानसभा के विभिन्न प्रखंडों से कार्यकर्ता शिवाजी मैदान में उमड़े। जिन्होंने के.एन. त्रिपाठी को फूल-मालाओं से लाद दिया। द्वीप प्रज्वलन और स्वागत गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अपने संबोधन में के.एन. त्रिपाठी ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए वोट का सौदा नहीं करना चाहिए। पैसे लेकर वोट देने से नेता और अधिकारी जनता से कई गुना वसूली करते हैं। उन्होंने जनता और नेताओं दोनों से प्रतिज्ञा लेने की बात कही और खेतों में हरियाली, घरों में खुशहाली का वचन दिया। के.एन. त्रिपाठी ने पांच प्रतिज्ञाएं लीं और उन्हें पूरा करने का वादा किया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की सभी नदियों, नालों और बांधों की उचित व्यवस्था की जाएगी। देशभक्ति की बात करते हुए उन्होंने कहा कि देश तभी मजबूत होगा, जब यहां के युवा और महिलाएं मजबूत होंगी। नारों और जुमलों से देश आगे नहीं बढ़ता। मौके पर शंभू चौरसिया ने कहा कि 2019 में वोट देने के मुद्दे पर हुए हंगामे को उन्होंने करीब से देखा और अब कोई भी वोकस वोट नहीं देगा। दिलीप चंद्रवंशी ने कहा कि के.एन. त्रिपाठी जब विधायक थे, तो वे गरीबों की आवाज बनकर हमेशा उपलब्ध रहते थे, लेकिन पिछले 10 सालों में इस विधानसभा क्षेत्र की दुर्दशा हो गई है। विवेका त्रिपाठी ने याद किया कि जब के.एन. त्रिपाठी मंत्री थे, तो जनता का काम प्राथमिकता से किया जाता था। अब की स्थिति पर जनता असंतुष्ट और निराश है। इस अवसर पर परमदेव सिंह, जीशान खान, भोला पांडे, मुन्ना खान, मिकू तिवारी, मुकेश सिंह, दिलीप चंद्रवंशी, तेजू साव, रिंकू तिवारी, रंजन दुबे, धन्नजय पाठक, जलील अंसारी, राजकुमार यादव समेत कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

डीसी ने एनीमिया जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

मेदिनीनगर। मंगलवार को उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी शशि रंजन ने समाहरणालय परिसर से एनीमिया जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रथ जिले के सभी 21 प्रखंडों के विभिन्न पंचायतों में एनीमिया के प्रभाव और बच्चों में इसके संदर्भ में जागरूकता फैलाएगा। साथ ही, रथ एनीमिया और सिकल सेल बीमारी के बारे में भी जानकारी प्रदान करेगा। इसके अलावा, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से भी लोगों को एनीमिया के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इस मौके पर नगर आयुक्त, सिविल सर्जन, सदर अनुमंडल पदाधिकारी, और समाज कल्याण पदाधिकारी समेत अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

रजवाडीह मध्य विद्यालय में प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित

मेदिनीनगर। रजवाडीह मध्य विद्यालय में नवगठित प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में विद्यालय के प्रधानाध्यापक परशुराम तिवारी ने समिति के सदस्यों के साथ संवाद किया और उनके दायित्वों व सुझावों के महत्त्व पर चर्चा की। प्रधानाध्यापक ने बताया कि विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा की शुरूआत हो गई है, और इसके लिए विभाग द्वारा लैब इंस्ट्रक्टर अनूप मिश्रा की नियुक्ति की गई है, जो छात्रों को कम्प्यूटर की शिक्षा दे रहे हैं। परशुराम तिवारी ने जानकारी दी कि कम्प्यूटर शिक्षा को लेकर बच्चे काफी उत्साहित हैं। इसके अतिरिक्त, बैठक में बच्चों की उपस्थिति, आगामी रेल परीक्षा, स्वच्छता सप्ताह, और शिक्षा के लिए मिलने वाली सरकारी सुविधाओं की अद्यतन स्थिति पर भी विचार-विमर्श हुआ। बैठक के बाद समिति के सदस्यों ने विद्यालय के कम्प्यूटर कक्ष, स्मार्ट क्लास और पूरे विद्यालय परिसर का अवलोकन किया। इस अवसर पर समिति की अध्यक्ष पार्वती देवी, संयोजिका रंजु देवी, उपाध्यक्ष ललिता देवी, शिक्षक सदस्य प्रियंका कुमारी, रीता देवी, माया देवी, रूली देवी, गुड्डी देवी, सत्यम कुमार, हेवंती देवी, सुचिता देवी, नीलम देवी, शिक्षिका पूनम रानी, और शिक्षक विजय कुमार ठाकुर उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत रक्तदान जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन

मेदिनीनगर। जीएलए कॉलेज के तत्वाधान एनएसएस द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के तहत रक्तदान जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. बिरेंद्र कुमार ने किया। इतिहास विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. संजय बाड़ा ने रक्तदान के महत्व को बताते हुए कहा कि वे हर 6 माह में रक्तदान कर सकते हैं। इससे कोई कमजोरी या शारीरिक नुकसान नहीं होता है। डॉ. भावना ने स्वयंसेवकों को बताया कि रक्तदान दुनिया का सबसे बड़ा दान है। इससे आप किसी व्यक्ति के अनमोल जीवन की रक्षा कर सकते हैं। उन्होंने कई उदाहरणों से रक्तदान के फायदे को बताया।कार्यक्रम में अन्य शिक्षकों ने भी अपने व्यक्तव्य में रक्तदान के महत्त्व को बताया। मौके पर एनएसएस के छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

नगर निगम का स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा का समापन

मेदिनीनगर। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा 2024 का समापन 2 अक्टूबर को पंडित दीनदयाल स्मृति भवन में किया गया। इस वर्ष की थीम 'स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता' थी। कार्यक्रम में मानव श्रृंखला, वेस्ट टू आर्ट, और सामुदायिक स्थानों की सफाई प्रमुख रही। सिटी मिशन मैनेजर सतीश कुमार ने जानकारी दी कि 19 सितंबर को वेस्ट टू आर्ट प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने कचरे से विभिन्न आकार के मॉडल बनाए थे। पेंटिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिनमें अव्वल प्रतिभागियों को मुख्य कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। साथ ही लोगों को जागरूक किया गया कि वे कूड़ा निश्चित स्थान पर फेंके।

एक नजर

बीडीओ ने लिया प्रभार

केतार। प्रखंड विकास पदाधिकारी सावित्री कुमारी ने मंगलवार को प्रभारी बीडीओ विकास कुमार सिंह से प्रभार ग्रहण किया। बीडीओ सावित्री कुमारी पिछले दो माह से अवकाश पर थी। अवकाश से लौटते ही उन्होंने बीडीओ का प्रभार लिया। मौके पर प्रभारी बीडीओ विकास कुमार सिंह ने कहा कि दो माह का कार्यकाल काफी सुखद रहा। उन्होंने कहा की केतार वासियों का स्नेह और प्यार को कभी भूला नहीं पाऊंगा। बीडीओ सावित्री कुमारी ने दो माह का प्रभार संभालने के लिए विकास कुमार सिंह को धन्यवाद दिया। मौके पर सीआई नागेंद्र पाठक, कर्मचारी प्रकाश कुमार, पंचायत सचिव आदित्य कुमार, राम सुरेश राम, समन्वयक राकेश कुमार, रामकुमार प्रजापति, सिराज अंसारी, दिपक कुमार, जयराथ अंसारी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

रक्तदान शिविर और स्वच्छता अभियान का आयोजन

नियमित रूप से सभी को रक्तदान करना चाहिए : अंचल पदाधिकारी

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रंका में मंगलवार को रक्तदान शिविर और स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बताया गया कि झारखंड स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी के आदेशानुसार पूरे झारखंड में रक्त की उपलब्धता बनाए रखने के 17 सितंबर से 1 अक्टूबर तक शिविर का आयोजन करना है। इस क्रम में राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के मौके पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रंका में शिविर का आयोजन किया गया। रंका सीएचसी अंतर्गत कई चिकित्सक और स्वास्थकर्मी ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस आयोजन का शुभारंभ रंका के प्रखंड के अंचल पदाधिकारी शिवपूजन तिवारी, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. असजद अंसारी, डॉ. अशोक बाखला, डॉ. प्रीति तिवारी, डॉ. गोरखनाथ पांडेय, डॉ. भानू प्रताप सिंह, डॉ. इस्तयाक ने संयुक्त रूप दीप प्रज्जवलित कर किया। मौके पर अंचल पदाधिकारी शिवपूजन तिवारी ने कहा कि सभी लोगों को नियमित रूप से रक्तदान करना चाहिए। इससे कई प्रकार के बीमारियों से बचाव होता है। नियमित रक्तदान से हमारा हृदय स्वस्थ रहता है। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ असजद अंसारी ने कहा कि अगर हर इंसान नियमित रूप से रक्तदान करे तो कभी भी रक्त कोष में रक्त की कभी कमी नहीं होगी। आज उनका खुद 35 वां रक्तदान है।

कुल 22 यूनिट रक्तदान किया गया

रक्तदान शिविर के दौरान 22 यूनिट रक्तदान किया गया। रक्तदान करने वालों में डॉ. असजद अंसारी, डॉ. भानू प्रताप सिंह, डॉ. प्रीति तिवारी, डॉ. उत्कर्ष मिश्रा, डॉ. नीतीश परमार्थी, डॉ. विष्णु दत्त दुबे, मनदीप गुप्ता, अंजू प्रसाद, सुधीर कुमार, निरंजन कुमार, राहुल गुप्ता, मंजूर आलम, आशुतोष पांडेय, विपिन यादव, मेंहदी हसन, पुष्पराज सिंह, सुमन कच्छप, इसरार अंसारी, ललन राम, अनिल ठाकुर, मिथलेश कुमार, महताब आलम आदि के नाम शामिल हैं। इस मौके पर झारखंड सरकार के निर्देश पर नियमित रूप से रक्तदान करने का शपथ दिलाई गई। साथ ही साथ गांधी जयंती में उपलक्ष्य में तंबाकू नियंत्रण के तहत तंबाकू का सेवन न करने की शपथ दिलाई गई। भारत सरकार द्वारा चल रहे 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता अभियान को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सामुदायिक स्वास्थ केंद्र में सभी चिकित्सक और स्वास्थकर्मी द्वारा सफाई अभियान चलाया गया। अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. असजद अंसारी ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान दिवस मनाया जाता है। मौके पर डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, प्रखंड शाखा प्रबंधक दिनेश गुप्ता और कई स्वास्थ कर्मी उपस्थित थे।

न्यूज बॉक्स

मुख्य मार्ग पर खड़ा सूखा पेड़ बड़ी दुर्घटना को दे रहा है आमंत्रण

बड़गड़। थाना क्षेत्र के बड़गड़-टेहड़ी मुख्य मार्ग पर गोठानी गांव के पास कई महीनों से खड़ा दो आम का सूखा पेड़ किसी बड़ी दुर्घटना को दावत दे रहा है। प्रशासन व वन विभाग द्वारा पेड़ को हटाने का अभी तक कोई प्रयास नहीं किया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि कुछ महीने पहले वन विभाग के कर्मी द्वारा एक आम के पेड़ को आधा काटकर छोड़ दिया गया है, जिससे पेड़ गिरने का खतरा बढ़ गया है। इस व्यस्त मार्ग पर स्कूल के छात्र-छात्राओं सहित लोगों व वाहनों का आवाजाही निरंतर जारी रहता है। सूखे पेड़ की डालियां व शाखाएं कब किसी राह चलते वाहन या किसी राहगीर पर टूटकर गिर पड़ेगी कहा नहीं जा सकता। ऐसे में मुख्य मार्ग में चलने वाले राहगीरों, वहां के ग्रामीणों के जीवन पर खतरे के बादल मंडरा रहे है। थाना क्षेत्र के कई जगहों पर अन्य पेड़ भी इसी तरह सूखकर खड़ा है, जो दुर्घटना को दावत दे रहे है। क्षेत्र के प्रबुद्धजनों ने जिला प्रशासन व वन विभाग के उच्चाधिकारियों से दुर्घटना को दावत दे रहा है।

सबकी योजना, सबका विकास अभियान के तहत ग्राम सभा

खरौंधी। खरौंधी प्रखंड अंतर्गत मझिगावां पंचायत सचिवालय में 2 अक्टूबर गांधी जयंती के अवसर पर सबकी योजना, सबका विकास अभियान के तहत विशेष ग्राम सभा का आयोजन किया जाएगा। इस ग्राम सभा का उद्देश्य पंचायत स्तर पर विकास योजनाओं को सशक्त और समावेशी बनाना है, जिससे सभी समुदायों को लाभ मिल सके। पंचायत की मुखिया बिंदा देवी ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस विशेष ग्राम सभा में गांव की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे सड़क, पानी, बिजली, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी। साथ ही, आने वाले समय में विकास योजनाओं की रूपरेखा तैयार की जाएगी।मुखिया बिंदा देवी ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस ग्राम सभा में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और अपने सुझाव व समस्याओं को रखें ताकि पंचायत के विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी हो सके। विशेष ग्राम सभा में विभिन्न विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे, जो ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान करेंगे और सरकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। सबकी योजना, सबका विकास अभियान का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास सुनिश्चित करना और सभी को योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

पंसस की बैठक में शामिल नहीं होने वाले अधिकारियों से स्पष्टीकरण पूछने का निर्देश

भंडरिया। प्रखंड कार्यालय के सभागार में प्रमुख रुकमिणी कुमारी की अध्यक्षता में पंचायत समिति की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में समय से बीडीओ व अधिकारी के नहीं पहुंचने पर प्रमुख एवं पंचायत समिति सदस्य बैठक का बहिष्कार कर दिए। अपराह्न एक बजे बीडीओ के आने के बाद काफी मान मनउवल्ल के बाद बैठक शुरू हुआ। बैठक में मुख्य रूप से सभी विभागों में चल रहे विकास कार्यो की समीक्षा की गई। उपस्थित सभी विभाग के अधिकारी कर्मचारी द्वारा बिना रिपोर्ट के आने से प्रमुख नाराज थी। बैठक में बीडीओ अमित कुमार ने कहा कि जिस विभाग से अधिकारी नहीं पहुंचे हैं उन सभी से स्पष्टीकरण पूछा जाएगा।

डीसी ने 103 वर्ष के ग्रामीण को सम्मानित किया

नवीन मेल संवाददाता

मेराल। प्रखंड के बाना गांव के 103 वर्षीय मतदाता इंद्रदेव पासवान के घर उपायुक्त शेखर जमुआर मंगलवार को पहुंच अंग वस्त्र एवं माला पहना कर स्वागत किया। मौके पर एसडीओ संजय पांडेय बीडीओ जागो मातो, बीपीआरओ बसंत पांडेय, पूर्व मुखिया विजय सिंह आदि उपस्थित थे। मालूम हो कि 100 वर्ष या उससे अधिक उम्र वाले मतदाताओं को सम्मानित करने का अभियान चलाया गया है। उक्त अभियान के तहत डीसी शेखर जमुआर ने इंद्रदेव पासवान को सम्मानित किया तथा उपस्थित लोगों को आगामी विधानसभा चुनाव के दौरान मतदान मे भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गांव में उपायुक्त के पहुंचने के बाद लोगों में उत्साह देखी गई। दौरान उन्होंने लोगों को निर्देश दिया कि फॉर्म 6 ,7 व 8 को प्रत्येक मतदान केंद्र पर शीघ्रता के साथ भरें। साथ हीं एसडीओ संजय पांडेय ने लोगों को चुनाव संबंधी कई अन्य निर्देश दिए।

भवनाथपुर प्रतिनिधि की मान्यता रद्द

रांची। गढ़वा के भवनाथपुर प्रखंड के राष्ट्रीय नवीन मेल प्रतिनिधि किशन श्याम विमल का नवीन मेल से कोई संबंध नहीं है। संस्थान द्वारा जारी पहचान पत्र का दुरुपयोग करने जैसे गंभीर आरोपों के कारण समाचार संकलन के लिए जारी उनका पहचान पत्र रद्द कर दिया गया है। इसकी लिखित सूचना राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के अलावा गढ़वा जिला प्रशासन को दे दी गई है।

जान जोखिम में डाल जर्जर कच्चा मकान में सपरिवार रहने को विवश

नवीन मेल संवाददाता

रमना। सरकार द्वारा चलाये जा रहे आवास योजना से गरीब मजदूर और अति जरूरत मंद ग्रामीण आज भी बंचित हैं। इसका जीता जागता उदाहरण बहियार खुर्द निवासी 25 वर्षीय राहुल पासवान पिता स्वर्गीय शिवकुमार पासवान है। इनके मिट्टी घर की स्थिति जर्जर हो चुका हैं। यदि समय रहते इन लोगों को इस घर से निजात नहीं मिला तो किसी दिन कोई बड़ा हादसा से इनकार नहीं किया जा सकता हैं। मिट्टी के घर पर प्लास्टिक डाल कर उसी घर में पूरा परिवार गुजर बसर करते हैं। इस वर्ष हुई वर्षा से पूरा दीवार जर्जर हो चूका है। राहुल कुमार आवास के संबंध में बताया कि परिवार में आज तक किसी को भी आवास योजना का लाभ नहीं मिला हैं। साथ ही घर हाइवे पर सड़क में भी पड़ गया हैं, लेकिन अभी तक कोई मुआवजा नहीं मिला। जिससे की दूसरे जगह घर भी बना कर सपरिवार सुरक्षित जीवन यापन कर सके। आवास योजना के संबंध में राहुल की पत्नी रानी देवी बताया कि चार बार से सरकार आपके द्वार कार्क्रम में आवास के लिए आवेदन दी, लेकिन अभी तक इसका लाभ नहीं मिला।

मुख्यमंत्री ऊर्जा खुशहाली योजना के तहत उपभोक्ताओं के बीच माफी प्रमाण पत्र का वितरण

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी। मुख्यमंत्री ऊर्जा खुशहाली योजना के तहत 50 बिजली उपभोक्ताओं को बिजली माफी प्रमाण पत्र का वितरण मंगलवार को किया गया। ऐसे उपभोक्ताओं जिनकी मासिक बिजली खपत 200 यूनिट तक होती है, उनके बिजली बिल माफ किए जा रहे हैं। इसके तहत खरौंधी प्रखंड में एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य उपभोक्ताओं को बिजली बिल माफी के प्रमाण पत्र वितरित करना था। कार्यक्रम की अगुवाई बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता पंकज कुमार, कनिष्ठ अभियंता अमल राय ने की। शिविर के दौरान प्रखंड क्षेत्र के चंदनी, खरौंधी, राजी, सुंडी, करिवाडीह, सिसरी, अमरोरा आदि गांवों के लोगों का बिजली बिल माफ करने के बाद माफी प्रमाण दिया गया। शिविर में जिला परिषद सदस्य धर्मराज पासवान, उपप्रमुख देवदत्त प्रयास आर्य ने भी हिस्सा लिया और उपभोक्ताओं को प्रमाण पत्र सौंपे। कार्यक्रम में बिजली विभाग के कर्मचारी, बिजली मिस्त्री इंदल राम, योगेन्द्र प्रजापति, राकेश उरांव सहित कई अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

बिजली बिल माफ उपभोक्ताओं को दिया गया प्रमाण पत्र

श्री बंशीधर नगर मुख्यमंत्री ऊर्जा खुशहाली योजना के तहत बिजली उपभोक्ताओं का बिजली बिल माफ किया गया है। बिजली विभाग कार्यालय कक्ष में मुख्यमंत्री ऊर्जा खुशहाली योजना के तहत उपभोक्ताओं को प्रमाण पत्र देने के लिये अनुमंडल के सभी प्रखंडों में कैंप लगाया गया। अनुमंडल क्षेत्र के नगर उंटारी, सगमा, धुरकी, में 106 बिजली उपभोक्ताओं को प्रमाण पत्र वितरण किया गया। बिजली विभाग के कार्यालय कक्ष में पूर्व विधायक अनंत प्रताप देव के पुत्र मानवेंद्र प्रताप देव (मनु बाबा),कनीय अभियंता सुधीर बांडो,कार्यालय के प्रधान सूरज कुमार,अमल राय द्वारा बिजली उपभोक्ताओं को प्रमाण पत्र वितरण किया गया। झारखंड सरकार द्वारा बिजली उपभोक्ताओं का महीने की जिनकी खपत 200 यूनिट है। वैसे उपभोक्ताओं को बिजली बिल मुफ्त दी जा रही है। पूर्व विधायक अनंत प्रताप देव के पुत्र मानवेंद्र प्रताप देव ने बताया कि झारखंड मुक्ति मोर्चा सरकार द्वारा 200 यूनिट बिजली मुफ्त दिया जा रहा है। बिजली उपभोक्ताओं का बिजली बिल भी माफ हुआ है।

विधायक भानू ने किया दो रोड का शिलान्यास

धुरकी। प्रखंड के शिवरी व कुंबा कला गांव में पीडब्ल्यूडी रोड से शिवरी होते हुए मिरचैया तक मजबूती करण व कदवा से कुंबा कला पथ मजबूती करण आरईओ प्रमंडल गढ़वा द्वारा 10.23 करोड़ रु की लागत से बननेवाले रोड का शिलान्यास किया गया। विधायक भानू प्रताप शाही ने मंगलवार को गांव के वृद्ध आदिवासी के हाथों नारियल की फोड़कर शिलापट्ट का अनावरण कराया। उन्होंने कहा कि शिवरी गांव में 19 साल के बाद यह सड़क बनाने का काम किया है तो सिर्फ भानू प्रताप शाही किया है। बच्चों का भविष्य उज्जवल करने के लिए उन्होंने उच्च विद्यालय दिया है। गांव की महिलाओं व बेटी बहन का प्रसव गांव में हो, इसके लिए स्वास्थ्य केंद्र बनवाया है। उन्होंने कहा कि अब पूर्व विधायक तुम तड़ाक पर भी आ गए हैं। कार्यक्रम को एससी मोर्चा के जिलाध्यक्ष लक्ष्मण राम, इन्द्रमणी जायसवाल,शालीग्राम गुप्ता सहित अन्य ने भी संबोधित किया। मौके पर शशि कमलापुरी, चांददेव बैठा, संतोष जायसवाल, भगत दयान्द यादव, उपेंद्र चंद्रवंशी, तेजू कोरवा, रामप्रवेश यादव सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

भाकपा का प्रतिनिधि मंडल मिला एसडीओ, मांग पत्र सौंपा

श्री बंशीधर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधि मंडल जिला सचिव रामेश्वर प्रसाद अकेला के नेतृत्व में मंगलवार को अनुमंडल पदाधिकारी से मिलकर जन समस्याओं से अवगत कराते हुए मांग पत्र सौंपा। मांग पत्र में कहा गया है कि रमना प्रखंड के मड़वनिया पंचायत स्थित सुनील मुखर्जी नगर कोरगा में मालिक गैरमजरूआ भूमि पर वर्षो से वंचित परिवार के लोग बसे हैं। कुछ लोगों के नाम अबुआ आवास स्वीकृत हुआ है। उनसे भूमि का रसीद की मांग किया जा रहा है, जबकि उनके पास रसीद नही है। ऐसी स्थिति में उन्हें अबुआ आवास का लाभ दिया जाए। कविसा ग्राम में भूदान गैरमजरूआ भूमि पर दलित व पिछड़ी परिवार के लोग वर्षो से खेती कर रहे है। 45-46 का मामला विगत 29 वर्षो से चल रहा है।

कार्रवाई

पूर्व से लंबित योजनाओं को अविलंब भौतिक रूप से बंद करने का निर्देश

डीडीसी ने मनरेगा की नई योजना के कार्यन्वयन पर लगाई रोक

नवीन मेल संवाददाता

डंडाई। प्रखंड क्षेत्र में संचालित होने वाले मनरेगा की मेड़ बंदी योजना के कार्यान्वयन पर डीडीसी पशुपति नाथ मिश्रा ने रोक लगा दिया गया है। डीडीसी ने विभागीय पत्रांक के माध्यम से बीडीओ को जारी पत्र में कहा है कि जब तक पुरानी सभी योजनाओं को अंतिम रूप देकर बंद नहीं कर लिया जाता है, तब तक दूसरा कोई भी मनरेगा की योजना संचालित नही करें। उन्होंने कहा कि जिले भर में कुल 18169 मनरेगा की योजनाएं पूर्व से संचालित है, जो पोर्टल पर देखा जा रहा है। औसतन सभी प्रखंडों में उसका आंकड़ा लगभग 800 योजना के करीब हो जाता है। जिले का कोई भी प्रखंड ऐसा नहीं है, जहां पर मनरेगा की योजना पूर्व से संचालित नहीं है। ऐसे में नया योजना लेने का कोई प्रश्न ही नहीं उठाता है। डीडीसी ने सभी कंप्यूटर आपरेटर, पंचायत सचिव, मुखिया, रोजगार सेवक, कनीय अभियंता, सहायक अभियंता, बीपीओ के साथ दैनिक रूप से समीक्षा पर्यवेक्षण करते पूर्व से लंबित योजनाओं को नियमानुसार एमआईएस से बंद करने का शख्त निर्देश दिया है। उन्होंने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि पूर्व से लंबित योजना रहने के बावजूद नई योजना प्रारंभ की जाती है तो प्रखंड स्तर पर बीडीओ, बीपीओ और पंचायत स्तर पर पंचायत सचिव, रोजगार सेवक के खिलाफ जांचोपरांत नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। मालूम हो कि प्रखंड क्षेत्र में इन दिनों बड़े पैमाने पर मनरेगा के मेड़ बंदी योजना का कार्यन्वयन को लेकर विशेष तैयारी चल रही थी यहां तक कि उक्त योजना को किसी-किसी पंचायतों में मनरेगा के पोर्टल पर ऑनलाइन भी कर दिया गया है। डीडीसी का इस बाबत पत्र जारी होते ही उस पर विराम लगा गया गया है।

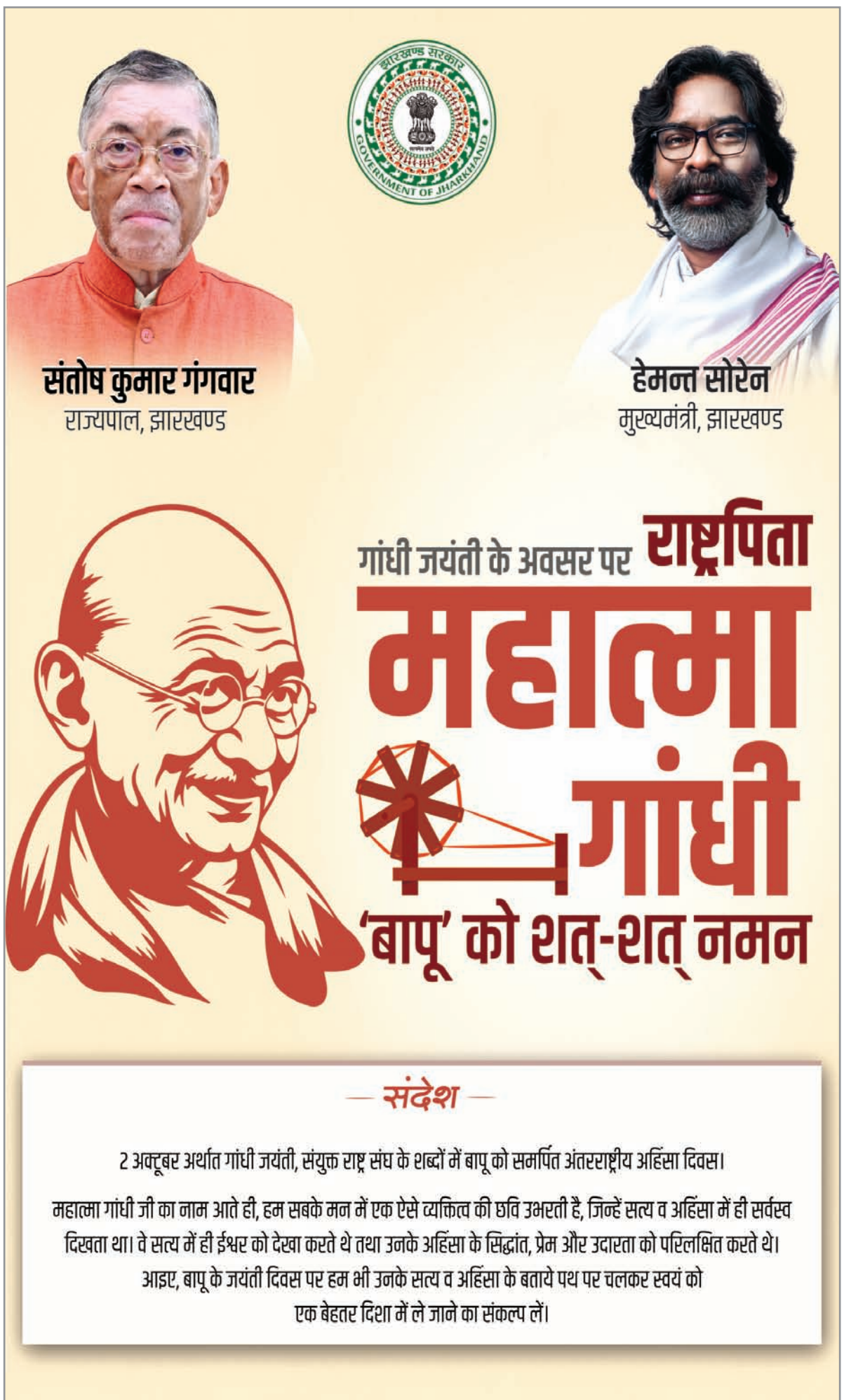

एक नजर

अवैध बालू उत्खनन करते तीन ट्रैक्टर जब्त

मयूरहंड (चतरा)। थाना प्रभारी अमित कुमार ने मंगलवार को बडकरीया नदी सोकी घाट से तीन ट्रैक्टर को अवैध बालू उत्खनन करते जब्त कर थाना लाया। थाना प्रभारी के इस कार्रवाई से अवैध बालू संचालको में हडकंप मचा गया है। थाना प्रभारी ने कहा कि अवैध बालू उत्खनन के खिलाफ निरंतर इस तरह की कार्रवाई की जाएगी। जब्त ट्रैक्टर के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई के लिए अंचल अधिकारी को पत्र लिखा है जिससे आगे की कार्रवाई की जा सके।

विवादित भूमि का किया गया मापी निर्माण कार्य पर रोक

गिद्धौर (चतरा)। प्रखंड मुख्यालय के झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक के समीप विवादित भूमि की मापी किया गया। यह मापी सिमरिया अनुमंडल पदाधिकारी के निर्देश पर किया गया। बताया गया की खाता नंबर 112,प्लॉट 3250 रखवा एक डिसमिल भूमि गैर मजरूआ खास किस्म की है। उक्त भूमि पर गिद्धौर के रतन दांगी द्वारा अवैध रूप से कब्जा किया गया था। सिमरिया अनुमंडल पदाधिकारी ने उक्त भूमि की मापी करते हुए सरकारी भूमि होने की सूचना पट्ट लगाने का निर्देश दिया, जिसके आलोक में राजस्व कर्मचारी प्रमोद कुमार सिन्हा व सरकारी अमीन द्वारा भूमि की मापी की गई। राजस्व कर्मचारी ने अगले आदेश तक निर्माण कार्य बंद रखने का निर्देश दिया है।

लौह अयस्क पत्थर लदे ट्रक पलटा, चालक, उपचालकबचे

चंदवा। चंदवा-चांपी-लोहरदगा मार्ग पर डेढ़टंगवा घाटी में मंगलवार की सुबह लौह अयस्क पत्थर लदा एक ट्रक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना के बाद ट्रक पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया, जिसके कारण लौह पत्थर सड़क किनारे बिखर गया। हालांकि इस दुर्घटना में चालक व उप चालक की जान बाल-बाल बच गयी। सामने से आ रहा एक बाइक सवार भी चपेट में आते-आते बचा। जानकारी के अनुसार उक्त ट्रक राउरकेला से लौह पत्थर लेकर मध्य प्रदेश जा रहा था। इस दौरान डेढ़टंगवा घाटी के तीखे ढ़लान में सड़क के बीचों-बीच खड़ी ब्रेक डाउन ट्रक से बचने के प्रयास में ट्रक का संतुलन बिगड़ गया और सामने से आ रही बाइक को बचाने के प्रयास में ट्रक पलट गयी।

हाइवा में लगी आग, जांच में जुटी पुलिस

नवीन मेल संवाददाता

बालूमाथ। थाना अंतर्गत संचालित मगध कोल माइंस के फेज 3 चमातू के कांटा नंबर 20 के पास कोयला परिवहन कर रही हाइवा में अचानक आग लग गई। हाइवा का बोनट (केबिन) टायर सहित धू-धू कर जल गया। मिली जानकारी के अनुसार सोमवार लगभग 2:00 बजे रात को ड्राइवर कांटा नंबर 20 के पास सड़क पर गाड़ी खड़ा करके कांटा में गया था। इस दौरान गाड़ी में आग लग गई। आग की लपटे इतनी तेज थी कि देखते ही देखते पूरा गाड़ी जल गया। घटना की जानकारी पाकर अमरवाडीह पीकेट प्रभारी अनुभव सिन्हा दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। घटना की छानबीन कर रहे हैं। खबर लिखे जाने तक आग लगने की कारणों

का पता नहीं चल पाया है। बता दें कि गाड़ी पीएनएम ट्रांसपोर्टिंग कंपनी के द्वारा माइंस से कोयला की ढुलाई कर विभिन्न रेलवे साइडिंग पर ले जा रही थी। इस दौरान यह घटना घटी है। घटना को लेकर क्षेत्र में सनसनी है। बता दें कि बीते वर्ष पहले हाइवा में आग लगी थी, जो किसी आपराधिक संगठन द्वारा लेवी के उद्देश्य से इस तरह के घटना को अंजाम दिया गया था। पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है।

झारखंड आंदोलनकारी मंच का एक दिवसीय धरना

लातेहार। झारखंड आंदोलनकारी मंच जिला समिति लातेहार द्वारा मंगलवार को समाहरणालय के समक्ष मांगों के समर्थन में एक दिवसीय धरना दिया गया। अध्यक्षता मंच के अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह ने की। जिलाध्यक्ष सत्येंद्र सिंह ने कहा कि झारखंड राज्य निर्माण के 24 वर्ष गुजर गए। इसके बावजूद अब तक आंदोलनकारियों कि पहचान नहीं हो सकी है। बीते वर्ष भी आंदोलनकारियो का संघर्षों में ही गुजरा है। उन्होंने कहा कि 12 सूत्री मांगों के समर्थन में धरना दिया गया है। धरना के बाद मुख्य मंत्री के नाम उपायुक्त लातेहार को मांग पत्र सौंपा गया। 12 सूत्री मांगों में चिन्हित आंदोलनकारियों को 50 हजार रुपए पेंशन,पेंशन के लिए जेल जाने की बाध्यता समाप्त करने,राजधानी रांची मे आंदोलनकारियों के लिए अतिथि गृह का निर्माण कराने समेत अन्य मांग शामिल है।

सेवानिवृत्त पंचायत सेवक को दी गयी भावभीनी विदायी

नवीन मेल संवाददाता

कुन्दा(चतरा)। सेवानिवृत्त पंचायत सेवक रामजी साव को मंगलवार को समारोहपूर्वक विदाई दी गई। यह समारोह प्रखण्ड कार्यालय सभागार में आयोजित किया गया। मौके पर सहयोगियों व अधिकारियों ने उन्हें फूलमाला, शाल, बैग, छाता, वस्त्र व पुस्तक देकर सम्मानित किया। रामजी साव ने अपनी सेवा के दौरान कुंदा व सिक्कीदाग पंचायत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह लोगों की सेवा में हमेशा तत्पर रहे। इस अवसर पर सहयोगियों ने उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना किया। रामजी साव ने सहयोगियों, पदाधिकारी को धन्यवाद। विदाई समारोह कार्यक्रम में प्रमुख प्रतिनिधि जयराम भारती,उपप्रमुख,प्रखंड विकास पदाधिकारी विवेक कुमार,नव पदस्थापित सीओ दीपक कुमार मिश्रा, निवर्तमान सीओ शंभू राम,मुखिया मनोज साहू, मुखिया प्रतिनिधि विनोद साव,अखलेश यादव,पंचायत सेवक मुरली राम, मुकेश कुमार, जनसेवक शिवमंगल कुमार,रंजन कुमार राजू,स्वयंसेवक कमलेश कुमार यादव ,अमलेश यादव,कृष्ण यादव ,दिलीप साव,प्रमोद रजक, उदित यादव,समेत कई अन्य प्रखंडकर्मी व अंचल कर्मी उपस्थित थे।

विद्यालय प्रबंधन समिति का चुनाव संपन्न, अध्यक्ष अनिता देवी, उपाध्यक्ष उदय, संयोजिका बनी पूनम देवी

हंटरगंज (चतरा)। हंटरगंज प्रखण्ड क्षेत्र अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय ढेबो में मंगलवार को विद्यालय प्रबंधन समिति गठन किया गया। प्रधानाध्यापक अजीत कुमार और प्रयवेक्षक रामजतन निराला के अध्यक्षता में समिति का चुनाव संपन्न हुवा। जिसमें अध्यक्ष अनीता देवी को निर्विरोध चुना गया। वहीं उपाध्यक्ष उदय साव, संयोजिका सुनीता देवी के अलावे 12 सदस्यों को सर्वसम्मति से चुना गया। निर्वाचित अध्यक्ष ने कहा कि विद्यालय की विकास के लिए ईमानदारी पूर्वक सहयोग करने के साथ सदस्यों को साथ लेकर छात्र-छात्राओं के बेहतर शिक्षा के लिए कार्य करूंगी। संयोजिका ने कहा की बच्चों को सरकारी मेन्यू के अनुसार मध्याह्न भोजन उपलब्ध करवाया जायेगा। किसी को शिकायत का मौका नही मिलेगा। मौके पर पंचायत समिति सदस्य योगेंद्र यादव, वार्ड सदस्य रामबचन भारती, अनिल यादव, मूटरी देवी, सुनीता देवी, झखाड़ी साव, रविंद्र यादव, समेत अभिभावक उपस्थित थे।

मनकेरी गांव में युवाओं की जन पंचायत का आयोजन

लातेहार। प्रखंड के तरवाडीह पंचायत के अंतर्गत मनकेरी गांव में युवाओं की जन पंचायत का सफल आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में आजसू पार्टी के जिलाध्यक्ष अमित पांडेय और मनिका विधानसभा के युवा नेता सुभाष सिंह शामिल थे। पंचायत में युवाओं की विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। जन पंचायत का मुख्य उद्देश्य युवाओं की समस्याओं को समझना और उन्हें समाधान दिलाने के लिए ठोस कदम उठाना था। बैठक के दौरान युवाओं ने शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएं, खेलकूद से संबंधित समस्याओं पर अपनी बातें रखी। मुख्य अतिथि अमित पांडेय ने युवाओं की आवाज को गंभीरता से सुना और उन्हें भरोसा दिलाया कि पार्टी उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं और उन्हें सशक्त बनाना सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। मनिका विधानसभा के युवा नेता सुभाष सिंह ने कहा कि विधानसभा का नेतृत्व अब युवाओं को सौंपने का समय आ गया है। उन्होंने युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। जन पंचायत में युवाओं ने एकजुट होकर अपने क्षेत्र के विकास के लिए काम करने का संकल्प लिया। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि युवाओं की समस्याओं के निराकरण के लिए नियमित अंतराल पर ऐसी पंचायतों का आयोजन किया जाएगा। मौके पर सद्दाम अंसारी, रामकुमार प्रसाद, अभिजीत सोनू, नीतेश जायसवाल, रौशन अंसारी, सेवल शर्मा, उपेन्द्र उरांव सहित सैकड़ों युवा ग्रामीण उपस्थित थे।

सौहार्द बिगाड़ने वाले व सोशल मीडिया पर पुलिस की रहेगी कड़ी नजर, डीजे बजाने पर भी रोक

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। दुर्गा पूजा को लेकर जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव की अध्यक्षता में समाहरणालय में हुई। बैठक में दुर्गा पूजा आपसी सौहार्द एवं शांतिपूर्ण वातावरण में मनाने का निर्णय लिया गया। एसपी ने कहा कि दुर्गा पूजा में उपद्रव या अशांति फैलाने वालों से पुलिस सख्ती से निपटेगी। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर भी कड़ी नजर रखी जायेगी। सांप्रदायिक या भड़काउ सामाग्रियां पोस्ट करने वालों पर चिन्हित कर कार्रवाई की जायेगी। जिले के सभी थाना प्रभारियों को अपने-अपने थाना क्षेत्र के संवेदनशील इलाकों को चिन्हित कर अग्रेत्तर कार्रवाई पूरी करने का निर्देश दिया। धार्मिक स्थलों के आसपास सुरक्षा बलों की तैनाती का निर्देश दिया। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि कोर्ट के आदेश पर किसी भी पूजा पंडाल में डीजे बजाने वाले और डीजे मालिकों को भी कड़ी चेतावनी दी। कहा कि किसी भी हाल में डीजे नहीं बजाना है। अगर डीजे बजाते है तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। डीडीसी सुरजीत सिंह ने कहा कि दुर्गा पूजा धार्मिक आस्था से जुड़ा है। अपर समाहर्ता रामा रविदास ने कहा कि दुर्गा पूजा मिलजुल कर मनाना है। एसडीओ अजय रजक ने कहा कि दुर्गा पूजा में डीजे पर पूर्णतः पाबंदी रहेगी। बैठक में आईटीडीए निदेशक प्रवीण कुमार गगराई, विधायक प्रतिनिधि हरिशंकर सिंह, जिप सदस्य विनोद उरांव, सिविल सर्जन डा अवधेश कुमार सिंह, डीआरडीए निदेशक प्रभात रंजन चौधरी, गोपानीय शाखा के उत्पाद अधीक्षक रंजन तिवारी, कार्यपालक अभियंता भवन कमलेश सिंह, कार्यपालक अभियता विद्युत मो शमसाद, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी डा चंदन, नगर प्रबंधक जय लक्ष्मी भगत व थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिन्हा के अलावा वैष्णव दुर्गा मंदिर के सचिव आशीष टैगोर, सार्वजनिक राजा दुर्गा बाड़ी के अध्ययक्ष आदि मौजूद थे।

नेतरहाट का राज्य स्तरीय योगासन प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन

महुआडांड़। गिरिडीह में आयोजित पंचम राज्य स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता में नेतरहाट आवासीय विद्यालय के छात्रों ने सर्वोच्च प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में राज्य भर के विभिन्न जिलों से लगभग 300 खिलाड़ियों ने भाग लिया। नेतरहाट आवासीय विद्यालय के 12 छात्र और 1 छात्रा ने कोच बसंत तिर्की के निर्देशन में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। राहुल कुमार शाह और दिलीप गंजू ने आर्टिस्टिक पेयर में कांस्य पदक, अमन कुमार और निखिल कुमार ने रिदमिक पेयर में और कुमार युवराज ने आर्टिस्टिक सिंगल में रजत पदक प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में कुमार युवराज का चयन राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। विद्यालय के लिए गर्व की बात है। इस उपलब्धि पर विद्यालय के अधिकारी और शिक्षकों ने छात्रों को बधाई दी।

दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण माहौल में मनाने का निर्णय

नवीन मेल संवाददाता

मयूरहंड (चतरा)। दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न कराने को लेकर शांति समिति की बैठक मंगलवार को मयूरहंड थाना परिसर मेंआयोजित की गई। अध्यक्षता बीडीओ सह सीओ मनीष कुमार व संचालन थाना प्रभारी अमित कुमार ने किया। बीडीओ ने कहा कि दुर्गा पूजा में डीजे पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। मौके पर सरकार व जिला प्रशासन के स्तर पर जारी गाइडलाइन से सभी को अवगत कराते हुए निर्देश का अनुपालन करने का निर्देश दिया गया। सभी पूजा समिति के सदस्यों को लाइसेंस लेने एवं पंडाल परिसर में सीसीटीवी कैमरा लगाने को कहा गया। थाना प्रभारी ने कहा कि पर्व के दौरान भीड़ वाले पूजा पंडालों में पटाखे जलाने वालों पर ध्यान दें। इससे बेवजह लोगों को परेशानी हो सकती है। तय रूट से ही विसर्जन जुलूस निकालने को लेकर सभी पूजा समिति को निर्देश दिया। मौके पर विधायक प्रतिनिधि अनिल कुमार सिंह, अश्विनी कुमार सिंह, बाबूलाल दांगी, ईश्वरी मेहता, बच्चन देव दांगी, दिलीप पांडेय, मोबारक अंसारी आदि उपस्थित थे।

न्यूज बॉक्स

समाजसेवी बब्बन सिंह ने थामा कांग्रेस का दामन

बालूमाथ। लातेहार जिला के समाजसेवी बब्बन सिंह ने मंगलवार को कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। बता दें कि कांग्रेस पार्टी के लातेहार जिला अध्यक्ष मुनेश्वर उरांव के पहल पर रांची स्थित कांग्रेस पार्टी कार्यालय में कांग्रेस विधायक दल के नेता सह वित्त मंत्री झारखंड सरकार रामेश्वर उरांव,पूर्व केंदीय मंत्री सुबोध कांत सहाय ने बब्बन सिंह को विधिवत पार्टी का सदस्यता ग्रहण करायी। मौके पर बबन सिंह ने धन्यवाद करते हुए कहा कि वह कांग्रेस पार्टी के नीति और सिद्धांत से प्रभावित होकर सदस्यता ली है। कांग्रेस की नीति का पालन करूंगा एवं पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर लातेहार जिले में संगठन को और भी मजबूती प्रदान करेंगे । कांग्रेस जिला अध्यक्ष मुनेश्वर उरांव ने बब्बन सिंह को पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि श्री सिंह का पार्टी में आने से पार्टी को और भी मजबूती मिली है। निश्चित तौर पर कांग्रेस पार्टी लातेहार जिला में इतिहास रचने का कार्य करेगी। मौके पर उपरोक्त लोगों के अलावा पार्टी के कई वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

गिद्धौर के 28 वां सीओ बने अनंत शयनम विश्वकर्मा

गिद्धौर (चतरा)। गिद्धौर अंचल के 28 वां अंचल अधिकारी के रूप में मंगलवार को अनंत शयनाम विश्वकर्मा ने योगदान दिया। योगदान देने के बाद बीडीओ सह सीओ राहुल देव से पदभार ग्रहण किया। बताया जाता है कि अनंत शयनम विश्वकर्मा सरायकेला खरसावां के कुचाई अंचल से आए हैं। पदभार ग्रहण करने के बाद अंचल अधिकारी ने पत्रकारों से कहा कि अंचल के कार्य में तेजी लाना,भूमि विवाद को निपटाना,कार्य में पारदर्शिता लाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। पदभार ग्रहण करने के पूर्व प्रखंड विकास पदाधिकारी सहित अन्य कर्मियों ने नव पदस्थापित अंचल अधिकारी को गुलदस्ता देकर स्वागत किया। मौके पर राजस्व कर्मचारी पप्पू कुमार यादव,सीआई प्रमोद कुमार सिन्हा सहित अंचल के अन्य कर्मी उपस्थित थे।

बीईईओ के विरुद्ध गोलबंद हुए शिक्षक, कार्रवाई की मांग

गिद्धौर (चतरा)। प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी द्वारा आए दिन शिक्षकों को बेवजह परेशान किए जाने से आहत प्रखंड के शिक्षकों ने बीईईओ के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है। उपायुक्त से शिक्षकों ने कार्रवाई करने की मांग की है। इस बाबत प्रखंड मुख्यालय के पीएमश्री मध्य विद्यालय परिसर में प्रखंड के शिक्षक-शिक्षिकाओं की बैठक हुई। बैठक में प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी द्वारा कन्या मध्य विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक अर्जुन टोपा से स्पष्टीकरण मांगे जाने का विरोध किया है। शिक्षकों ने कहा बीईईओ लगातार किसी न किसी शिक्षक को टारगेट में लेकर परेशान कर रहे हैं। वैसी स्थिति में शैक्षणिक कार्य बाधित हो रहा है। शिक्षकों ने बताया कि गिद्धौर के दिवाकर कुमार की पुत्री आलिस कुमारी का चयन नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में हुआ। बीईईओ द्वारा सभी अभिलेख अपने निजी डेरा में मंगवा गया। वहां अभिलेख में छेड़छाड़ की गई है। शिक्षकों ने कहा कि बीईईओ द्वारा संयंत्र रच कर अभिलेख में छेड़छाड़ करते हुए शिक्षक को परेशान किया जा रहा है। बच्ची को पढ़ने से वंचित किया जा रहा है। उपायुक्त से मामले की जांच करते हुए बीईईओ पर कार्रवाई करने व गिद्धौर से हटाने की मांग किया गया है।

दुर्गा पूजा आपसी एकता के साथ में मनाने का निर्णय

बारियातू। थाना परिसर मे मंगलवार को दुर्गा पूजा मनाने को लेकर बीडीओ सह सीओ नंद कुमार राम के अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक हुई। बैठक में सभी दुर्गा पूजा समिति अध्यक्ष से कार्यक्रम की जानकारी लिया गया। साथ ही कलश स्थापना, कार्यक्रम सहित विसर्जन को लेकर सभी समितियों से बारी-बारी वार्ता की गई। टोटी हेसला पूजा समिति द्वारा बताया की पिछले सात वर्षों से एकादशी के दिन दोपहर में मेला का आयोजन किया जाता है। साथ ही मूर्ति विसर्जन भी करते हैं। थाना प्रभारी राजा दिलावर ने गोनिया, गड़गोमा, बालूभांग, भाटचतरा सहित अन्य पूजा समिति से पूजा पंडाल और कार्यक्रम को लेकर लोगों से विचार लिया। सीओ सह बीडीओ ने कहा कि दुर्गा पूजा सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ मनाए। पूजा पंडाल में सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य है। पूजा स्थल में बनाए गए पूजा पंडाल में बिजली वायरिंग की जांच करने और सॉट सर्किट से अग्नि से बचाव के लिए विभिन्न तरह का सुझाव दिया। सड़क दुर्घटना को नियंत्रण रखने के उदेश्य से दो अक्टूबर से हेलमेट चेकिंग अभियान चलाया जायेगा। मौके पर जिला परिषद सदस्य रमेश राम, 20 सूत्री अध्यक्ष राजेंद्र गंझू, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष रीगन कुमार, मुखिया केदार गंझू, पंसस राजेश राम, समाज सेवी, क्यूम, संजय सिंह, तुला गंझू, धीरज राणा, डब्लू सिंह, अनुप कुमार सोनी, शिव शंकर ठाकुर, अफजल अंसारी, पंकज सिंह, मो. शालीम, लाल आशीष नाथ शाहदेव, सफीक, ईश्वरी प्रसाद सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

इंडिया

वक्फ बोर्ड की वकालत, विरोध और समर्थन की राजनीति

वक्फ मुस्लिम कानून द्वारा मान्यता प्राप्त धार्मिक, धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए चल या अचल संपत्तियों का उद्देश्य है कि मुस्लिम द्वारा संपत्ति, चाहे वह चल हो या अचल, मूर्त हो या अमूर्त, ईश्वर को दान करना, इस आधार पर कि हस्तांतरण से जरूरतमंदों को लाभ होगा। एक केंद्रीय वक्फ बोर्ड और कई राज्य बोर्ड हैं।वक्फ अधिनियम को पहली बार 1954 में संसद द्वारा पारित किया गया और 1995 में एक नया वक्फ अधिनियम पारित किया गया, जिसने वक्फ बोर्डों को अधिक अधिकार दिए। 2013 में अधिनियम में और संशोधन किया गया ताकि वक्फ बोर्ड को संपत्ति को 'वक्फ संपत्ति' के रूप में नामित करने के लिए व्यापक अधिकार दिए जा सकें। सरकार वक्फ बोर्ड अधिनियम में 32-40 संशोधनों पर विचार कर रही है। प्रस्तावित संशोधनों के बाद वक्फ बोर्ड को मूल्यांकन के लिए जिला कलेक्टर के कार्यालय में अपनी संपत्तियों को पंजीकृत करना अनिवार्य होगा। संशोधनों का उदेश्य केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्य बोर्डों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करके समावेशिता को बढ़ाना भी है। इसके अतिरिक्त, प्रस्तावित परिवर्तनों में वक्फ संपत्तियों की न्यायिक जांच की अनुमति देना शामिल है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि वे वक्फ संपत्ति के रूप में योग्य हैं या नहीं।रेलवे और रक्षा विभाग के बाद वक्फ बोर्ड को भारत में तीसरा सबसे बड़ा भूमिधारक कहा जाता है। वर्तमान में 8 लाख एकड़ में फैली लगभग 8,72,292 पंजीकृत वक्फ संपत्तियां हैं। इन संपत्तियों से 200 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। लगभग 200 व्यक्ति राज्य वक्फ बोर्डों को नियंत्रित करते हैं। वक्फ को लेकर विवाद अंग्रेजों के जमाने से चला आ रहा है। वक्फ की संपत्ति पर कब्जे का विवाद लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल तक पहुंचा था। अंग्रेजी हुकूमत के दौरान ब्रिटेन में जजों की एक पीठ बैठी और उन्होंने इसे अवैध करार दिया था लेकिन, ब्रिटिश भारत की सरकार ने इसे नहीं माना और इसे बचाने के लिए 1913 में एक नया एक्ट लाई। 8 दिसंबर 2023 को वक्फ बोर्ड (एक्ट) अधिनियम 1995 को निरस्त करने का प्राइवेट मेंबर बिल राज्यसभा में पेश किया गया था।यह बिल उत्तर प्रदेश से भाजपा सांसद हरनाथ सिंह यादव ने पेश किया था । राज्यसभा में इस बिल को लेकर विवाद भी हुआ था । भाजपा सांसद ने कहा था कि 'वक्फ बोर्ड

अधिनियम 1995' समाज में द्वेष और नफरत पैदा करता है। वक्फ एक अरबी शब्द है। जिसका अर्थ होता है खुदा के नाम पर अर्पित वस्तु।वक्फ बोर्ड के अधिकार में चल और अचल संपत्तियां आती हैं। इन संपत्तियों के रखरखाव के लिए राष्ट्रीय से लेकर राज्य स्तर पर वक्फ बोर्ड होता है।वक्फ बोर्ड को जो संपत्ति दान दी जाती है, उससे गरीबों की मदद की जाती है.वक्फ के अधिकारों को लेकर है सबसे ज्यादा विवाद जिसमें दो सक्रिय पक्ष और एक तटस्थ है ।सबसे अधिक विवाद वक्फ के अधिकारों को लेकर है। क्योंकि वक्फ एक्ट के सेक्शन 85 में इस बात पर जोर दिया गया है कि बोर्ड के फैसले को कोर्ट में चुनौती नहीं दी जा सकती है।वक्फ बोर्ड अपनी विशाल संपत्तियों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। बढ़ती कानूनी लड़ाइयां, धाराओं की हार की जंग, आंतरिक अराजकता और राजनीतिक गर्माहट से घिरा हुआ है। अतिक्रमणकारियों और भ्रष्टाचारियों के कई आरोप लग चुके हैं। कानूनी मामलों, कर्मचारियों की भारी कमी, राजनीतिक नियुक्तियों, बड़े पैमाने पर अतिक्रमण और दुखद ध्वस्तीकरण से आंतरिक रूप से जूझ रहे। भूमि और सार्वजनिक स्थानों को वक्फ बनाकर अधिग्रहित करने का भी आरोप है। प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों पर केंद्र के विनियामक प्राधिकरण को बढ़ाकर और पहली बार वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने की अनुमति देकर कानून में महत्वपूर्ण सुधार नाम बदलकर एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास अधिनियम, 2024 करने का प्रस्ताव है। कई विपक्षी दलों ने केंद्र पर हितधारकों के साथ पर्याप्त परामर्श किए बिना विधेयक पेश करने का आरोप लगाया है, उनका दावा है कि यह मुस्लिम समुदाय के धार्मिक अधिकारों का अतिक्रमण करता है। जबकि गृह मंत्री ने इसे शीतकालीन सत्र में पास कराने की घोषणा की है ।अखिलेश यादव, केसी वेणुगोपाल और असदुद्दीन ओवैसी समेत पूरे विपक्षी दलों ने इस बिल का विरोध किया था और सरकार की नीयत पर सवाल उठाए थे । जेडी यू और टीडीपी ने इसका समर्थन किया। बिल के बारे में बताते हुए संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने तिरुचिरापल्ली के तिरुचेंथुरई गांव की कहानी बताई। हिंदू आबादी वाले 1500 साल पुराने इस गांव को ही वक्फ संपत्ति घोषित कर दिया था। इसकी जानकारी जब ग्रामीणों को हुई तो वे हैरत में पड़ गए। उन्हें समझ में नहीं आया कि उनकी हजारों साल पुरानी पैतृक संपत्ति वक्फ की प्रॉपर्टी कैसे बन गई। वक्फ बोर्ड के पास जमीन से जुड़ा सबूत नहीं था मगर गांव पर उसका मालिकाना हक था।

सुनील बादल
कार्यकारी संपादक

अमझरिया में आठ दिवसीय बाबा नाम केवलम अखंड कीर्तन शुरू

नवीन मेल संवाददाता

चंदवा। एनएच 75 रांची-चतरा मुख्य पथ पर अमझरिया आश्रम में मंगलवार को 1 से 8 अक्टूबर तक आठ दिवसीय बाबा नाम केवलम अखंड कीर्तन की शुरूआत आनंद मार्ग प्रचारक संघ के श्रद्धेय पुरोधा प्रमुख आचार्य विश्वदेवानंद अवधूत के द्वारा आरंभ हुआ। इस अवसर पर नारायण सेवा,पौधारोपण, वस्त्र वितरण एवं अन्य तरह के सेवा मूलक कार्य भी किए गए। आनंद मार्ग प्रचारक संघ ने यह घोषणा की है कि लातेहार जिला का अमझरिया कीर्तन नगर के नाम से जाना जाएगा जो पूरे विश्व के आकर्षण का केंद्र बनेगा। आनंद मार्ग पूरे विश्व के 180 देश में फैला है, जिसमें भक्त निरंतर आध्यात्मिक जागरण के लिए काम कर रहे हैं। लगभग 180 देश से आनंदमार्गी यहां कीर्तन करने आएंगे। आनंद मार्ग के संस्थापक भगवान श्री श्री आनंदमूर्ति जी ने 8 अक्टूबर के दिन ही 1970 को श्री श्री आनन्दमूर्ति जी ने लातेहार जिला के अमझरिया में मानवता के कल्याण हेतु सिद्ध महामंत्र बाबा नाम केवलम कीर्तन प्रदान कर भक्तों के लिए अहेतु की कृपा किए। भक्तों को संबोधित करते हुए आनंद मार्ग प्रचारक संघ के श्रद्धेय पुरोधा प्रमुख आचार्य विश्वदेवानंद अवधूत ने अपने आध्यात्मिक उद्बोधन में भक्तों के जीवन का लक्ष्य विषय पर बताते हुए कहा कि शास्त्रों में तो मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग बताए गए हैं। ज्ञान ,कर्म और भक्ति। बाबा श्री श्री आनंदमूर्ति जी ने इसे खंडन करते हुए कहा कि भक्ति पथ नहीं है, बल्कि भक्ति लक्ष्य है। जिसे हमें प्राप्त करना है। साधारणतः लोग ज्ञान और कर्म के साथ भक्ति को भी पथ या मार्ग ही मानते हैं, परंतु ऐसा नहीं है।मौके पर बड़ी संख्या मे ग्रामीण मौजूद थे।

उपायुक्त ने 85 वर्ष से अधिक उम्र के मतदाताओं को किया सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

अंतरराष्ट्रीय वृद्ध व्यक्ति दिवस के अवसर मंगलवार को जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण के द्वारा सदर प्रखंड के रामपुर गांव पहुंचकर 85 वर्ष से अधिक उम्र के मतदाताओं को शॉल ओढ़ाकर एवं बुके देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले मतदाताओं में सहानुस साहू (102 वर्ष), हरिचरण साहू (87 वर्ष) और लालधर साहू (87 वर्ष) शामिल हैं। उपायुक्त ने तीनों मतदाताओं से उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली और बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा अब 85 वर्ष से अधिक उम्र के मतदाताओं को होम वोटिंग की सुविधा दी जा रही है। आप आगामी निर्वाचन में अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य रूप करें। मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी धीरज ठाकुर, अंचल अधिकारी आशुतोष कुमार, निर्वाचन कार्यालय के कर्मीगण व ग्रामीण उपस्थित थे।

गांव पहुंचने पर सेना से सेवानिवृत जवान का हुआ जोरदार स्वागत

देश सेवा में 24 वर्ष गुजारने के बाद समाज सेवा में आया हूं : सुकरा उरांव

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होने पर हिरही पंचायत अंतर्गत भदुवापारा निवासी सुकरा उरांव का गांव पहुंचने पर ग्रामीणों द्वारा बाजे गाजे के साथ स्वागत किया।भदूवापारा चौक से घर तक इंडियन आर्मी सुकरा उरांव की आगवानी तमाम युवक, युवतियों,बड़े बुजुर्गों के द्वारा किया गया। ऐसा स्वागत देखकर सेवानिवृत जवान सुकरा उरांव ने कहा कि हमारा गांव छोटा जरूर है, परंतु गांव वालों का दिल काफी बड़ा है। सबों ने मेरे सेवानिवृत्ति को एक उत्सव के रूप में मनाया है यह मुझे ताउम्र याद रहेगा ।जब मैं देश सेवा के लिए आज से सन 2000 ई0 में गया था ,24 वर्ष की सेवा के पश्चात इतना स्वागत मिला, आज का यह दिन मेरे लिए काफी यादगार रहेगा। मैं ईमानदारी से हमेशा अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन किया हूं ।अब गांव के लोगों के कार्य करंगा। युवा शक्ति में भटकाव नहीं हो, देश हित में युवा शक्ति कार्य करें इसके लिए भी नवयुवकों को मार्गदर्शन देने का प्रयत्न करूंगा ।सभी युवा पढ़े लिखे और रोजगार प्राप्त करें तभी गांव और समाज का विकास होगा ।मौके पर पंचायत समिति सदस्य फूलमनी उरांव , बबलू उरांव,तेतरा उरांव,मनोज उरांव ,सुनील उरांव , सुदीप उरांव, अमेरिकन लोहरा,बीरबल उरांव, विद्यालय विकास प्रबंधन समिति भदुवापारा अध्यक्ष सुनील उरांव समेत काफी संख्या में महिलाएं एवं बुजुर्ग उपस्थित थे।

इग्नू में नामांकन की तिथि 15 अक्टूबर तक बढ़ी

लोहरदगा। बलदेव साहु महाविद्यालय, लोहरदगा स्थित इग्नू स्टडी सेन्टर में जुलाई 2024 शैक्षिक सत्र में सभी स्नातक, स्नातकोत्तर, पीजी डिप्लोमा, डिप्लोमा (सेमेस्टर आधारित सर्टिफिकेट कार्यकमों को छोड़कर) में ऑनलाइन मोड और ओडीएल मोड दोनों के लिए नामांकन की अंतिम तिथि 20 सितम्बर से बढ़ाकर 15 अक्टूबर तक कर दी गई है। इच्छुक विद्यार्थी ऑनलाइन के माध्यम से नामांकन ले सकते हैं। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को स्नातक सामान्य, बीकॉम सामान्य और बीएससी सामान्य में निःशुल्क नामांकन दिया जा रहा है। ज्ञात हो कि इग्नू स्टडी सेन्टर, लोहरदगा में बी ए इतिहास, राजनीति विज्ञान, हिन्दी, सोसियोलॉजी, संस्कृत, उर्दू सहित सभी विषयों में ऑनर्स की पढ़ाई होती है। एमए में हिन्दी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, रूलर डेवलेप्मेंट आदि की पढ़ाई होती है। अधिक जानकारी के लिए स्टडी सेन्टर से सम्पर्क कर सकते है।

सलगी आंगनबाड़ी केंद्र में कभी भी हो सकता है हादसा

बच्चों को आंगनबाड़ी में आने से पहले टूटकर गिरा आंगनबाड़ी की छत

नवीन मेल संवाददाता। कुडू

प्रखण्ड के पंचायत सलगी के आंगनबाड़ी केंद्र संख्या (1) का स्थिति इतना खराब हो गया है कि वहां बच्चों को कभी भी हादसा हो सकती है। यह आंगनबाड़ी की जर्जर स्थिति से सभी हैं परेशान। यह कभी भी टूट के गिर सकता है और बच्चों को हादसा हो सकता है। आज बरसों से इस आंगनबाड़ी केंद्र के विषय में चर्चा किया जा रहा है लेकिन अभी तक इस आंगनवाड़ी का न तो मरम्मती हुआ है ना इसका जगह में नया आंगनबाड़ी दिया गया है और इस आंगनबाड़ी केंद्र में मासूम बच्चे लगभग 30 बच्चे पढ़ने आते हैं। स्थिति को देखते हुए लगता है बच्चों के साथ खिलवाड़ किया जा

रहा है। यदि अगर यह छोटे-छोटे बच्चों के ऊपर हादसा हो जाए तो इसका जिम्मेवार कौन हादसा होने के बाद यही कहेगा लोग कि उस आंगनबाड़ी में पढ़ना नहीं था। लेकिन अभी तक इस आंगनबाड़ी के विषय में कोई विचार नहीं किया गया है। आंगनबाड़ी कहां चलाया जाए या आंगनबाड़ी नया दिया जाए या यही आंगनबाड़ी को मरम्मती किया जाए।

अगर देखा जाए तो यह आंगनबाड़ी मरूमती के लायक नहीं है। इसके जगह में नया आंगनबाड़ी होना चाहिए क्योंकि माताएं का भी एक आस्था वही है और बच्चा कि पढ़ाई शुरू यहीं से सुरू होता है। इसलिए इस आंगनबाड़ी केंद्र को जांच के उपरांत नया आंगनबाड़ी केंद्र दिया जाए। ताकि बच्चों के साथ एवं हमारे माताएं बहने के साथ कभी भी बड़ा हादसा ना हो। आज 10 वर्ष से आंगनबाड़ी के लिए जनता और आंगनबाड़ी सेविका परेशान है लेकिन अभी तक इस आंगनवाड़ी के विषय में कोई सुनवाई नहीं किया गया है।

गांधी जयंती पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

स्वामी करपात्री सेवन स्टार्स अकादमी मसमानो विद्यालय परिसर में गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में छात्र - छात्राओं के द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। प्रतियोगिता की शुरूआत विद्यालय के प्रधानाचार्य नंदन अग्रवाल ने गाँधी जी को माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्वलन कर किया। तत्पश्चात उन्होंने महात्मा गाँधी जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहे की गाँधी जी सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे।

उन्होंने आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करते जिसके कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने अपना सारा जीवन खादी वस्त्र में ही गुजारे। अंततः उन्होंने अंग्रेजों से लड़ कर आजादी दिलायी। क्विज प्रीतियोगिता में कुल 20 भैया - बहनों ने भाग लिया। जिसमें लड़कियों में प्रथम आंचल कुमारी, द्वितीय लक्ष्मी कुमारी एवं तृतीय माही कुमारी और नीतू कुमारी तथा सांत्वना स्थान

रूपा कुमारी ने प्राप्त की वहीं लड़कों में प्रथम स्थान कनिष्क कुमार, द्वितीय थानेश्वर प्रसाद एवं तृतीय स्थान रोहित महतो ने प्राप्त किया। सभी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकों द्वारा पुरुस्कृत किया गया। पुरस्कार पाकर सभी बच्चे खुशी से झूम उठे। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य नंदन अग्रवाल, संतोष उरांव, जीवन साहू, कंचना सरोज, काजल कुमारी , पूजा कुमारी, सुषमा देवी, निशा कुमारी, निधी कुमारी एवं सभी भैया - बहन उपस्थित थे।

सरकार से संचालित विकास योजनाओं को जनहित के लिए धरातल पर लागू करें : प्रमुख

सेन्हा-लोहरदगा। प्रखंड कार्यालय स्थित सभागार में प्रमुख की अध्यक्षता में पंचायत समिति का बैठक आयोजित किया गया.आयोजित बैठक में सभी विभागों की समीक्षा की गई। पूर्व की बैठक में पारित प्रस्ताव पर चर्चा करते हुए प्रतिवेदन लिया गया।बैठक में बिजली,शिक्षा,महिला एवं बाल विकास,कल्याण,अबुवा आवास,मनरेगा,पशुपालन विभाग सहित अन्य विभागों के पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए प्रमुख फुलझरी देवी ने कहा कि जनहित में हो रहे विकास कार्यो का शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया गया।तथा प्रखंड विकास पदाधिकारी को निर्देश देते हुए कहा गया।की सरकार द्वारा संचालित विकास योजनाओं को जनहित का लाभ के लिये धरातल पर लागू करने का निर्देश दिया गया।

दुर्गा पूजा समितियों के अध्यक्ष, सचिव व स्वयंसेवकों के साथ जिला प्रशासन की बैठक हुई

असामाजिक तत्वों की पहचान करेंगे स्वयंसेवक : अपर समाहर्ता

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

दुर्गा पूजा को लेकर सभी दुर्गा पूजा समितियों के अध्यक्ष, सचिव व स्वयंसेवकों के साथ आवश्यक बैठक का आयोजन नगर भवन, लोहरदगा में किया गया। बैठक में अपर समाहर्ता जीतेंद्र मुण्डा ने कहा कि बीते वर्षों की तरह ही इस वर्ष भी दुर्गा पूजा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। जिला प्रशासन की ओर से पूरी चौकसी इस दौरान रहेगी और लोगों की असुविधाओं को दूर किया जाएगा। जिला में लगभग प्रत्येक गांव में देवी मां की पूजा सदियों से होती रही है और लोग उसमें सम्मिलित होते रहे हैं। अपर समाहर्ता ने कहा कि पूजा पण्डालों में तैनात स्वयंसेवक अपनी जिम्मेवारी तत्परता से कार्य करें। स्वयंसेवक निःस्वार्थ भावना से कार्य करते रहे हैं। उनकी तत्परता और सेवा की भावना से ही पूजा संपन्न हो पाती है। जिला में नियंत्रण कक्ष स्थापित है जो पूजा के दौरान भी सक्रिय रहेगा। पण्डालों में दण्डाधिकारी और पुलिस पदाधिकारी भी अपनी ड्यूटी निभाएंगे और पूजा समितियों के संपर्क में रहेंगे। असामाजिक तत्वों की पहचान स्वयंसेवक करेंगे। प्रशासनिक शिथिलता कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पूजा के दौरान विघ्न डालने वालों को नहीं बख्शा जाएगा। पूजा पण्डालों में आग लगने या शॉर्ट सर्किट की घटना से बचाव के लिए आवश्यक उपकरण अवश्य रखें। बालू से भरी बाल्टी का उपयोग भी ऐसे समय में किया जा सकता है। बड़े पण्डालों का ऑडिट भी कराया जाएगा। डीएसपी मुख्यालय समीर कुमार तिर्की ने कहा कि पूजा पण्डालों में सभी समितियों श्रद्धालुओं के लिए अलग-अलग प्रवेश व निकास द्वार की व्यवस्था रखेंगे।

नवरात्र के प्रथम दिन भव्य कलश शोभा यात्रा निकाली जाएगी : मिथुन तमेड़ा

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

केन्द्रीय दुर्गा पूजा समिति के महामंत्री मिथुन तमेड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति लोहरदगा के द्वारा भव्य कलश शोभा यात्रा देवीमंडप पावरगंज से सोमवार बाजार, शास्त्री चौक होते हुए ठाकुरबाड़ी मंदिर तक निकाली जाएगी। कलश स्थापना कर अगले नौ दिनों तक ठाकुर बड़ी मंदिर के प्रांगण में नवाह्न पारायण पाठ का आयोजन किया जाएगा। शोभा यात्रा में शहर के हजारों माता के भक्तगण और श्रद्धालु हाथों में ध्वजा ले कर शामिल होंगे। ढोल नगाड़े और माता के जयघोष से मां दुर्गा का आह्वान किया जाएगा। जगह जगह पुष्प वर्षा कर भक्तों के स्वागत और अभिनंदन की व्यवस्था की जा रही है। केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष इंद्रजीत लकड़ा ने दुर्गा पूजा की शुभकामना देते हुए कहा कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हम सभी को आपस में मिलजुल कर पूरे उत्साह और उमंग के साथ दुर्गा पूजा मनाना है। अध्यक्ष ने सभी लोगों से अपील की सभी तन, मन, धन से केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति को अपना सहयोग दें और सभी कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का हुआ भव्य स्वागत

सनातन धर्म व संस्कृति को आगे बढ़ाने का करेंगे कार्य : सुनील

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

जय श्री राम समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष समेत अन्य सदस्यों का भव्य स्वागत किया गया। जानकारी के अनुसार किस्को प्रखंड के अरेया, चरहू में जय श्रीराम समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारीयो का समिति सदस्यों ने भव्य स्वागत किया। ज्ञात हो की 22 सितंबर को वोटिंग के माध्यम से चुनाव किया गया था। मौके पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुनील अग्रवाल ने कहा तन मन और धन से समिति को बढ़ाने का संकल्प ले चुका हूं हमारा जितना प्रयास होगा हम उतना करेंगे ' 24 घंटा सनातन धर्म

के लिए सेवा देने के लिए तैयार हूं। नवनिर्वाचित महामंत्री प्रदीप साहू ने कहा लोगों का प्यार और विश्वास का ही फल है कि आज मैं इस पद पर निर्वाचित हुआ हूं। पूर्व में समिति के लिए जो कार्य किया उस कार्य का फल आज मुझे मिला ' इसके लिए हम सब आप सभी का आभार प्रकट करता हूं ' मौके पर जीवन महतो, विवेकानंद पाल सिंह, जीवन प्रजापति, शैलेन्द्र प्रजापति, संदीप साहु, राजेश प्रजापति, श्यामनंदन प्रजापति, दिलीप साहु, रवि साहु, नितेश प्रजापति, संदीप प्रजापति,पवन प्रजापति, विश्वनाथ प्रजापति,बंटी साहु,बजरंग साहु, राजेश साहू आनंद साहू रामविलास साहू सूरज साहू चंदन साहू, निरूद उरांव, लिल्मन उरांव, मनीष साहू, नवल किशोर, शिव नंदन पांडे, गुड्डी महली, संतोष साहू, सुरेश साहू, बाल कृष्णा साहू, तिलेश्वर साहू, नारायण साहू, सरवन साहू, गोंदल साहू, दिनेश साहू, सुरेंद्र साहू, राजकुमार साहू, धनेश्वर पांडे, जीतन साहू समेत काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

जमगाई के पोस्टमास्टर जमधारी उरांव का निधन

परिजनों से मिले भाजपा एसटी मोर्चा के प्रदेश महामंत्री बिंदेश्वर उरांव

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

भंडरा प्रखण्ड के ग्राम जमगाई के पोस्टमास्टर जमधारी उरांव का आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की सूचना पर भाजपा एसटी मोर्चा प्रदेश महामंत्री बिंदेश्वर उरांव ने शोकाकुल परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया। उनके परिवार को हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। सरकार से मृतक के आश्रित को नौकरी दिलाने की मांग की। इधर उनके अंतिम संस्कार में ग्रामीणों के साथ वे शामिल हुए। जानकारी के अनुसार पोस्टमास्टर जमधारी उरांव की अचानक तबियत बिगड़ गई थी जिसे एंबुलेंस की सहायता से इलाज के लिए लोहरदगा सदर

अस्पताल लाया गया। जहाँ चिकित्सको ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया। जहाँ एम्बुलेंस से रास्ते मे ले जाते ही उनका देहांत हो गया । मृतक पोस्टमास्टर अपने पीछे चार बच्चों एवम पत्नी को पीछे छोड़ गए है। आसपास के लोगो ने बताया कि पोस्टमास्टर काफी मिलनसार व्यक्ति थे। उनके असमय जाने से परिवार के समक्ष मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। एक बेटा मैट्रिक पास, एक बेटी ग्रेजुएशन कर रही है। दो बच्चे छोटे स्कूल में पढ़ रहे है । उनकी पत्नी बीना उराँव भी मैट्रिक पास है। वो इकलौता परिवार का कमाऊ व्यक्ति थे।

भूमि मापी के बाद मेले की तैयारी जोरों पर

लोहरदगा। केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति के द्वारा मेले में भूमि मापन के बाद मेले की तैयारी जोर शोर से की जा रही है केंद्रीय पूजा समिति के अध्यक्ष संतोष लकड़ा की अगुवाई में पूजा समिति के सभी सदस्यों ने आज मेला स्थल जाकर जेसीबी की सहायता से भूमि समतलीकरण और मेला स्थल तक पहुंचने वाले सड़क और मेला स्थल की भूमि का समतलिकरण कराया जिससे की मेले में आने वाले और मेले में दुकान लगाने वाले लोगों को कठिनाई का सामना ना करना पड़े। अध्यक्ष संतोष लकड़ा ने कहा की केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति अपने दायित्व को पूरी तन्मयता के साथ पूरी करेंगी ताकि माता रानी के श्रद्धालुओं और रावण दहन के कार्यक्रम जोकि मेले में संपन्न होती है अच्छी तरह संपन्न हो।

भैया-बहनों ने दी प्रतिभा खोज एवं प्रतिभा चयन की परीक्षा

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

शीला अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर लोहरदगा में विद्या भारती प्रतिभा खोज-चयन परीक्षा मंगलवार को आयोजित हुई। इसमें उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी मुख्य परीक्षा में शामिल होंगे। प्रतिभा खोज में 525विद्यार्थी व प्रतिभा चयन में 25 विद्यार्थी शामिल हुए। प्रभारी प्रधानाचार्य श्यामसुंदर कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस प्रकार की परीक्षाओं से विद्यार्थियों में प्रतिभा का विकास होता है। वे जीवन में आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम होते हैं। भैया बहन के अंदर रुचि पैदा करने का एक जरिया है। जिससे उनके अंदर कोई भी झिझक नहीं होगी ।वह हर परीक्षा के लिए तैयार रहेंगे। प्रांतीय मुख्य परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पांच हजार रूपए की पुरस्कार राशि प्राप्त होती है। इस अवसर पर विद्यालय

के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं और विद्यार्थी मौजूद थे।

व्यवहार न्यायालय में स्वच्छता ही सेवा के तहत स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

सिविल कोर्ट परिसर में 1 अक्तूबर 2024 को स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में डालसा अध्यक्ष सह पीडीजे राजकमल मिश्रा, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय श्री सुभाष, एडीजे प्रथम अखिलेश कुमार तिवारी, एडीजे द्वितीय नीरजा आसरी, वरीय सिविल जज अर्चना कुमारी, सीजेएम सह एसीजेएम सिविल जज सीनियर डिविजन द्वितीय कृष्ण कांत मिश्रा, डालसा सचिव राजेश कुमार, एसडीजेएम अमित कुमार गुप्ता, न्यायिक मजिस्ट्रेट जया स्मिता कुजूर सहित न्यायालय कर्मी, पीएलवी उपस्थित रहे। वहीं नगर परिषद के सहयोग से सभी न्यायिक पदाधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा न्यायालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। वहीं कार्यक्रम की जानकारी देते हुए डालसा सचिव ने बताया कि भारत सरकार द्वारा स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा चलाया जा रहा है।

एसडीओ ने 100+मतदाता जुबेदा खातून को अंगवस्त्र, पौधा व फल देकर सम्मानित किया

नवीन मेल संवाददाता। भंडरा

अनुमंडल पदाधिकारी अमित कुमार व सीओ दुर्गा कुमार ने मंगलवार को लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र प्रखंड के अकाशी पंचायत के बंडा गांव निवासी सौ प्लस मतदाता जुबेदा खातून को अंगवस्त्र पौधा व फल देकर सम्मानित किया. मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी अमित कुमार ने कहा कि देश की प्रगति के लिए प्रत्येक मतदाता का योगदान होता है। सौ प्लस के मतदाता को सम्मानित कर वोट के लिये प्रेरित किया जा रहा है. सभी मतदाताओं को मत का निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से प्रयोग करना चाहिए। व्यक्ति को अपने नाम का मतदाता सूची में शामिल होने या न होने की जानकारी होनी चाहिए। मतदाता सूची में शामिल व्यक्ति ही अपने मत का प्रयोग कर सकता है। उन्होने कहा कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में किसी भी व्यक्ति को अपने मत का प्रयोग सुविधानुसार करने का अधिकार है। कोई भी व्यक्ति सहजता से अपने वोट को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित कर सकता है। उन्होंने कहा कि मतदाता को पहचान पत्र बनाने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। इधर विशुनपुर विधानसभा क्षेत्र के बेदाल बूथ नंबर 87 के सौ प्लस मतदाता दौलत देवी को बीडीओ प्रतिमा कुमारी ने सम्मानित किया. इस मौके पर मुखिया बीतनी उरांव, ममता कुमारी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

35वीं प्रांतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी हुए सम्मानित

प्रांतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता : 3 स्वर्ण, 6 रजत व 5 कांस्य पदक जीते

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

मनोहर लाल अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर महाविद्यालय में वंदना सभा में 35 वां प्रांतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के विजेता भैया-बहन को सम्मानित किया गयो इस प्रतियोगिता में तीन भैया-बहनों ने स्वर्ण पदक, छः भैया-बहनों ने रजत पदक और पांच भैया-बहनों ने कांस्य पदक पर कब्जा कियो विजेता प्रतिभागी में भैया सोनू ने उरांव 100 मीटर व 200 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान और लंबी कूद में द्वितीय स्थान, भैया नैतिक राज ने गोला फेंक में प्रथम स्थान, नैंसी उरांव ने 3000 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान, आकांक्षा पांडे ने गोला फेंक व तार गोला फेंक में द्वितीय स्थान, अल्पना शैली उरांव ने 400 मीटर बाधा दौड़ व भाला फेंक में द्वितीय स्थान, रेशमी कुमारी ने 400 मीटर दौड़ और चक्का फेंक में तृतीय स्थान, हेमा उरांव ने 3000 मीटर तेज चाल, अंकित उरांव ने 5000 मीटर तेज चाल, 4100 मीटर रिले में आशीष लकड़ा, अमन टोप्पो, पवन उरांव, अंकित उरांव व सोनू उरांव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सभी विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार भेंट कर सम्मानित किया गया। सभी भैया-बहनों का मुंह मीठा किया गया। महाविद्यालय की खेलकूद प्रमुख यशोदा कुमारी ने कहा कि महाविद्यालय के लिए यह गौरव का पल है, भैया-बहनों की कड़ी मेहनत के पश्चात ही यह उपलब्धि महाविद्यालय को प्राप्त हुई है। उन्होंने स्वर्ण व रजत पदक प्राप्त करने वाले भैया-बहनों को क्षेत्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में प्रीति कुमारी गुप्ता, रेणु कुमारी, रश्मि साहू, ऋद्धि मिश्रा, सनोज कुमार साहू, नीतू कुमारी, रितेश कुमार पाठक, आरती भगत सहित आचार्य, दीदी जी व भैया-बहन उपस्थित थे।

महाविद्यालय में महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती आयोजित

मनोहर लाल अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर महाविद्यालय लोहरदगा में महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाई गईं जयंती के अवसर पर सभी आचार्य दीदी जी के द्वारा महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन और पुष्पार्चन किया गयो महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री से संबंधित डॉक्यूमेंट्री फिल्म भैया-बहनों को दिखाई गई।

एथलेटिक्स में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी सम्मानित

लोहरदगा। चाईबासा में आयोजित 35 वां प्रांतीय खेलकूद समारोह 2024 पद्मावती जैन सरस्वती शिशु मंदिर में आयोजित एथलेटिक्स प्रतियोगिता में शीला अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर लोहरदगा के भैया ने कई स्पधाओं में ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। सफल भैया विद्यालय एवं जिला का नाम रौशन किया। उनके उत्साहवर्धन और प्रोत्साहन के लिए विद्यालय में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाचार्य श्यामसुंदर कुमार ,शारीरिक शिक्षक जोधन सिंह, राजीव कुमार ,दिनेश प्रसाद,विष्णुदत्त पांडे की उपस्थिति में प्रमाण पत्र व पदक देकर सम्मानित किया गया। बाल वर्ग भैया विशाल 100 मीटर में तृतीय एवं ऊंची कूद में प्रथम स्थान, भैया आकाश 600 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एक नजर

वाहिनी दुर्गा अष्टमी पर निकालेगी शोभायात्रा

गुमला। आगामी दुर्गा अष्टमी को लेकर बैठक हुई। इसमें 4 अक्टूबर दिन शुक्रवार स्थान सरस्वती शिशु मंदिर समय 3:00 बजे से दुर्गा वाहिनी के द्वारा शोभायात्रा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी निकाली जाएगी। बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित हुए विभाग मंत्री केशव चंद्र साइ जी विभाग सह मंत्री मनोज कुमार वर्मा जी जिला उपाध्यक्ष श्री पूनम सिंह जी मातृ शक्ति प्रमुख शैल सिंह जी कोषाध्यक्ष किशोरी प्रसाद जी दुर्गा वाहिनी सहसंयोजीका लक्ष्मी कुमारी प्रखंड संयोजिका केसरी, रविता पाठक मनीषा कुमारी, यशराज सिंह, सहसंयोजक मनीष लायन, घाघरा मातृ शक्ति प्रमुख निधि देवी पालकोट प्रखंड संयोग रूपा केसरी, मीडिया प्रभारी रोहित खंडेलवाल उपस्थित थे।

नेशनल वॉलंटरी ब्लड डोनेशन डे पर मारवाड़ी युवा मंच को किया गया सम्मानित

गुमला। नेशनल वॉलंटरी ब्लड डोनेशन डे 2024 के अवसर पर स्थानीय सदर अस्पताल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मारवाड़ी युवा मंच, गुमला शाखा को ब्लड डोनेशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। मंच को सिविल सर्जन डॉ. नवल कुमार और जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ. गणेश राम द्वारा प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो देकर सम्मान प्रदान किया गया। इस विशेष अवसर पर मंच के सचिव संजीव मालानी और रक्तदान प्रभारी रोहित खंडेलवाल भी उपस्थित थे। मारवाड़ी युवा मंच द्वारा रक्तदान अभियान में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान को लेकर उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया, जिससे क्षेत्र में स्वैच्छिक रक्तदान को और बढ़ावा मिलेगा।

चैनपुर थाना परिसर में दुर्गा पुजा को लेकर हुई बैठक

सोशल मीडिया में महौल बिगड़ने पर होगी कड़ी करवाई : थाना प्रभारी

नवीन मेल संवाददाता। चैनपुर

चैनपुर थाना परिसर में मंगलवार को दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रखण्ड विकास पदाधिकारी यादव बैठा, अंचल अधिकारी दिनेश कुमार एवं थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी की अध्यक्षता में किया गया। वहीं आगामी दुर्गा पूजा एकम से लेकर विजयादशमी तक पूजा का आयोजन किया जायेगा जिसे लेकर बैठक को संबोधित करते हुए। चैनपुर बीडीओ यादव बैठा ने कहा कि हम सभी क्षेत्र वासियों का त्योहार है,जिस तरह पुर्व में सभी त्योहारों को एक जुट होकर एक दूसरे का सहयोग कर त्योहार मनाते आए हैं। उसी प्रकार आगे भी सहयोग करते रहें। सभी लोग आपसी एकता और सौहार्द पूर्वक त्योहार को मनाएं। वहीं थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी ने कहा

कि आगामी पर्व के मद्देनजर किसी को कहीं भी किसी प्रकार की सूचना मिले तो वे इसकी जानकारी प्रशासन को दें। शांति व्यवस्था रखने में प्रशासन का सभी सहयोग करें अफवाहों पर ध्यान नहीं दें। आपसी भाइचारे के साथ त्योहार मनाएं अगर कोई भ्रामक सामग्री सोशल मिडिया में भेजकर माहौल बिगाड़ने का या किसी प्रकार का अफवाह फैलाने का प्रयास करता है और माहौल बिगाड़ता है तो उसके साथ सख्ती से कार्यवाई की जाएगी माहौल बिगाड़ने की इजाजत किसी को नही है।सीओ दिनेश कुमार ने कहा कि दुर्गा पुजा आगामी दिनों आने वाला है आप सभी को आने वाले पर्व की शुभकामनाएं एवं धन्यवाद देते हैं पर्व को शांति और सौहार्द पूर्ण तरीके से मनाए। मौके पर बीडीओ यादव बैठा, सीओ दिनेश कुमार,थाना प्रभारी कुंदन चौधरी, पु.अ.नि.दिनेश कुमार,ललन कुमार, अशोक कुमार,सभी पंचायत के मुखिया गन, उप प्रमुख प्रमोद खलखो, जावेद खाना, यमुना केशरी, सत्यम कुमार, मनोज कुमार, अरविंद मौर्य,नवीन कुमार, मौ०अफरोज आलम, इस्तियाक खान,सहित शान्ति समिति के लोग मौजूद है।

राशन में कटौती की शिकायत पर हुई कार्रवाई, डीलर की मनमानी उजागर

नवीन मेल संवाददाता।
बिशुनपुर (गुमला)

महामाया महिला मंडल के राशन डीलर द्वारा लाभुकों को कम राशन दिए जाने की शिकायत पर प्रखंड प्रमुख राजलक्ष्मी उरांव और उप प्रमुख चंदन कुमार सिंह ने सोमवार को कार्रवाई की। शिकायत के बाद एजीएम बालचंद उरांव के साथ जनप्रतिनिधि राशन दुकान पहुंचे, जहां वितरण के दौरान राशन की मात्रा कम पाई गई।

जांच में देवनाथ उरांव को 35 केजी के बजाय 29 केजी, रिसा उरांव को 40 केजी के बजाय 33 केजी, बसंती खेरवारीन को 15 केजी के बजाय 12 केजी, और अरविंद खेरवार को 30 केजी के बजाय 25 केजी राशन दिया गया था। प्रमुख और उप प्रमुख ने डीलर की मनमानी पर कड़ी नाराजगी जताई और कहा कि गरीबों के राशन में कटौती बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने डीलर को फटकार

लगाते हुए कहा कि राशन वितरण के लिए अलग और अंगूठा लगाने के लिए अलग वेट मशीन का इस्तेमाल करना गलत है। उन्होंने सभी डीलरों को चेतावनी दी कि राशन का वितरण अंगूठा लेने के साथ ही किया जाए, अन्यथा कठोर कार्रवाई की जाएगी।

राशन में कटौती कैसे पकड़ी गई: जनप्रतिनिधियों को संदेह हुआ जब डीलर की मशीन से 35 केजी राशन का वजन कम आया। पड़ोस के दुकानदार से एक दूसरी वेट मशीन मंगाकर वजन जांचा गया, तो वास्तविक वजन और भी कम पाया गया। डीलर ने मशीन खराब होने का

न्यूज बॉक्स

बिना फारेस्ट परमिट के खनिजों की ढुलाई पर वन विभाग सख्त, एक ट्रक पकड़ाया

गुमला। लोहरदगा गुमला वन क्षेत्र अंतर्गत अवैध रूप से बिना फारेस्ट परमिट के खनिजो के परिवहन को लेकर वन विभाग सक्रिय रूप से कार्रवाई में जुट गई है। इसके तहत दो दिन पूर्व लोहरदगा वन क्षेत्र अंतर्गत वन विभाग के बनारी चेकपोस्ट पर बिना फारेस्ट परमिट के खनिज का परिवहन करते एक बॉक्साइट ट्रक नम्बर जेएच 05 एएन 5485 को वन विभाग ने जब्त किया है। जब्त किए गए ट्रक में बीएन महेंद्रू अमतिपानी का चालान थी जिसमें लगभग 12.450 एमटी बॉक्साइट लोड थी। यह गाड़ी लोहरदगा कुजरा साइडिंग में अनलोड होने जा रही थी। वन विभाग के सूत्रों ने बताया कि बिना फारेस्ट परमिट के बॉक्साइट ट्रक का परिचालन की गुप्त सूचना मिली थी। जिसपर कार्रवाई करते हुए एक ट्रक को पकड़ा गया है। पकड़े गए ट्रक में बॉक्साइट लोड था। जबकि इस गाड़ी में फारेस्ट परमिट नही थी। इसलिए इस गाड़ी को जब्त किया गया है। इस गाड़ी से भारतीय वन अधिनियम 1927,(बिहार संशोधन 1989) की धारा 42 के अंतर्गत बॉक्साइट परिवहन किया जा रहा था वो अवैध था। इसपर वन अधिनियम के तहत कानूनी कार्रवाई किया जाएगा।

अवैध खनन और भूमि अतिक्रमण पर प्रशासन की बड़ी कारवाई, 55 लाख घनफिट बालू जब्त

सिसई (गुमला)। सिसई थाना क्षेत्र में अवैध खनन और भूमि अतिक्रमण के मामले पर प्रशासन ने बड़ी कारवाई की है। इस दौरान मौजा -पोडहा पाहनटोली, सिलाफरी, और मुर्गु स्थित कई क्षेत्रों में अवैध खनन और भूमि पर अतिक्रमण की। सूचना मिलने पर अंचल अधिकारी सिसई, पुलिस बल, अंचल निरीक्षक सिसई, एवं जिला खनन पदाधिकारी के द्वारा संयुक्त रूप से अवैध बालू उत्खनन एवं परिवहन की रोकथाम हेतु औचक छापेमारी की गई। इस दौरान पोडहा पाहनटोली, रेडवा पंचायत स्थित कोयल नदी के पास 3.47 एकड़ भूमि पर अवैध रूप से करीब 55,00,000 (55) लाख घनफिट बालू का भंडारण पाया गया। दोषियों में स्थानीय व्यक्तियों के साथ-साथ ठेकेदारों के नाम भी शामिल हैं। जो इस अवैध गतिविधि में संलिप्त हैं। इस अवैध खनन और अतिक्रमण में संलिप्त लोगों में तुलसी साहू, रमेश साहू, रामवतार साहू, मांजो खड़िया, माडो साहू, पप्पु साहू, तारकेश्वर साहू, कृष्णा साहू, भीखम साहू, फुलचंद् साहू, महावीर साहू, और अन्य लोग भी शामिल हैं।

फुटबॉल टूर्नामेंट का हुआ समापन, झड़गांव टीम ने मारी बाजी

चैनपुर। चैनपुर प्रखंड मुख्यालय में देर शाम सोमवार को लूथरन मैदान चैनपुर में आजसू पार्टी पांच दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्यातिथि के रूप में माननीय केन्द्रीय सचिव सह गुमला विधानसभा प्रभारी बोनीफास कुजूर और विशिष्ट अतिथि जिला अध्यक्ष दिलीप नाथ साहू,उपाध्यक्ष देवी सिंह,राहत अफजा, विशिष्ट अतिथि थाना प्रभारी कुंदन चौधरी का आगमन हुआ। वहीं गुमला विधानसभा क्षेत्र से सभी प्रखंडों से लगभग 80 की संख्या में टीम भाग लिए। जिसमें विजेता टीम झड़गांव को 21000/+खस्सी और और उपविजेता टीम परमवीर अल्बर्टा का मेमोरियल कॉलेज चैनपुर 15000/+खस्सी बाजी मारी और तीसरा चौथा प्राइस के लिए बम्हनी और मालम को 1+1 खस्सी दिया गया । और बाकी हारे हुए तमाम टीमों को सांत्वना पुरस्कार भी दिया गया। इसी बीच गुमला विधानसभा प्रभारी बोनीफास कुजूर के द्वारा कहा गया की हम युवाओं को जोड़कर कंधा से कंधा मिलाकर काम करने एवं चैनपुर अनुमंडल क्षेत्र में एक अच्छा सा स्टेडियम हो इस पर प्रकाश डाला गया ।

बैंक ऑफ इंडिया में बच्ची हुई बेहोश, मची अफरातफरी

गुमला। चैनपुर प्रखंड मुख्यालय स्थित बैंक ऑफ इंडिया में काफी भीड़ होने के कारण एक महिला हुई बेहोश। आए दिन बैंक में केवाईसी को लेकर बैंक में काफी भीड़ होती है अधिकांश देखा गया है कि आदिम जनजाति परिवार , गर्भवती,महिला,वृद्ध व्यक्ति,पेंशनधारी तथा स्कूली बच्चे का केवाईसी को लेक काफी भीड़ नजर आई है। दो तरह चाहे व्यक्ति भूखे प्यासे बैंक में खड़े-खड़े होकर केवाईसी करना में विवास है। वही आज एक स्कूली बच्चे 17 वर्ष के जो की बैंक की केवाईसी के चक्कर में घर से भूखे पिया से निकले हुए थी जो बैंक में खड़े होकर लाइन में गिर गई वहीं ग्रामीणों की मदद से उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चैनपुर लाया गया वहीं डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार कर उसे छुट्टी दिया गया। वही बताते चलेगी कुछ वर्ष पहले एक महिला ने अपने पेट में लिए हुए हैं बच्चे रखे हुए थी जिसकी लाइन में खड़ा रहकर वह बैंक में अपनी कम कर रही थी उसी क्रम में उसके बच्चे की मौत हो गई मां ने घर जाकर देखा जो बच्ची की मौत होगी थी। पर चैनपुर बैंक ऑफ इंडिया के रवैया आज तक नहीं सुधरी। ग्रामीणों का कहना है कि चैनपुर प्रखंड में एक और बैंक की आवश्यकता है जिसे हमारे काम सुंदर ढंग से हो सके जिसे आम जनता तथा व्यापारी वर्ग को कोई परेशानी ना उठा सकें।

गांधी जयंती पर बिशुनपुर में 40वीं कार्तिक उरांव 51 किमी साइकिल रेस का समापन

बिशुनपुर। गांधी जयंती के अवसर पर विकास भारती बिशुनपुर द्वारा आयोजित 40वीं स्व. कार्तिक उरांव 51 किलोमीटर साइकिल रेस का समापन जतरा टाना भगत स्मारक स्थल, चिंगरी में धूमधाम से हुआ। इस आयोजन के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय वनवासी कल्याण केंद्र के सह उपाध्यक्ष कृपा प्रसाद सिंह, विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत, भाजपा नेता प्रवीण सिंह, भिखारी भगत, रामप्रसाद बड़ाईक, महेंद्र भगत, और शिक्षा प्रमुख कुमकुम मैत्री सहित कई गणमान्य व्यक्ति मंच पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, और जतरा टाना भगत की तस्वीरों पर पुष्प अर्पित कर की गई। भाजपा नेता प्रवीण सिंह ने इस अवसर पर कहा कि विकास भारती द्वारा 1992 से लगातार इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करना है। यह प्रतियोगिता स्व. कार्तिक उरांव की स्मृति में आयोजित की जाती है, जो इस क्षेत्र के महान जनजातीय नेता थे। इस वर्ष साइकिल रेस नदिया, लोहरदगा से 51 किलोमीटर की दूरी तय कर सम्पन्न हुई।

चैनपुर प्रखंड कार्यालय में विस निर्वाचन की तैयारियों पर हुई समीक्षा बैठक

नवीन मेल संवाददाता। चैनपुर

चैनपुर प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में मंगलवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा की अध्यक्षता में आगामी विधानसभा निर्वाचन 2024 के तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में प्रखंड के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने बैठक में विधानसभा निर्वाचन के लिए आवश्यक तैयारियों पर चर्चा की और अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे निर्वाचन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। बैठक में मतदान केंद्रों की तैयारी, मतदाता सूची की अद्यतन, और निर्वाचन के लिए सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने कहा कि विधानसभा निर्वाचन

2024 के लिए हमें सभी आवश्यक तैयारियों को पूरा करना होगा ताकि निर्वाचन शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से संपन्न हो सके।

बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने विधानसभा निर्वाचन के लिए अपनी तैयारियों की जानकारी दी और आवश्यक निदेर्शों का पालन करने का आश्वासन दिया।

इस प्रकार, चैनपुर प्रखंड कार्यालय में विधानसभा निर्वाचन 2024 के लिए तैयारियों की समीक्षा बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई और अधिकारियों को निर्वाचन के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए।

ग्रामीणों ने बैठक कर आने वाले विस चुनाव का किया बहिष्कार

नवीन मेल संवाददाता

घाघरा (गुमला)। घाघरा थाना क्षेत्र के कास्पोडिया गांव के ग्रामीणों ने बैठक कर विधानसभा चुनाव का बहिष्कार करने का निर्णय लिया ।ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम कास्पोडिया से घाघरा गुमला मुख्य पथ तक 3 किलोमीटर सड़क काफी खराब हो चुका है । जो राहगीरों को चलने में काफी परेशानी उठाना पड़ता है सड़क की इस समस्या से जिला एवं प्रखंड प्रशासन के साथ-साथ जनप्रतिनिधियों को भी लगातार अवगत कराया जा चुका है। इसके बावजूद भी अभी तक गांव में सड़क नहीं बन सका पक्की सड़क नहीं होने के कारण ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।

उच्च शिक्षा के लिए बच्चे अपने जान जोखिम में डालकर इस रास्ते से स्कूल जाने के लिए मजबूर हैं सड़क के बीचो-बीच बड़े-बड़े गड्ढे

हैं तथा बरसात के दिनों में सड़क कीचड़ में तब्दील हो जाता है जिससे स्कूली बच्चों के साथ कभी भी अनहोनी होने की आशंका बनी रहती है ।जिसके कारण अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से डरते हैं ।

बीमार व गर्भवती महिलाओं को अस्पताल ले जाने में काफी परेशानी होती है। सड़क खराब होने के कारण बीमार वह गर्भवती महिलाओं को अस्पताल ले जाने में काफी परेशानी होती है । कई बार तो सड़क खराब होने के कारण गर्भवती महिलाओं का रास्ते में ही प्रशव भी हो चुका है । एवं रास्ता खराब होने की वजह से अस्पताल पहुंचने में देरी हो जाने से बीमार व्यक्तियों को अपनी जान तक गवानी पड़ी है । ग्रामीणों ने कहा कि सड़क की इस समस्या से जनप्रतिनिधि से लेकर प्रखंड व जिला प्रशासन सभी को बार-बार अवगत कराया जा चुका है इसके बावजूद भी सड़क नहीं बनने पर मजबूरन ग्रामीणों को वोट बहिष्कार का यह कदम उठाना पड़ रहा है।

साप्ताहिक जन शिकायत निवारण दिवस का आयोजन

उपायुक्त ने समस्याओं का किया त्वरित समाधान

गुमला। आज जिला मुख्यालय में उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में साप्ताहिक जन शिकायत निवारण दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आए नागरिकों ने अपनी समस्याएं उपायुक्त के समक्ष रखीं। उपायुक्त ने क्रमवार तरीके से सभी शिकायतों को सुना और आश्वासन दिया कि सभी शिकायतों की जल्द से जल्द जांच कराते हुए समाधान किया जाएगा। कई समस्याओं का मौके पर ही समाधान भी किया गया। रायडीह प्रखंड अंतर्गत ऊपरखटंगा पंचायत के लुरुकीणा गांव के ग्रामीणों ने सड़क, पुल-पुलिया, और विद्यालय निर्माण की मांग को लेकर आवेदन समर्पित किया। ग्रामीणों ने कहा कि यदि उनके गांव में आवश्यक सुविधाएं नहीं मिलती हैं तो वे आगामी चुनावों में वोट बहिष्कार कर सकते हैं। इस पर उपायुक्त ने स्पेशल डिवीजन को जांच कर डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए। नागफेनी स्थित लावगायी पोस्ट के निवासियों ने टोल प्लाजा के कारण स्थानीय रैयतियों के रोजगार में बाधा उत्पन्न होने की शिकायत की और टोल प्लाजा में नौकरी देने की मांग की।

चैनपुर पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान

नवीन मेल संवाददाता। चैनपुर

चैनपुर पुलिस ने मुख्यालय क के थाना चौक के समीप मंगलवार को एंटी क्राइम वहांन जांच अभियान चैनपुर थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी एव पु०अ०नी ललन कुमार के द्वारा संघन वाहन जांच अभियान चलाया गया इस दौरान दो पहिया वाहन के हेलमेट, ड्राइविंग लाइसेंस, इंश्योरेंस, पॉल्यूशन तथा कागजों का जांच की जा रही है। थाना प्रभारी कुन्दन चौधरी ने बताया की पुलिस अधिक्षक शम्भु सिंह के आदेश अनुशार सड़क सुरक्षा एव एंटी क्राइम को लेकर वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा है और आगे भी नियमित रूप से वाहन जांच अभियान चलता रहेगा। सभी वाहन चालक जब अपने घरों से निकले तो हेलमेट का प्रयोग करें एवं गाड़ी से संबंधित सभी कागजात अपने साथ रखें नशापान एव ट्रिपल राइट कर गाड़ी नं चलाएं। वहीं थाना प्रभारी के द्वारा

सभी अभिभावकों एव स्कूल के प्रधानाध्यापक से अपील की गई की वे नबालिक बच्चों को स्कूल जाने के लिए गाड़ी न दे क्योंकि आए दिन देखा जा रहा है कि कम उम्र के बच्चे सड़क हादसे का शिकार हो रहे हैं और हादसे में मौतें भी हो रही है इसलिए सभी अभिभावक को इस पर जागरूक होने की जरूरत है वहीं वाहन जांच के दौरान सभी वाहन चालकों को हेलमेट पहनकर चलने की अपील की गई इस मौके पर चैनपुर थाना प्रभारी कुंदन चौधरी सहित थाने के जवान मौजूद थे।

सुंदरनगर में भूमि का सीमांकन करने गई टीम का भारी विरोध

जमशेदपुर। सुंदरनगर थाना क्षेत्र के घसियाडीह झोपड़ी मैदान में जमीन का सीमांकन करने पहुंची टीम को ग्रामीणों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा. नौबत यहां तक पहुंच गई कि प्रशासन के खिलाफ लोग उग्र हो गए तथा पारंपरिक हथियार (तीर-धनुष) लेकर पहुंच गए। हालांकि किसी तरह मामले को शांत कराया गया।मिली जानकारी के अनुसार पुड़िहासा मौजा के घसियाडीह में खाता नंबर 80, प्लॉट नंबर 1252 कुल रकवा 3।30।56 एकड़ जमीन के सीमांकन का आदेश अंचल कार्यालय की ओर से दिया था। इसको लेकर अनुमंडल पदाधिकारी (धालभूम) ने दंडाधिकारी की मौजूदगी में सीमांकन का आदेश दिया। दंडाधिकारी के रूप में मुकेश कुमार, विशेष पदाधिकारी अक्षेस, अरविंद कुमार तिर्की एवं अंचल कार्यालय से प्रभारी सीआई कलेंद्र बेदिया, अमीन की मौजूदगी में मापी का कार्य शुरू हुआ।

बिशुनपुर में बूथ सत्यापन की तैयारियों को लेकर प्रशासनिक समीक्षा बैठक संपन्न

सत्यापन रिपोर्ट समय पर सौंपे : बीडीओ

नवीन मेल संवाददाता।
बिशुनपुर (गुमला)

आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए प्रशासनिक स्तर पर बूथ सत्यापन की तैयारियां तेज कर दी गई हैं। मंगलवार को बिशुनपुर प्रखंड कार्यालय सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी रंजीत कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में सेक्टर मजिस्ट्रेटों और सेक्टर पुलिस अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में बीडीओ ने सभी अधिकारियों को आपस में समन्वय स्थापित कर कार्य करने का निर्देश दिया, ताकि बूथों पर चुनाव के दौरान किसी भी प्रकार की समस्या न हो।

संयुक्त सत्यापन के निदेर्श

बैठक में बीडीओ ने सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारियों को संयुक्त रूप से मतदान केंद्रों का सत्यापन करने और वहां उपलब्ध सभी संसाधनों की अद्यतन

जानकारी एकत्रित करने का निर्देश दिया। इस सत्यापन में मतदान केंद्रों का नजरी नक्शा, रूट चार्ट, बिजली, पानी, रैंप, शौचालय, और भवन की स्थिति जैसी सभी सुविधाओं का मूल्यांकन करने पर जोर दिया गया।

असामाजिक तत्वों पर नजर रखने के निर्देश

बीडीओ ने यह भी निर्देश दिया कि मतदान केंद्रों के आसपास किसी भी असामाजिक तत्वों की पहचान की जाए जो चुनाव प्रक्रिया में बाधा डाल सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों के नाम, पते और मोबाइल नंबर का रिकॉर्ड तैयार कर कार्यालय में जमा करने का निर्देश दिया गया।

बीडीओ रंजीत कुमार सिन्हा ने सेक्टर मजिस्ट्रेटों से बूथ सत्यापन रिपोर्ट समय पर सौंपने की अपील की, ताकि आगामी चुनाव के लिए सभी व्यवस्थाओं को समय रहते सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने बूथों की प्रखंड मुख्यालय से दूरी और वहां तक पहुंचने के लिए सड़कों की स्थिति की जानकारी भी अद्यतन करने का निर्देश दिया।

इस बैठक में सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

लोहरदगा में भाजपा अभी भी गंभीर नहीं

पिछले चार विधानसभा चुनावों से विधायक के चेहरे की तलाश

योगी आदित्यनाथ, रवि किशन, मनोज तिवारी, भानु प्रताप, संजय सेठ में से कोई नहीं आये

राहुल कौशल

लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र में सघनु भगत पूर्व मंत्री के बाद भाजपा को चेहरे की तलाश है । 2005 में कांग्रेस से सुखदेव भगत विधायक बने,2009 में पहली बार आजसू पार्टी से कमल किशोर भगत विधायक बने 2014 में दुहराया जबकि 2019 में कांग्रेस से डॉ रामेश्वर उरांव जीते जो वर्तमान में राज्य के वित्त मंत्री भी हैं। पिछले चार विधानसभा चुनावों में भाजपा का अपना कोई चेहरा नहीं बन पाया । इस बार भी भाजपा कमजोर पड़ सकती है ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि चर्चा है कि यह सीट आजसू गठबंधन में न चली जाए। 27 सितंबर को भाजपा की परिवर्तन यात्रा में योगी आदित्यनाथ के आगमन की बात बताकर घरों तक कार्यकताओं ने अक्षत वितरण किया गया । हिमंता विस्वसर्मा और सांसद भोजपुरी स्टार रवि किशन, सांसद मनोज तिवारी और भवनाथपुर विधायक भानु प्रताप शाही,केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री व सांसद संजय सेठ और पूर्व मुख्यमंत्री व प्रदेश अध्यक्ष भाजपा बाबूलाल मरांडी के आगमन की बात कही गई। बाबूलाल मरांडी का कद झारखंड की राजनीति में बड़ा है और उनके आने से शायद भाजपा को थोड़ी राहत मिली लेकिन जब संजय सेठ भी कार्यक्रम में नहीं पहुंचे, तब भाजपा की स्थिति और भी कमजोर दिखाई देने लगी। लोहरदगा में चर्चा है कि भाजपा ने विपक्षियों को शायद वाकओवर देने का मन बना लिया है ।

घरेलू गैस सिलेंडर का पाइप लीक होने से घर में लगी आग

अग्निशमन दल पहुंचकर आग पर काबू पाया

सेन्हा-लोहरदगा। घरेलू गैस सिलेंडर लीक होने से किचेन में आग लग गया। घटना में किसी का हताहत होने की सूचना नही है। वही अगलगी घटना से लगभग 50 हजार की समान जल कर राख हो गया। सेन्हा थाना क्षेत्र के साप्ताहिक बाजार स्थित सेन्हा निवासी बिलो उराँव पति स्वर्गीय अनिल उराँव के घर में संध्या लगभग 8:15 बजे का घटना है।जानकारी के अनुसार बताया जाता है कि खाना बनाने के दौरान चूल्हा से पाइप निकालने के कारण आग लगी हुई। घटना की सूचना थाना प्रभारी अजित कुमार को देते हुए बचाव का गुहार लगया गया। घटना की सूचना मिलते ही उनके निर्देश पर अग्निशमन टीम घटना स्थल पहुंच आग बुझाने में जुट गई। काफी साहस के साथ अग्निशमन टीम के द्वारा गैस सिलेंडर बाहर निकाल पूर्ण रूप से आग पर काबू पाया गया।परन्तु तब तक घरेलु समा फ्रिज, फर्नीचर,बर्तन,खाद्यान सामग्री सहित अन्य समान जल कर नष्ट हो गया।वहीं अग्निशमन

दल के प्रयास से पीड़ित का मकान सहित अगल बगल घर को भी सुरक्षित बचा लिया गया।साथ ही बताया जाता है।कि घटना के दौरान परिवार वालों ने सूझबूझ के साथ कार्य किया जिसके कारण बड़ी दुर्घटना होने से टल गई और किसी व्यक्ति के साथ हताहत नही हुआ। घटना स्थल पर ए एस आई अलबिना लकड़ा गस्ती के दौरान दलबल के साथ मौजूद थी।

एक नजर

वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर धरना में शामिल हुए बरही विधायक

बरही। वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा एक दिवसीय धरना आयोजित किया गया. जिसमे बरही विधायक उम्रकंचन ग्राउंड से हजारों की संख्या में लोगों ने जुलूस के रूप में समाहरणालय परिसर की ओर मार्च किया। इस जुलूस का नेतृत्व राजेश मेहता, सुंदर मुंडा, मनोहर मुंडा, मन्नू भगत, और टुन्नू बर्णवाल ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उमाशंकर अकेला ने उपस्थित लोगों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को मुख्यमंत्री तक पहुंचाया जाएगा।

लखनऊ में अखिल भारतीय बढ़ई समाज के कार्यक्रम में शामिल हुए समाजसेवी

तिसरी गिरिडीह। विश्वकर्मा राणा समाज के प्रधान समाजसेवी उमेश प्रसाद राणा मंगलवार को विशिष्ट अतिथि के रूप में सहकारिता भवन हजरतगंज लखनऊ, उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय बढ़ई समाज के कार्यक्रम में शामिल हुए। इस समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्राम शर्मा , पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह के पौत्र इंद्रजीत सिंह के साथ मंच शेयर करते हुए अपना विचार उन्होंने रखा। अपने विचार को रखते हुए उमेश प्रसाद राणा ने कहा कि हमारा समाज राजनीतिक क्षेत्र में उपेक्षित हो रहा है। हमारे समाज से कम आबादी होने के बावजूद अन्य समाज राजनीतिक भागीदारी में आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए हम लोग को निरंतर सामाजिक कार्यक्रम कर सरकार तक अपने संदेश को पहुंचाना है।

आरोह फाउंडेशन ने आयोजित किया प्रमाण पत्र वितरण समारोह

बरही । मंगलवार को विजैया पंचायत भवन में सत्र 2023-24 में सफल कौशल प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाण पत्र वितरित किए गए. कार्यक्रम का आयोजन आरोह फाउंडेशन के तत्वाधान में किया गया था, जिसका संचालन जिला समन्वयक अजय रंजन मेहता ने किया. कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि एआईसीएल की आशा प्रसाद, हुसना प्रवीण और फाउंडेशन के स्टेट हेड संतोष आनंद शामिल हुए. श्री प्रसाद ने बताया कि कौशल प्रशिक्षण युवाओं के लिए वरदान है. जिला समन्वयक ने बताया कि बीते सत्र में 1900 प्रशिक्षणार्थियों को सिलाई, कढ़ाई आदि विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण दिया गया है. अतिथियों ने कौशल कोर्स की विशेषताओं की चर्चा करते हुए बताया कि यह बेरोजगारों के लिए तकनीकी हुनर है।

ग्रामीणों के हर सुख-दुख में मैं और मेरे कार्यकर्ता 24 घंटे हैं तैयार : रोशन लाल

नवीन मेल संवाददाता। बड़कागांव प्रखंड के गोंदलपूरा पंचायत के ग्राम जोराकाठ में कई दिनों से विद्युत ट्रांसफार्मर खराब हो गया था, जिसके वजह से पूरा गांव अंधेरे में था, जिसको लेकर इसकी सूचना पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह विधानसभा प्रभारी रौशन लाल चौधरी को दिया गया। जिसमें आजसू नेता रौशन लाल ने त्वरित कार्रवाई करते हुए अपने नेतृत्व में जोराकाठ के ग्रामीणों को 200 केवी का ट्रांसफर उपलब्ध कराया। जिसका उद्घाटन मंगलवार को फीता काटकर किया। मौके पर जोड़ा काट के ग्रामीणों ने आजसू नेता रौशन लाल चौधरी का गाजे बाजे ढोल नगाड़े के साथ स्वागत किया।लोगों को संबोधित करते हुए आजसू नेता रौशन लाल चौधरी ने कहा कि में मैं और मेरे कार्यकर्ता 24 घंटे तैयार हैं ।हमारा एक ही उद्देश्य है, बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र का समुचित विकास साथ ही उन्होंने कहा कि यहां के जनप्रतिनिधि ट्रांसफार्मर के नाम पर राजनीति करते हैं । ट्रांसफार्मर हम सभी ग्रामीणों का अधिकार है ,क्योंकि हम सभी ग्रामीण बिजली बिल देते हैं ।ना कि फ्री में बिजली का उपयोग करते हैं। मौके पर मुख्य रूप से कारू महतो, सुकुल महतो सहित सैकड़ों ग्रामीण महिला-पुरुष उपस्थित थे।

थाना प्रभारी हुए लाइन हाजिर

पीरटांड़। गिरिडीह एसपी डॉ विमल कुमार ने पीरटांड़ थाना के थाना प्रभारी गौतम कुमार को लाइन हाजिर कर दिया है।इसके साथ ही पांच सिपाही,एक हवलदार और एक एएसआई को सस्पेंड कर दिया है।बताया जाता है कि कुछ दिन पूर्व पीरटांड़ के थाना प्रभारी समेत अन्य पुलिसकर्मियों पर बालू का एक ट्रैक्टर पकड़ने के बाद अवैध रुपये की मांग करने के साथ साथ ग्रामीणों से मारपीट करने का आरोप लगा था। इसके बाद कुछ राजनीतिक दलों ने दोषी पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए अवैध रकम वापस करने की भी मांग की थी।जिसके बाद एसपी के निर्देश पर एक जांच टीम का गठन किया गया।जिसके बाद डुमरी एसडीपीओ सुमित कुमार के द्वारा जांच करायी गया। जांच में रकम वसूलने व मारपीट के मामले में ग्रामीणों का आरोप सही साबित हुआ। इसी आधार पर गिरिडीह एसपी ने तड़ित कार्रवाई करते हुए थाना प्रभारी को लाइन हाजिर एवं एक एएसआई सहित पांच हवलदार को सस्पेंड कर दिया गया।गिरिडीह एसपी ने बताया की जांच के बाद इस लोगो पर करवाई की गई है।

यादव समाज की बैठक में लिए गए कई निर्णय, हर प्रखंड में बनेगा यादव छात्रावास

गिरिडीह। राष्ट्रीय यादव सेना के द्वारा यादव छात्रावास गिरिडीह में यादव समाज का जिला स्तरीय बैठक आयोजित किया गया। सर्वप्रथम श्री कृष्ण के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अध्यक्षता जिला सचिव इंद्रदेव यादव और संचालन जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र यादव ने किया। बैठक में राष्ट्रीय यादव सेना गिरिडीह जिले के सभी प्रखंडों के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद प्रतिनिधि सह नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष दिनेश प्रसाद यादव और सांसद प्रतिनिधि गुड्डू यादव उपस्थित हुए।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने बीडीओ का फूंका पुतला

तिसरी (गिरिडीह)। तिसरी प्रखंड कार्यालय में बीते दिनों बीडीओ मनीष कुमार द्वारा उनके दफ्तर में आई एक दलित महिला से दुर्व्यवहार और जाती सूचक शब्द का करने प्रयोग करने का मामला बढ़ता ही जा रहा है। मंगलवार की शाम इसको लेकर भारतीय जनता पार्टी के तिसरी व चंदौरी मंडल द्वारा संयुक्त रूप से जुलुस निकालकर बीडीओ मनीष कुमार का पुतला दहन किया है। प्रखंड मुख्यालय स्थित गांधी मैदान में भाजपाई जुटे और हाथों में पार्टी का झंडा लिए बीडीओ मनीष कुमार हाय- हाय, तिसरी बीडीओ होश में आओ,तिसरी बीडीओ की गुंडागर्दी नहीं चलेगी, तिसरी बीडीओ को बर्खास्त करो आदि नारे लगाते हुए प्रखंड मुख्यालय का भ्रमण किया। जिसके बाद चौक पर बीडीओ मनीष कुमार का पुतला दहन किया गया। इस दौरान भाजपा के जिला मंत्री मनोज यादव ने कहा कि रेखा देवी द्वारा नामक अशिक्षित दलित महिला को एससी से बदलकर ओबीसी श्रेणी में कर दिया गया था जिसे सुधरवाने के लिए वह महिला गयी थी। महिला ने अज्ञानता के कारण बीडीओ को चाय- पानी के लिए 100 रुपय देने का प्रयास किया लेकिन तिसरी बीडीओ मनीष कुमार द्वारा उक्त महिला के साथ अभद्र व्यवहार, जाती सूचक शब्द का प्रयोग और उसे एक घंटे तक बंधक बनाया गया जो निंदनीय है। मनोज यादव ने कहा कि मनीष कुमार का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। जब से वे यहां आए हैं तब से प्रखंड में लूट का राज चल रहा है। प्रखंड कार्यालय में खुलेआम रिश्वतखोरी चल रही है।

सामाजिक सहायता केंद्र का खुला कार्यालय

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल बरकट्ठा के समीप खुले सामाजिक सहायता केंद्रीय कार्यालय में युवा समाजसेवी सुनील कुमार ने प्रेस वार्ता किया।इस निमित उन्होंने बताया कि जनता की आवाज को मजबूत करने,जनता को जागरूक और इसके माध्यम से सशक्त बनाने, सरकार की जवाबदेही को आकार देने में पत्रकारों की बड़ी सहभागिता होती है। उन्होंने बताया कि आम नागरिक का जो अधिकार है वह मतदान का अधिकार है। चुनाव की प्रक्रिया के समय लोग अपना मतदान करते हैं एवं अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि चुनते हैं और उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधि जनता की समस्याओं को सड़क से सदन तक पहुंचाने हेतु आवाज बुलंद करते हैं ' लेकिन अक्सर ऐसा देखा जा रहा है की जब चुनाव आता है। तो उस समय मतदाताओं को छोटे-छोटे प्रलोभन, झूठे वादे देकर, उनको बहला फुसलाकर, उनकी असली ताकत मतदान की ताकत को गलत तरीके से मतदान करा कर गलत प्रतिनिधि का चयन कर दिया जाता है।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, लातेहार।

Email- rdsd.latehar@rediffmail.com

निविदा रद्द करने संबंधी सूचना

इस कार्यालय द्वारा आमंत्रित अति अल्पकालिन ई–निविदा संख्या– EE/RDSD/LATEHAR/16/2024-25 जिसका PR NO- 334956 Rural Development(24-25)D है तथा यह दिनांक–07.09.2024 को प्रकाशित हुई थी। इस निविदा को अपरिहार्य कारणों से रद्द किया जाता है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल,
PR 337862 (Rural Development) 24-25 (D) लातेहार।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा।

अतिअल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0:–15/2024–25

1	विभाग का नाम	:– भवन निर्माण विभाग।
2	विज्ञापन दाता का नाम	:– कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल,गढ़वा।
3	परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि एवं समय	:– 08/10/2024 को (पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 01:00 बजे तक)
4	मुहरबंद निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय	:– 09/10/2024 को अपराह्न 03:00 बजे तक।
5	मुहरबंद निविदा प्राप्ति खोलने की तिथि एवं समय	:– 09/10/2024 को 03:00 बजे अपराह्न से।
6	परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान	:– 1. कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा कार्यालय परिसर में। 2. अधीक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं0–02, राँची द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा कार्यालय परिसर में।
7	निविदा प्राप्ति एवं खुलने का स्थान	:– क्रमांक–6 के क्र0सं0–1 के स्थान पर।
8	कार्य का विवरण:–	

क्र0सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	प्रखण्ड लोक स्वास्थ्य इकाई (BPHU) धुरकी का भवन निर्माण कार्य।	₹ 49,99,700/-	₹ 1,00,000/-	₹ 5,000/	6 माह
2	प्रखण्ड लोक स्वास्थ्य इकाई (BPHU) भवनाथपुर का भवन निर्माण कार्य।	₹ 49,99,700/-	₹ 1,00,000/-	₹ 5,000/	6 माह

निविदा की शर्तें *www.jharkhand.gov.in* एवं कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

नोटः– ***Updated Character PAN, GST Return File Latest,*** पंजीकरण प्रमाण–पत्र की स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति अनिवार्य रूप से जमा करने के पश्चात ही निविदा पत्र निर्गत किया जायेगा।

कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमण्डल, गढ़वा।

PR 337727 Building(24-25)D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, सं०–02,गढ़वा

अतिअल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–RDD/SD/GARHWA/19/2024-25, दिनांक–30.09.2024

1. कार्य की विस्तृत विवरणीः

क्र० सं०	कार्य का नाम	प्रशासनिक स्वी0 की राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि	लम्बाई (मी0 में)
1	गढ़वा जिला अंतर्गत खरौंधी प्रखण्ड के पंचायत अरंगी ग्राम–तोरेलावा में डोमनी घाटी पर स्कूल के पास डोमनी नाला पर उच्च स्तरीय पुल निर्माण।	42644800.00	8,53,000.00	10000.00	18 माह	58.08

2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि –02.10.2024
3. ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय दिनांक–02.10.2024 से दिनांक–09.10.2024 को अपराह्न 5:00 बजे तक
4. ई–निविदा खोलने का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, सं0–02,गढ़वा।
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय–14.10.2024 अपराह्न 2:00 बजे
6. ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, सं0–02,गढ़वा।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० –8002373581 (संबंधित कार्यपालक अभियंता का दूरभाष नम्बर)
8. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तदनुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल **Online Mode** द्वारा स्वीकार्य होगी।
10. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी।

अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।

विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्र.सं.–02, गढ़वा।

PR.NO.337731 Rural Development(24-25):D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा

अतिअल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0:–16/2024–25

1	विभाग का नाम	:– भवन निर्माण विभाग।
2	विज्ञापन दाता का नाम	:– कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा।
3	परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि एवं समय	:– 14/10/2024 को (पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 01:00 बजे तक)
4	मुहरबंद निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय	:– 15/10/2024 को अपराह्न 03:00 बजे तक।
5	मुहरबंद निविदा प्राप्ति खोलने की तिथि एवं समय	:– 15/10/2024 को 03:00 बजे अपराह्न से।
6	परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान	:– 1. कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा ,कार्यालय परिसर में। 2. अधीक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं0–02, राँची द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा कार्यालय परिसर में।
7	निविदा प्राप्ति एवं खुलने का स्थान	:– क्रमांक–6 के क्र0सं0–1 के स्थान पर।
8	कार्य का विवरण:–	

क्र0 सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Renovation of Guard Room & Boundary wall in District P.D.J. Residence at Garhwa.	₹ 12,36,800/-	₹ 25,000/-	₹ 2500/	15 दिन
2	Renovation work of B- Type Building at Judicial Colony at Garhwa.	₹ 23,13,300/-	₹ 46,300/-	₹ 5,000/	15 दिन
3	Renovation work of C- Type Building at Judicial Colony at Garhwa.	₹ 23,92,900/-	₹ 47,900/-	₹ 5,000/	15 दिन
4	Renovation work of D- Type Qut (04 Units) at Judicial Colony at Garhwa.	₹ 9,99,600/-	₹ 20,000/-	₹ 1250/	15 दिन
5	Renovation of S.D.O. Residence, Guard Room, Servant Block & Boundary Wall in Ranka Sub-Division, District Garhwa for the year 2023-24.	₹ 23,75,500/-	₹ 47,600/-	₹ 5000/	15 दिन

निविदा की शर्तें *www.jharkhand.gov.in* एवं कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

नोटः– ***Updated Character PAN, GST Return File Latest,*** पंजीकरण प्रमाण–पत्र की स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति अनिवार्य रूप से जमा करने के पश्चात ही निविदा पत्र निर्गत किया जायेगा।

कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमण्डल, गढ़वा

PR 337723 (Building)24-25*D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा

अतिअल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0:–14/2024–25

1	विभाग का नाम	:– भवन निर्माण विभाग।
2	विज्ञापन दाता का नाम	:– कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा।
3	परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि एवं समय	:– 08/10/2024 को (पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 01:00 बजे तक)
4	मुहरबंद निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय	:– 09/10/2024 को अपराह्न 03:00 बजे तक।
5	मुहरबंद निविदा प्राप्ति खोलने की तिथि एवं समय	:– 09/10/2024 को 03:00 बजे अपराह्न से।
6	परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान	:– 1. कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा कार्यालय परिसर में। 2. अधीक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं0–02, राँची द्वारा प्रतिनियुक्त, पदाधिकारी द्वारा कार्यालय परिसर में।
7	निविदा प्राप्ति एवं खुलने का स्थान	:– क्रमांक–6 के क्र0सं0–1 के स्थान पर।
8	कार्य का विवरण:–	

क्र0 सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Renovation of S.D.O. Office Building Ground Floor at Ranka Under Garhwa District for the Year 2023-24	`24,95,700/-	` 50,000/-	` 5,000/	1 माह
2	Renovation of S.D.O. Office Building First Floor at Ranka Under Garhwa District for the Year 2023-24	`24,97,900/-	` 50,000/-	` 5,000/	1 माह
3	Renovation of S.D.O. Office Building Second Floor at Ranka Under Garhwa District for the Year 2023-24	`24,97,600/-	` 50,000/-	` 5,000/	1 माह
4	Renovation of S.D.O. Office Building Third Floor, Roof Treatment, Boundary Wall, & Boring at Ranka Under Garhwa District for the Year 2023-24.	` 21,14,800/-	` 43,000/-	` 5,000/-	1 माह

निविदा की शर्तें *www.jharkhand.gov.in* एवं कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

नोटः–***Updated Character PAN, GST Return File Latest,*** पंजीकरण प्रमाण–पत्र की स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति अनिवार्य रूप से जमा करने के पश्चात ही निविदा पत्र निर्गत किया जायेगा।

कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमण्डल, गढ़वा

PR 337725 Building(24-25).D

कार्यालय :- नगर पंचायत, श्री बंशीधर नगर

Email Id - npsbnagar@gmail.com

-: आम सूचना :-

स्वच्छ पूजा पंडाल प्रतियोगिता –2024

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत, श्री बंशीधर नगर क्षेत्रांतर्गत आगामी स्वच्छ सर्वेक्षण–2024 को देखते हुए दुर्गा पूजा 2024 के अवसर पर स्वच्छ पूजा पंडाल प्रतियोगिता के माध्यम से पूजा पंडालों के द्वारा स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने का कार्य किया जाना है। पूजा एवं त्योहारों के अवसर पर श्रद्धालुओं की भीड़ एवं पंडालों के इर्द–गिर्द ठोस अपशिष्ट का बढ़ना आम बात है, जिसको कम करने का उत्तरदायित्व आम नागारिकों का भी है। उक्त प्रयास में अगामी दुर्गा पूजा में आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु स्वच्छ पूजा पंडाल प्रतियोगिता का आयोजन करने का निर्णय लिया गया है। निकाय अन्तर्गत आने वाले पूजा पंडालों की स्वच्छता का मूल्यांकन दिनांक 10.10.2024 से 12.10.2024 के दौरान निकाय द्वारा गठित टीम/समिति के द्वारा नीचे दिये गए तालिका में अंकित मापदण्डों के आधार पर किया जाएगा।

मापदंड निम्नवत् है :–

क0	मापदंड	अधिकतम अंक
1	पूजा पंडालों/प्रतिमा निर्माण सामग्री में प्रकृति संरक्षण की झलक।	10
2	पूजा पंडालों में कागज पत्ता, जुट या किसी बायोडिग्रेडेबल सामग्री से बने सामग्री का उपयोग।	10
3	पूजा पंडाल/परिसर में पेयजल, सरबत पीने के लिए Reusable ग्लास या कागज का ग्लास का उपयोग।	10
4	पूजा पंडालों में प्रवेश व निकासी द्वारा अलग–अलग तथा महिला एवं पुरूष हेतु अलग–अलग कतार की व्यवस्था सुनिश्चित करना।	10
5	पूजा पंडाल/परिसर में Volunteer, ID Card के साथ होने चाहिए।	10
6	पूजा पंडाल/परिसर में सफाई के लिए स्वयं से किए गए व्यवस्था/उपाय।	10
7	पूजा पंडाल/परिसर में आस–पास के दुकानदारों एवं आम नागरिकों द्वारा गंदगी न फैलाना।	10
8	नशा मुक्ति, प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने व स्वच्छता से संबंधित विज्ञापन पट्ट का प्रदर्शन और ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से प्रचार–प्रसार।	10
9	पूजा पंडाल के आकार के अनुसार पर्याप्त संख्या में डस्टबिन की व्यवस्था कर आगन्तुकों द्वारा प्रयोग।	10
10	निकाय द्वारा चिन्हित विसर्जन स्थल में पूजा समिति के तत्वधान में प्रतिमा विसर्जन।	10
11	पूजा समिति या नागरिकों द्वारा किये गये इनोवेटिव वर्क।	10
12	CCTV कैमरा का अधिष्ठापन एवं संदेश "आप CCTV कैमरे के निगरानी में है"।	10
13	ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग ध्वनि सीमा के अंदर तथा रात्रि 10.00 बजे के बाद विस्तारक यंत्र का प्रयोग वर्जित।	10
	कुल अंक	130

पर्व/त्योहार के अवसर पर नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता हेतु निकाय स्तर से स्वच्छ पूजा पंडाल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसका मूल्यांकन अश्टमी, नवमी एवं दशमी को नगर पंचायत, श्री बंशीधर नगर के गठित दल के द्वारा किया जायेगा, तथा उपरोक्त माप दंडों के आधार पर रैंकिंग करते हुए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले पूजा पंडालों को पुरस्कृत किया जायेगा। इस संदर्भ में जानकारी हेतु कार्यालय अवधि में नगर पंचायत, श्री बंशीधर नगर कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :– 8409054987, 9234256280, 8210422803

प्रशासक,
नगर पंचायत, श्री बंशीधर नगर

PR 337759 Urban Development (24-25)_D

कार्यालय जिला ग्रामीण विकास शाखा, गढ़वा

(मनरेगा, कोषांग)

(अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना)

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय गामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम (MGNREGA) अन्तर्गत, गढ़वा जिला में जॉबकार्ड एवं मापी–पुस्त का मुद्रण हेतु इच्छुक निबंधित मुद्रकों से मुहरबंद निविदा (तकनीकी एवं वित्तीय) आमंत्रित की जाती है। छपाई हेतु नमूना जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, गढ़वा के कार्यालय से कार्यालय अवधि में अवलोकन किया जा सकता है।

क्रम	सामग्री का नाम	विशिष्टता
1	2	3
1	जॉबकार्ड	80 GSM white paper with Multi-colour Front cover of 300 GSM (24 cm X 18 cm size)
2	मापी–पुस्त	50 Sheet, White paper 80 GSM (6"x4") with cover

निविदा हेतु शर्त :–

1 संस्था के पास तीन वर्षो का आयकर रिर्टन की प्रति एवं वाणिज्य कर से संबंधित अद्यतन स्वच्छता प्रमाण–पत्र उपलब्ध होना चाहिए।
2 संस्था को मुद्रण के क्षेत्र में कार्य करने का अनुभव हो।
3 जॉबकार्ड एवं मापी–पुस्त पर झारखण्ड सरकार का नया लोगो का होना अनिवार्य होगा।
4 निविदा दिनांक 09.10.2024 को पूर्वाह्न 11.00 बजे तक स्वीकार किया जायेगा, एवं दिनांक 09.10.2024 को 04.00 बजे अपराह्न में क्रय समिति के सदस्यों एवं निविदादाताओं अथवा उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष खोला जायेगा।
5 निविदादाताओं को अग्रधन के रूप में 25,000.00 (पचीस हजार) रू0 का बैंक ड्राफ्ट उपायुक्त, गढ़वा के नाम से जमा करना होगा।
6 मुद्रण दर का उल्लेख सभी कर (जी.एस.टी. एवं अन्य कर) सहित करने होंगे।
7 आदेश निर्गत हाने के 15 (पन्द्रह) दिनों के अन्दर सामग्रियों की आपूर्ति जिला ग्रामीण विकास शाखा, गढ़वा के कार्यालय में करना होगा जिसके लिये अन्य कोई परिवहन भता देय नहीं होगा।
8 बिना कारण बताये निविदा रद्द करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित रहेगा।
9 मुद्रण कार्य में हुए किसी भी प्रकार की गड़बड़ी के लिए मुद्रणकर्ता स्वंय जिम्मेवार होंगे तथा ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का कोई भुगतान देय नहीं होगा।
10 अधोहस्ताक्षरी को बिना कारण बताये किसी एक या सभी निविदाओं को रदद् करने अथवा कार्य को एक या एक से अधिक निविदादाताओं के बीच वितरण करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा। जिसके लिए कारण दर्शाना अनिवार्य नहीं होगा।
11 निविदा निस्तारण के समय जॉबकार्ड एवं मापी–पुस्त का नमुना साथ लायेंगें।
12 निविदादाताओं को उपायुक्त/पुलिस अधीक्षक द्वारा निर्गत चरित्र प्रमाण पत्र की अद्यतन स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना होगा।
13 निविदादाताओं को यह शपथ–पत्र देना होगा कि उनका प्रतिष्ठान/एजेन्सी काली सूची में दर्ज नहीं है।
14 स्थानीय निविदाताओं को प्राथमिकता दी जायेगी।

विश्वासभाजन

परियोजना पदाधिकारी, मनरेगा कोषांग, गढ़वा।	निदेशक, लेखा प्रशासन एवं स्व–नियोजन, डी.आर.डी.बी., गढ़वा।	उप विकास आयुक्त–सह–अतिरिक्त जिला कार्यक्रम समन्वयक, गढ़वा।	उपायुक्त–सह–जिला कार्यक्रम समन्वयक, गढ़वा।

PR 337730 Rural Development(24-25)D

नापोखुर्द में सड़क निर्माण का विधायक ने किया उद्घाटन

विद्यालय की चारदीवारी व तालाब गहरीकरण की भी रखी आधारशिला

नवीन मेल संवाददाता। बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद ने नापोखुर्द में विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया। इस दौरान विधायक ने ग्राम नागपुर खुर्द में रोहन साव के घर से शमशान घाट होते हुए हाई स्कूल जाने की ओर पथ एवं पुलिया निर्माण कार्य पूर्ण होने पर क्षेत्र वासियों की सुविधा हेतु उद्घाटन किया। वहीं लघु शिक्षा प्रमंडल द्वारा धुरधुरवा आहर मध्यम सिंचाई योजना जीणोधार कार्य व उत्क्रमित उच्च विद्यालय नापोखुर्द की आधारशिला रखी। शिलान्यास व उद्घाटन कार्यक्रम में पहुंचने पर गांववासियो में काफी खुशी देखी गई। महिलाएं भारी संख्या में विधायक अंबा प्रसाद के साथ शिलान्यास व उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुई व उक्त विकास कार्यों पर खुशी जाहिर करते हुए आभार व्यक्त किया। मौके पर मुख्य रूप से पंचायत समिति सदस्य गणेश साव, विधायक प्रतिनिधि जगत नंदन प्रसाद गुप्ता सहित भारी संख्या में महिला पुरुष मौजूद थे।

संपादकीय

अहिंसक गांधी ने भी बाहुबल से संघर्ष की बात कही थी

महात्मा गांधी ने सत्य के साथ ही नहीं अन्य भी कई प्रयोग किए थे जिसको लेकर विवाद भी है पर गांधी जी ने दमन और अन्याय के चलन के विरुद्ध तीन प्रकार की प्रतिक्रियाओं को रेखांकित किया था। उनका कहना था कि इनके खिलाफ हमारी एक प्रतिक्रिया तो यह हो सकती है कि हम कायर हो जाएं। कायरता का यह तरीका दूसरों की गलती को, उसकी ज्यादतियों को सहन करना या इस सामना करने के बजाय भाग खड़ा होना है। दूसरा विकल्प अन्याय और दमन के खिलाफ खड़ा होना है और अपने बाहुबल से संघर्ष करना है। यह दूसरा तरीका, गांधी जी कहते है, अत्याचार को स्वीकार करने या पीठ दिखाकर मैदान छोड़ देने से बेहतर है। लेकिन वह तीसरा रास्ता सब में बेहतर है। वह सर्वाधिक साहस मांगता है और और संपूर्ण रुप से अहिंसक तरीकों से मुकाबला का आग्रह करता है। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों को पुरातन भारत के हिंदूवाद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म की सनातनी शिक्षाओं, यहां तक की न्यू टेस्टामेंट, टॉलस्टॉय, रूसो, अर्नाल्ड और थोरो के आधार पर गढ़े थे। वे यहीं तक नहीं रुके, उन्होंने उनके अवदानों को निष्ठा से व्यवहारिक स्वरूप भी दिया। किताबी ज्ञान से संतुष्ट न होते हुए गांधी ने अपने अनुभवों से सीखा। उन्होंने सत्य,अहिंसा और ब्रह्मचर्य के साथ प्रयोग किया और उनसे अपने उपकरण और औजार निर्मित किए, जिनका दमन के प्रति जनसंघर्ष, लोगों को लामबंद करने, प्रतिरोध को धार देने और व्यवस्था के वांछित रूपांतरण के व्यावहारिक लक्ष्यों के लिए उनका इस्तेमाल किया। महात्मा गांधी ने अपने अनुभवों और अनुप्रयोगों के बल पर सार्वभौम सत्य का वरण किया था। अहिंसक असहयोग नैतिकता के बल पर आधारित था जो आंदोलनकारियों के लिए एक आम उपकरण बन गया। गांधी का स्पष्ट मानना था कि अहिंसक प्रतिरोध के पास एक नैतिक बल होता है, जब सत्याग्रही इसे खो देते हैं तो उनका प्रतिरोध हिंसक हो जाता है। इस पाठ को दुनिया भर के आंदोलनकारियों ने ग्रहण किया है।गांधी जी की सबसे बड़ी विशेषता उनका अंतिम आदमी के पक्ष में खड़े होने की प्रतिबद्धता थी। उनका दूसरा आयाम यह था कि वह निरंतर अपने को परिमार्जित करते रहते थे। उन्होंने वही बताया, जिन पर वह विश्वास करते थे और जिन पर वे स्वयं अमल करते थे। इन आचरणों ने उनमें इतना नैतिक बल भर दिया जिससे कि उनके कट्टर विरोधी भी उनको नजरअंदाज करने का साहस नहीं कर पाते थे। वह अंतिम सांस लेने तक कुछ न कुछ सार्थक बदलाव का प्रयास करते रहे थे। यह सब वह ताकत के जोर पर नहीं, किसी हुकुमनामे के जरिए नहीं बल्कि सत्य और अहिंसा के नैतिक बल के आधार पर करते थे।गांधी जी के लिए आध्यात्मिकता, नैतिकता, राजनीति और अर्थशास्त्र अविभाज्य थे। उनकी दृष्टि में राजनीति से धर्म का बनावटी बंटवारा समस्या पैदा करता है। उनका कहना था कि धर्म को कर्मकांड से नहीं समझा जा सकता बल्कि इसे एथिक्स, प्रेम और सेवा, कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावनाओं से ही भली भांति समझा जा सकता है।

> गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों को पुरातन भारत के हिंदूवाद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म की सनातनी शिक्षाओं, यहां तक कि न्यू टेस्टामेंट, टॉलस्टॉय, रूसो, अर्नाल्ड और थोरो के आधार पर गढ़े थे।

नवरात्र का नारी सशक्तिकरण का संदेश

डॉ. सौरभ मालवीय

भारतीय पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। इनसे हमें ज्ञात होता है कि हमारी प्राचीन संस्कृति कितनी विशाल, संपन्न एवं समृद्ध है। यदि नवरात्रि की बात करें तो यह पर्व भी भारतीय संस्कृति की महानता को दशार्ता है। विगत कुछ दशकों से देश में महिला सशक्तीकरण की बात हो रही है। कुछ लोग विदेशों के उदाहरण देते हैं कि वहां की महिलाएं सशक्त हैं तथा उन्हें बहुत से अधिकार प्राप्त हैं। किंतु ये लोग अपने देश के इतिहास पर चिंतन एवं मनन नहीं करते हैं। वास्तव में भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जहां महिलाओं को पुरुषों के समान माना गया है। उदाहरण के लिए भारत में देवियों की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां पर उन्हें भी देवताओं के समान ही पूजा जाता है, अपितु देवियों का स्थान देवता से पहले आता है जैसे राधा-कृष्ण, सीता-राम आदि। भगवान शिव के साथ देवी पार्वती की भी पूजा की जाती है। भगवान राम के साथ देवी सीता की पूजा की जाती है। हमारी मान्यता के अनुसार शक्ति की देवी दुर्गा है। धन एवं समृद्धि की देवी लक्ष्मी है तथा ज्ञान की देवी सरस्वती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य को जीवन में जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह सब उन्हें इन देवियों से ही तो प्राप्त होती हैं। मानव जीवन को अनुशासन में रखने एवं आदर्श जीवन को स्थापित करने के लिए भगवान हमारे विश्वास और श्रद्धा के केंद्र है।

नवरात्रि देवी दुर्गा को समर्पित महत्वपूर्ण पर्व है। नवरात्रि का पर्व वर्ष में चार बार आता है अर्थात चैत्र, आषाढ़, अश्विन, माघ। इनमें से चैत्र एवं आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। माघ एवं आषाढ़ माह में आने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहा जाता है, क्योंकि इनमें कोई सार्वजनिक उत्सव का आयोजन नहीं किया जाता है। आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि कहा जाता है। इसका आरंभ अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से होता है। इस दिवस पर शुभ मुहूर्त में कलश की स्थापना की जाती है। नवरात्रि में नौ दिन देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः।।

अर्थात देवी पहली शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी, तीसरी चंद्रघंटा, चौथी कूष्मांडा, पांचवी स्कंध माता, छठी कात्यायिनी, सातवीं कालरात्रि, आठवीं महागौरी एवं नौवीं देवी सिद्धिदात्री है।

शैलपुत्री : नवरात्रि के प्रथम दिन देवी दुर्गा के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा-अर्चना की जाती है। मां शैलपुत्री को सफेद वस्तुएं अत्यंत प्रिय हैं,

इसलिए उन्हें सफेद मिष्ठान का भोग लगाया जाता है। यह प्रसाद गाय के शुद्ध घी से बनाया जाता है। सफेद रंग पवित्रता एवं शांति का प्रतीक माना जाता है। जीवन में सर्वाधिक पवित्रता एवं शांति का ही महत्व है। इनके बिना सब व्यर्थ है। देवी की साधना से सुख एवं समृद्धि में वृद्धि होती है।

ब्रह्मचारिणी : नवरात्रि के दूसरे दिन देवी देवी दुर्गा के द्वितीय स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां ब्रह्मचारिणी को शक्कर एवं पंचामृत का भोग लगाया जाता है। शक्कर जीवन में मिठास का प्रतीक है। जिस प्रकार भोजन में मिष्ठान का महत्व है, उसी प्रकार जीवन में मधुर वाणी का महत्व है। मृदु भाषी व्यक्ति सबका मन मोह लेते हैं। देवी की साधना से भाग्य में वृद्धि होती है तथा आयु भी लम्बी होती है।

चंद्रघंटा : नवरात्रि के तीसरे दिन देवी दुर्गा के तृतीय स्वरूप मां चंद्रघंटा की पूजा-अर्चना की जाती है। मां चंद्रघंटा को दुग्ध से बने मिष्ठान एवं खीर का भोग लगाया जाता है। खीर भी दुग्ध से बनाई जाती है। दुग्ध समृद्धि एवं अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक है। देवी की साधना से व्यक्ति बुरी शक्तियों से सुरक्षित रहता है।

कुष्मांडा: नवरात्रि के चौथे दिन देवी दुर्गा के चतुर्थ स्वरूप मां कुष्मांडा की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कुष्मांडा को मालपुये का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से मनुष्य की समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

स्कंदमाता: नवरात्रि के पांचवें दिन देवी दुर्गा के पांचवे स्वरूप स्कंदमाता की पूजा-अर्चना की जाती है। स्कंदमाता को फल विशेषकर केला अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें केले का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से सुख एवं एश्वर्य में वृद्धि होती है।

कात्यायनी: नवरात्रि के छठे दिन देवी दुर्गा के छठे स्वरूप मां कात्यायनी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कात्यायनी को मीठे पान एवं मधु का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से दुखों का नाश होता है तथा जीवन में सुख का आगमन होता है।

कालरात्रि: नवरात्रि के सातवें दिन देवी दुर्गा के सातवे स्वरूप मां कालरात्रि की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कालरात्रि को गुड़ अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें गुड़ से बने व्यंजन का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से समस्त नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है तथा सकारात्मकता में वृद्धि होती है। जीवन सुखी हो जाता है।

महागौरी : नवरात्रि के आठवें दिन देवी दुर्गा के आठवे स्वरूप मां महागौरी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां महागौरी को नारियल अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें नारियल का भोग लगाया जाता है अर्थात नारियल अर्पित किया जाता है। देवी की साधना से व्यक्ति के रुके हुए कार्य पूर्ण होते हैं।

सिद्धिदात्री : नवरात्रि के अंतिम दिन देवी दुर्गा के नौवें स्वरूप मां सिद्धिदात्री की पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन कन्या पूजन का विधान है। कन्याओं की पूजा की जाती है। उन्हें भोजन ग्रहण कराया जाता है। इसके पश्चात उनके चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद लिया जाता है। कन्याओं को प्रसाद के साथ उपहार भेंट किए जाते हैं। तदुपरांत देवी को काले चने, हलवा पूड़ी एवं खीर का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से व्यक्ति के समस्त पापों का नाश होता है तथा उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वास्तव में नवरात्रि का पर्व नारी शक्ति का उत्सव है। प्राचीन काल से ही यह पर्व भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति का प्रतीक रहा है। कन्या पूजन इस बात को सिद्ध करता है कि भारतीय समाज में कन्या का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कन्या भ्रूण हत्या तथा नवजात कन्याओं का वध कर देने जैसी बुराइयां हमारे समाज में कब और कैसे सम्मिलित हो गईं, ज्ञात ही नहीं हो पाया। निरंतर घटता लिंगानुपात अत्यंत चिंता का विषय बना हुआ है। विदेशों में भारत की जिन बुराइयों का उल्लेख कुछ लोग बड़े गर्व के साथ करते हैं, वे बुराइयों तो हमारे समाज में कभी नहीं थीं। जिस समय विश्व के अधिकांश देश अशिक्षित एवं असभ्य थे, उस समय हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी था। पुरुष ही नहीं, अपितु महिलाएं भी शिक्षित थीं। वे शास्त्रार्थ करती थीं, अस्त्र-शस्त्र चलाती थीं। देवियों ने कितने ही राक्षसों का अकेले वध किया है।

नारी को ईश्वर ने श्रेष्ठ बनाया है। अनेक मामलों में वह पुरुष से उच्च स्थान पर है। वह जन्मदात्री है। जिस प्रकार एक स्त्री अपने बालकों का पालन-पोषण कर लेती है, उस प्रकार एक पुरुष उनका पालन-पोषण नहीं कर पाता। स्त्री पूरे परिवार का संचालन सुंदर तरीके से करती है। नारी संस्कार की जननी है उसके अंदर ममता, स्नेह, उदारता,आत्मीयता ,प्यार ,दुलार आदि गुण जीवन का हिस्सा है । ईश्वर ने नारी को अत्यंत सबल बनाया है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का सफल प्रदर्शन कर रही है।

(ये इनके निजी विचार हैं)

अलग बात

अस्पताल के खर्चों में पारदर्शिता जरूरी

विकसित भारत के अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को बढ़ते कर्ज और वित्तीय संसाधनों की कमी से जूझना पड़ता है, सरकार नियंत्रण खोती जा रही है, पूरे देश के राज्यों में यही धींगामस्ती का आलम है। आप शासित राज्य को पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय की फटकार ने पंजाब सरकार की वित्तीय प्राथमिकताओं में घोर कुप्रबंधन को ही उजागर किया है,पूरे देश में यही ढर्रा है। विडंबना यह है कि शासन-प्रशासन ने पंजाब सहित कई राज्य में स्वास्थ्य संबंधी दायित्व तो पूरे नहीं किए, लेकिन तंत्र के विलासितापूर्ण खर्चे बदस्तूर जारी है। कमजोर वर्ग के मरीजों को राहत देने के मकसद से शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना के तहत केंद्र सरकार से मिले तीन सौ पचास करोड़ रुपये प्राप्त करने के बावजूद सरकार अस्पतालों के लिये यह धनराशि जारी करने में विफल रही। जिसके चलते चिकित्सा संस्थानों का राज्य सरकार पर करीब पांच सौ करोड़ धन बकाया रह गया है। यह विडंबना ही है कि शासन की यह लापरवाही ऐसे समय में उजागर हुई है जब पंजाब राज्य के सारे अस्पताल वित्तीय संकट के कारण मरीजों को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा देने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। कोर्ट के आदेश पर वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारियों का वेतन रोकने का यह कदम जवाबदेही तय करने की दिशा में एक अनुकरणीय पहल है। यह मामला स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सेवा की अनदेखी से जुड़ा है। राजनेताओं के लिये नई कारों, कार्यालयों के नवीकरण का खर्च व महंगे विज्ञापन जैसे गैर आवश्यक खर्च के लिये इस धन के खर्च करने के कारण यह मामला बेहत गंभीर हो गया है। जिसके चलते अदालत ने इस दिशा में सख्त कार्रवाई की जरूरत को रेखांकित किया है। जो हर राज्य सरकार के लिये एक सबक है। यह प्रकरण बताता है कि शासन प्रशासन अपनी प्राथमिकताओं के निर्धारण में कितना संवेदनहीन बन जाता है। वह चिकित्सा सुविधाओं के लिये आवंटित धन के दुरुपयोग से भी गुरेज नहीं करता है। कैसी विडंबना है कि मरीजों को सस्ता व जरूरी उपचार सुनिश्चित करने वाली योजना के लिये आवंटित धन को विलासिता के लिये खर्च करने में गुरेज नहीं किया गया। निश्चय ही यह घटनाक्रम खराब शासन को ही दशार्ता है। वहीं सार्वजनिक कल्याण के लिये प्रशासन की प्रतिबद्धताओं से जुड़ी नैतिक चिंताओं पर भी सवालिया निशान लगाता है। ऐसे ही आर्थिक कुप्रबंधन के चलते पंजाब की वित्तीय परेशानियां लगातार बढ़ते राजकोषीय घाटे के कारण और भी बढ़ गई हैं। जिसका दबाव आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं पर पड़ रहा है। राज्य द्वारा धन का गलत तरीके से आवंटन शासन की विफलता को ही दशार्ता है। **(ये इनके निजी विचार हैं)**

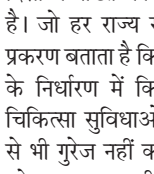

राकेश दुबे

देश की बात

भारत में आतंक को महिमामंडित करतीं इस्लामिक शक्तियां

आतंकवाद एक प्रकार की हिंसात्मक गतिविधि है। अगर कोई व्यक्ति या कोई संगठन अपने आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए देश या देश के नागरिकों की सुरक्षा को निशाना बनाए, तो उसे आतंकवाद कहते हैं। गैर-राज्यकारकों द्वारा किये गए राजनीतिक एवं वैचारिक हिंसा भी आतंकवाद की ही श्रेणी में आती है। आतंकवाद, राजनीतिक कार्रवाई है, जिसमें किसी राष्ट्र के शासन और उसकी जनता को भय और मनोबल से गिराने के लिए असाधारण हिंसक साधनों का प्रयोग किया जाता है। (आतंकवादः क्यूबा कनेक्शन, रोजर डब्ल्यू. फॉनटेन, 1988, पृ. 4)। आतंकवाद की दी गई इस परिभाषा के साथ हम यूएन द्वारा परिभाषित की गई आतंक के अर्थ को भी समझ लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, आतंकवाद कोई भी ऐसा कार्य है जिसका उद्देश्य किसी नागरिक को या सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में शत्रुता में सक्रिय भाग नहीं लेने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मृत्यु या गंभीर शारीरिक चोट पहुंचाना हो, जब ऐसे कार्य का उद्देश्य, अपनी प्रकृति या संदर्भ के अनुसार, जनसंख्या को डराना हो या किसी सरकार या अंतरराष्ट्रीय संगठन को कोई कार्य करने या न करने के लिए बाध्य करना हो। संयुक्त राष्ट्र (1999) आतंकवाद के वित्तपोषण के दमन के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अनुच्छेद 2 (बी) संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 9 दिसंबर 1999 को संकल्प 54/109। अब आप इन दोनों ही परिभाषाओं के आधार पर 'हिज्बुल्लाह' को रखिए, यह सर्वविदित है कि यूरोपीय संघ ने 22 जुलाई 2013 को हिजबुल्लाह के सैन्य विंग को एक आतंकवादी संगठन के रूप में नामित किया था। 'हिज्बुल्लाह' को संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य देशों द्वारा एक आतंकवादी संगठन के रूप में चिन्हित किया गया है। लेबनान पर इजरायली आक्रमण के जवाब में 1982 में गठित हिज्बुल्लाह स्वयं को (अल्लाह की पार्टी) कहता है। हिज्बुल्लाह की अर्धसैनिक शाखा जिहाद परिषद है। यह समूह इजरायल के खिलाफ संघर्ष में फिलिस्तीनी अस्वीकृति समूहों का भी समर्थन करता है और इराक में पश्चिमी हितों पर हमला करने वाले इराकी शिया उग्रवादियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है।

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

(ये इनके निजी विचार हैं)

फेसबुक वॉल से

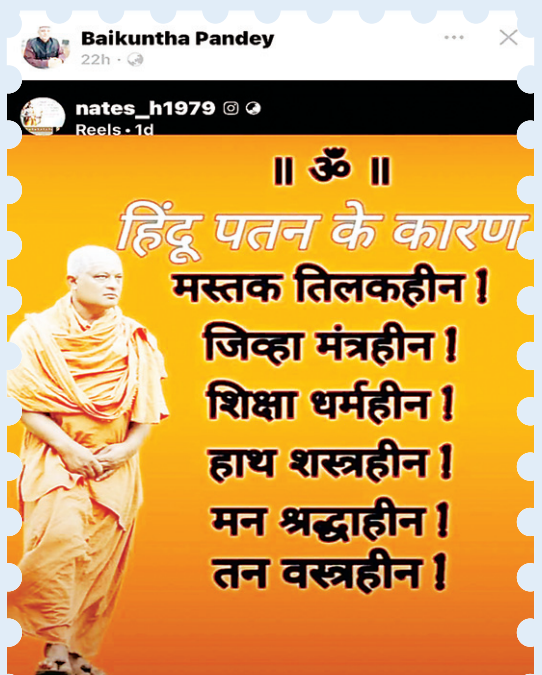

X से

रचना भेजिए

समाचारों के संबंध में शिकायत, सुझाव या इस पेज के लिए आर्टिकल कृपया भेजें article.rnmail@gmail.com कॉल/व्हाट्सएप 82925 53444। **-संपादक**

आज का दोहा

आंखों में पहचान है, बातों में अनजान।
चेहरे पर हैं तल्खियां, होठों पर मुसकान।।
सोमदत्त शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

बोधि वृक्ष

अपने भीतर से सर्वश्रेष्ठ को व्यक्त करना

मुझमें बदलने की इच्छा-शक्ति है। मैं बदलूँगा! दिन भर इस विचार में बने रहें, और इसे निद्रा के अवचेतन प्रदेश तथा ध्यान के अधिचेतन साम्राज्य में अपने साथ ले जायें।

श्री श्री परमहंस योगानंद

अत्यन्त सरलता से आपको बस इतना ही करना है कि सकारात्मक विचारों को लाकर, जिन विचारों को आप नष्ट करना चाहते हैं उनको सोचना बन्द कर दें। यह स्वर्ग की कुंजी है; यह आपके हाथों में है। बीसवीं शताब्दी के अग्रणीय भौतिकविद् पुनः खोज कर रहे हैं। ब्रिटिश वैज्ञानिक, सर जेम्स जीन्स ने लिखा, विश्व एक मशीन की अपेक्षा एक महान विचार प्रतीत होने लगा है। और आईंस्टाइन ने कहा था, मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर ने यह संसार कैसे बनाया। मेरी इस या उस घटना में, इस या उस तत्व के वर्णक्रम में रुचि नहीं है। मैं ईश्वर के विचारों को जानना चाहता हूँ बाकी सब तो विवरण हैं। पहला काम जिसे हमें करना है, वह आत्मनिरीक्षण है। अपने आपकी और अपनी आदतों की जाँच करें, और पता लगाएँ कि आपके मार्ग में कौन-सी बाधा है। प्रायः यह निष्क्रियता, या निश्चित, अविभाजित प्रयास एवं ध्यान की कमी होती है। कभी-कभी कुछ ऐसी आदतें होती हैं जिनको आपकी जीवन बगिया से निकालने की आवश्यकता होती है, ताकि सच्ची प्रसन्नता और अधिक दृढ़ता से जड़ें पकड़ सके। प्रगति का एक रहस्य आत्मविश्लेषण है। अन्तर्निरीक्षण एक दर्पण है जिसमें आप अपने मन के उन गुप्त स्थानों में झाँक सकते हैं जो अन्यथा आपसे छिपे रह जाएँगे। **(क्रमशः)**

> मैं ईश्वर के विचारों को जानना चाहता हूँ बाकी सब तो विवरण हैं। पहला काम जिसे हमें करना है, वह आत्मनिरीक्षण है। अपने आपकी और अपनी आदतों की जाँच करें, और पता लगाएँ कि आपके मार्ग में कौन-सी बाधा है।

आपकी बात

महात्मा गांधी की जीवन दृष्टि

गांधीजी का जन्म उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ था, आधी बीसवीं सदी तक के दौरान वे भारतीय समाज और राजनीति की धुरी बन गए और अब इक्कीसवीं सदी में हम सब उनके मिथक से रूबरू हो रहे हैं। विश्वव्यापी अंग्रेजी साम्राज्य से अहिंसक लड़ाई के साथ उनका स्वाधीन भारत का स्वप्न सत्य हुआ। देश में रचनात्मक बदलाव के लिए वे सबको साथ ले कर चलते रहे। उनकी स्वीकार्यता का दायरा आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक यानी जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता गया। संयम और आत्म-बल के साथ कर्मवीर गांधी ने जो ठाना उसे पूरा करने के लिए सर्वस्व लगा दिया। समाज के स्तर पर मानव कर्तृत्व की विरल गाथा बना उनका निजी जीवन पीड़ा, संघर्ष और अनिश्चय से भरा था। देश के लिए समर्पण की मिसाल बने गांधीजी अंतिम जन की मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए की मोर्चों पर डटे रहे। वे देश के विभाजन और आजादी के साथ शुरू हुई हिंसा से क्षुब्ध और दुखी थे। बंगाल में नोआखाली से लौट दिल्ली में दंगापीड़ितों की सेवा सुश्रूशा में जुट गए। विभाजन की विभीषिका बड़ी दारुण थी और विचलित तथा हताश गांधीजी ने स्वतंत्र भारत में अपने पहले जन्मदिन यानी 2 अक्टूबर 1947 को दुखी हो कर कहा था कि वे अब जीना नहीं चाहते और विधि का विधान यह हुआ कि वह सचमुच उनका आखिरी जन्मदिन सिद्ध हुआ। पांच बार की असफल कोशिशों के बाद 30 जनवरी 1948 को दिल्ली के बिड़ला हाउस में उनकी हत्या हो गई। गौरतलब है कि गांधीजी स्वतंत्र भारत में करीब पांच महीने जीवित रहे थे और इस बीच यह बूढ़ा सेनानी स्वप्न-भंग से गुजर रहा था। अब कोई उनकी सुन नहीं रहा था। ये दिन उनके लिए बड़े तकलीफदेह थे। गांधीजी ने अपने जीवन की कथा को पारदर्शी बनाए रखा। 'सत्य' और 'नैतिकता' से जूझती इस कथा को उन्होंने 'एक खुली किताब' कहा। उनका साहस ही था कि वह कह सके कि 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' प्रिय-अप्रिय, अच्छे-बुरे हर पहलू को वह सबसे साझा किए। वे सही अर्थों में सत्य के पुजारी थे और जो भी है वह सत्य है इसलिए उसे झूठ के सहारे छिपाना अपराध ही होता। सत्य पर उनका भरोसा बढ़ता गया और वे कथनी और करनी में एका लाने में लागातार जुटे रहे। तभी वह पहनावा, खानपान और मेलमिलाप आदि सब में सरल भारतीय जीवन शैली को अपना सके। वे प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे उतरते रहे। विचार को कर्म में तब्दील करने पर जोर देने वाले गांधीजी परिवर्तन चाहने वाले को खुद अपने में बदलाव लाने के लिए कहते हैं। यह खुद उनकी अपनी जिन्दगी की सीख थी। बहुत हद तक प्रयासपूर्वक संयमित जीवन जीते हुए वह जगत की नियमबद्धता में प्रकट हो रहे परमात्मा में आस्था और विश्वास रखते थे। चूँकि नजरिए स्वाभाविक रूप से भिन्न होते हैं विविधता सहज संभाव्य होती है। गैर-जानकारी में लोग अपने से अलग दूसरी दृष्टियों को गलत या हीन ठहराने लगते हैं। गांधीजी अपनी प्रार्थना सभा में सभी प्रमुख धर्मों की प्रार्थनाओं को शामिल करते थे। वे मानते थे सभी एक ही तत्व से बने हैं इसलिए कोई अछूत नहीं और किसी का भी स्वामित्व नहीं। सभी ट्रस्टी हैं इसलिए (अपना हक न जमाते हुए) त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए। गांधीजी धैर्य और दृढ़ता के साथ सत्य (ईश्वर), अहिंसा (प्रेम) और अपरिग्रह (जरूरत भर संग्रह) जैसे विचारों को अमली जामा पहनाते रहे और दैनन्दिन जीवन में शामिल करते रहे। इस दृष्टि से उनकी उर्वर मानसिकता और सृजनशीलता असंदिग्ध है। भारत और विदेश में हो रहे अनुभवों को समेटते और पचाते हुए गांधीजी खुले मन से मानवीय चेतना के आत्म-बोध को रचते रहे। वे कई अर्थों में समकालीनों से अलग हट कर गांधीजी ने अपना रास्ता बनाया और उस पर चलने की तैयारी की थी और जोखिम उठाकर भी उस पर चलते रहे। गांधीजी देश के लम्बे स्वतंत्रता-संग्राम में दो दशकों तक केंद्र-बिन्दु रहे। **(ये इनके निजी विचार हैं)**

गिरीश्वर मिश्र

गांधी जयंती (2 अक्टूबर) पर विशेष

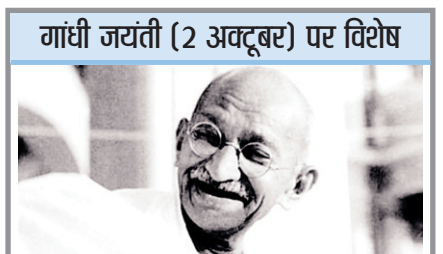

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. **RNI.** 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-834001, फोन नं.- 0651-3553943, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : **news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com**
(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

भाजपा ने कांग्रेस की सरकारों पर लगाया कई जमीन घोटाले का आरोप

कांग्रेस के कुछ नेता 'प्रॉपर्टी डीलर' बन गए हैं : रविशंकर

एजेंसी। नई दिल्ली

भाजपा ने कांग्रेस की सरकारों पर कई जमीन घोटाले करने का आरोप लगाते हुए गांधी परिवार के साथ-साथ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे पर भी निशाना साधा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने मंगलवार को मीडिया से बात करते हुए सवाल पूछा कि आखिर कांग्रेस पार्टी की सरकारों में जमीन डील को लेकर इतना प्रेम क्यों होता है? उन्होंने कहा कि हरियाणा में हुड्डा सरकार के दौरान लैंड डील का मामला सामने आया, कर्नाटक में सिद्धारमैया की मुडा डील चल रही है। अब, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे के परिवार के सिद्धार्थ विहार सोसायटी की चर्चा भी सामने आ गई है। इससे पहले दामाद बाबू की चर्चा भी खूब हो चुकी है। राजस्थान में अशोक गहलोत और हरियाणा में हुड्डा की सरकारों का कितना आशीर्वाद उन्हें मिला था। प्रसाद ने कांग्रेस पार्टी के नेताओं पर बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि आज हम भाजपा की ओर से सवाल उठाना चाहते हैं कि आखिर कांग्रेस पार्टी की सरकारों को लैंड डील से इतना प्यार क्यों है? यह स्पष्ट है कि कांग्रेस सरकार और उसके नेताओं को जमीन डील का बहुत शौक है। कांग्रेस के कुछ नेता 'प्रॉपर्टी डीलर' बन गए हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जहां-जहां भी सत्ता में आई, वहां-वहां लैंड डील करवाई। कांग्रेस नेता जमीन हड़पने के अभियान में लगे हुए हैं। भाजपा इसकी कड़ी भर्त्सना करती है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में सिद्धारमैया के मुडा डील की ईमानदारी से जांच हो रही है और होनी भी चाहिए। सोनम वांगचुक के मसले पर राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए उन्होंने कहा कि वे पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु की घटना पर चुप क्यों रहते हैं? जयराम रमेश और अन्य कांग्रेस नेताओं के बयान को लेकर पूछे गए सवाल पर पलटवार करते हुए भाजपा नेता ने कहा कि मणिपुर एक संवेदनशील विषय है, हम सबको वहां मिलकर काम करना है, वहां काम (शांति स्थापित करने के लिए) किया जा रहा है। कांग्रेस को इससे बाहर निकलकर आना चाहिए। कांग्रेस यह स्पष्ट करे कि वह आतंकवाद के मसले पर प्रधानमंत्री के स्टैंड के साथ है या नहीं? लेकिन, कांग्रेस इस पर अभी तक चुप है।

खड़गे परिवार को दी गई जमीन में कई संदेहास्पद बातें

कर्नाटक में हुए मुडा घोटाले के बारे में विस्तार से बोलते हुए प्रसाद ने कहा कि अभी इस मामले की आग ठंडी भी नहीं हुई थी कि सिद्धार्थ विहार सोसायटी का मामला सामने आ गया है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के परिवार से संबंधित है। खड़गे साहब के परिवार को दी गई जमीन में कई संदेहास्पद बातें हैं, मामला कोर्ट में है और कोर्ट अपना काम करेगा। लेकिन, खड़गे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, राज्यसभा में विपक्ष के नेता भी हैं, तो इसका जवाब तो उन्हें और कांग्रेस पार्टी को देना पड़ेगा। खड़गे और राहुल गांधी, प्रधानमंत्री मोदी से बहुत सवाल पूछते हैं, सवाल पूछना उनका हक है। लेकिन, हम यह उम्मीद भी करते हैं कि वे इस जमीन आवंटन मामले में ईमानदारी, पारदर्शिता और प्रामाणिकता के साथ जवाब देंगे। इस बारे में उठ रहे सारे सवालों का जवाब देंगे।

वांगचुक से मिलने पहुंचीं आतिशी, पुलिस ने नहीं दी अनुमति

नई दिल्ली (हि.स.)। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मंगलवार को लद्दाख के सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक से मिलने बवाना थाने पहुंचीं। उनका कहना है कि उनको मिलने नहीं दिया गया। लेह (लद्दाख) से दिल्ली तक पदयात्रा कर सोनम वांग्चुक दिल्ली सीमा तक पहुंचे। उनका इरादा राजघाट स्थित गांधी समाधि पर धरना देना था। सोमवार को दिल्ली पुलिस ने उन्हें सिंघु बॉर्डर पर रोक लिया। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मंगलवार सुबह उनसे मिलने पहुंची। बाद में उन्होंने थाने के बाहर पत्रकारों को बताया कि मुझे सोनम वांग्चुक से मिलने नहीं दिया। मैं उनसे मिलने इसलिए गई कि वे भी हमारी तरह, दिल्ली की तरह ही लद्दाख के लिए पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि यह सब दिल्ली के राज्यपाल के इशारे पर किया जा रहा है।

उपराष्ट्रपति ने राजश्री बिड़ला को लाल बहादुर शास्त्री पुरस्कार प्रदान किया

एजेंसी। नई दिल्ली

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में आदित्य बिड़ला सामुदायिक पहल और ग्रामीण विकास केंद्र की अध्यक्ष राजश्री बिड़ला को 25वां लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार, 2024 प्रदान किया। उपराष्ट्रपति ने इस मौके पर अपने संबोधन में कहा कि राजश्री बिड़ला पिछले तीन दशकों से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के विभिन्न रूपों में मानवता की सेवा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लाल बहादुर शास्त्री का नाम सुनते ही देशभक्ति की याद आ जाती है। शास्त्री जी जनसेवा की परिभाषा देते हैं। वे आत्म-बलिदान के प्रतीक थे। शास्त्री जी ने आचरण और व्यवहार की मिसाल कायम की, उपदेशों की नहीं। कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं, जिन्हें किसी इवेंट मैनेजमेंट या सिस्टमेटिक एक्टिंग की जरूरत नहीं होती। वे हमारी यादों में बसे रहते हैं। वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं, हमें प्रेरित करते हैं। जब हम भुखमरी के संकट से जूझ रहे थे, तब पूरा देश उनके साथ खड़ा था। वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आह्वान करके लोगों की भागीदारी को बढ़ावा दिया। उनका आह्वान महज आह्वान नहीं था, बल्कि तत्कालीन परिदृश्य से उपजा था, अकल्पनीय आयाम का खतरा था। कल्पना कीजिए कि उन्होंने किस परिदृश्य में कार्यभार संभाला होगा। वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे, जो इसे संभाल सकते थे। उपराष्ट्रपति ने कहा कि हम इवेंट मैनेजमेंट के ऐसे समय में जी रहे हैं, जहां व्यक्ति को ऐसे मापदंडों के आधार पर सम्मानित किया जाता है, जो हैरान करने वाले होते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को उस स्तर तक ऊपर पहुंचा दिया जाता है, जिसे पचा पाना मुश्किल होता है। लेकिन, हाल के वर्षों में एक प्रतिमान बदलाव हुआ है। उदाहरण के लिए, पद्म पुरस्कार उन लोगों को दिए जा रहे हैं, जो इसके हकदार हैं। यही वजह है कि इस पुरस्कार की विश्वसनीयता और बढ़ गई है। यह पुरस्कार भी इसी धारा में आता है। उन्होंने कहा, यह क्षण हमेशा मेरी यादों में रहेगा कि मैं मानवता के एक महान व्यक्ति को सम्मानित कर रहा हूं।

फिल्म अभिनेता गोविंदा के पैर में लगी गोली

एजेंसी। मुंबई

फिल्म अभिनेता गोविंदा के पैर में मंगलवार सुबह करीब पांच बजे गोली लग गई। रिवॉल्वर साफ करते समय यह हादसा हुआ।

रिवॉल्वर साफ करते समय हुआ हादसा, अस्पताल में भर्ती

घायल गोविंदा को तत्काल क्रिटिकेयर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस घटना की जांच जुहू पुलिस स्टेशन की टीम कर रही है। पुलिस के अनुसार आज सुबह करीब पांच बजे फिल्म अभिनेता गोविंदा अपनी रिवॉल्वर साफ कर रहे थे। उसी समय गोविंदा की उंगली से रिवॉल्वर का ट्रिगर दब गया, जिससे मिसफायर होकर गोली गोविंदा के पैर में लग गई। तत्काल गोविंदा को अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उनके पैर की सर्जरी हुई है। अब वह ठीक बताए जा रहे हैं। गोविंदा को गोली लगने की खबर सुनकर उनके प्रशंसक चिंतित हैं। फैंस उनके जल्द ठीक होने की दुआ कर रहे हैं।

कृषि संबंधी समस्याओं के लिए राज्य सरकारों से करेंगे बात : शिवराज सिंह

एजेंसी। नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान मंगलवार को अपने आवास पर किसान संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने प्रतिनिधियों से कृषि से संबधित समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे उनकी समस्याओं का केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस संबंध में वे राज्यों से बातचीत करेंगे। किसान प्रतिनिधियों से मुलाकात के बाद शिवराज सिंह चौहान ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि कृषि से संबधित छोटी-छोटी समस्याओं का समय रहते निदान होने पर उत्पादन में 10 से 20 फीसदी तक वृद्धि हो जाती है। किसान संगठनों मिले सुझाव और उनके सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा की गई है। इसके लिए राज्य सरकारों से बात की जाएगी और समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जाएगा। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि किसान संगठनों का कहना है कि सरकारी योजनाओं की जानकारी किसानों तक नहीं पहुंच रही है। सभी किसानों की फसलों का बीमा नहीं हो पा रहा है। जानकारी के अभाव में अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी किसानों क नहीं मिल रहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि किसान संगठनों ने उनसे खेतों में जल जमाव पर भी चिंता जताई है। उनकी चिंता है कि इससे फसलों की उत्पादकता प्रभावित होती है। वे सरकार से खेतों में होनेवाले जल जमाव की समस्या को दूर करने के उपाय चाहते हैं। शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि किसान संगठनों की राय है कि अत्यधिक रसायनिक खाद व कीटनाशक के उपयोग से धरती को नुकसान पहुंच रहा है। वे इस दिशा में सरकार से मदद चाहते हैं कि कीटनाशक व रसायनिक खाद का कम से कम उपयोग हो, इसका रास्ता निकाला जाए। इस दिशा में सरकार कृषि विज्ञानिकों से विचार-विमर्श कर सलाह देती रहती है। विभिन्न माध्यमों से किसानों को जागरूक किया जाता रहा है। अब इस समस्या का समाधान करने में तेजी लाई जाएगी। उल्लेखनीय है कि कृषि मंत्री ने प्रत्येक माह के पहले मंगलवार को किसानों के साथ बैठक कर चर्चा करने का निर्णय लिया है।

हरियाणा में एक ही नारा 'भरोसा दिल से, भाजपा फिर से' : मोदी

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री ने हरियाणा के पलवल में किया चुनावी सभा को संबोधित

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हरियाणा के पलवल में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा के समर्थन की लहर हर गांव में फैल रही है और एक ही नारा गूंज रहा है- भरोसा दिल से, भाजपा फिर से। प्रधानमंत्री मोदी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा कि हरियाणा का ट्रैक रिकॉर्ड लगातार दिल्ली की राजनीतिक भावनाओं को दशार्ता है। दिल्ली में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार चुनने के बाद, यह स्पष्ट है कि हरियाणा भी इसी राह पर चलने के लिए तैयार है, जिससे यहां भी भाजपा सरकार का तीसरा कार्यकाल तय है। प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा की भावना को याद करते हुए कहा कि यह एक ऐसी भूमि है, जिसने दुनिया को भगवद गीता की शिक्षा दी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हरियाणा ने हमेशा कड़ी मेहनत का मूल्य सिखाया है और लोगों से समर्पण के साथ काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कांग्रेस पार्टी की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस का फॉर्मूला है- ना काम करो और ना दूसरों को काम करने दो। कांग्रेस की राजनीति केवल झूठे वादों तक सीमित रहती है, जबकि भाजपा की राजनीति मेहनत और परिणामों पर टिकी है। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस के भ्रष्टाचार की हदें उजागर करते हुए कहा कि जब 1 रुपया भेजा जाता था, तो गरीबों तक सिर्फ 15 पैसे ही पहुंचते थे।

राजनाथ ने वायु वीर विजेता कार रैली को किया रवाना

दुनिया के सबसे ऊंचे वायु सेना स्टेशनों में से एक थोइस में होगा समापन

एजेंसी। नई दिल्ली

भारतीय वायु सेना की 92वीं वर्षगांठ पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक से वायु वीर विजेता कार रैली को गर्मजोशी से रवाना किया। इसके साथ ही महिलाओं सहित 50 से अधिक वायु योद्धा लद्दाख के थोइस के लिए रवाना हो गए हैं। यह सभी अरुणाचल प्रदेश के तवांग तक एक अभियान पर निकलेंगे, जो नौ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) से होकर कुल सात हजार किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। कार रैली के विभिन्न चरणों में पूर्व वायु सेना प्रमुख भी जगह-जगह शामिल होंगे। इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने कठिन परिस्थितियों में वीरता, समर्पण और देशभक्ति के साथ मातृभूमि की सेवा करने वाले वायु योद्धाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय वायु सेना ने देश और उसके लोगों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। यह देश के दुश्मनों को उनके क्षेत्र में अंदर तक घुसकर मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। केंद्र सरकार भारतीय वायु सेना को सबसे उन्नत विमानों, प्लेटफॉर्मों से लैस करने और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के माध्यम से उन्हें और अधिक सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि कार रैली के दौरान वायु योद्धा विभिन्न राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों के स्कूलों और कॉलेजों में युवाओं के साथ बातचीत करेंगे। राजनाथ सिंह ने कठिन और विविध इलाकों से होकर गुजरने वाली इस रैली का हिस्सा बनने वाले वायु योद्धाओं को अपनी शुभकामनाएं दीं। औपचारिक ध्वजारोहण 8 अक्टूबर को थोइस में होगा, जो समुद्र तल से 3,068 मीटर की ऊंचाई पर दुनिया के सबसे ऊंचे वायु सेना स्टेशनों में से एक है। 29 अक्टूबर को तवांग में रैली के समापन से पहले वायु योद्धा लेह, कारगिल, श्रीनगर, जम्मू, चंडीगढ़, देहरादून, आगरा, लखनऊ, गोरखपुर, दरभंगा, बागडोगरा, हासीमारा, गुवाहाटी, तेजपुर और दिरांग में रुकेंगे।

आज का राशिफल

मेष : मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श होगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। सभी का सहयोग मिलेगा।

वृष : दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी के कारण तनाव पैदा हो सकता है। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। आवेग में आकर किये गए कार्यों का मलाल, अवसाद रहेगा। उतावलेपन से बचें। प्रेमभाव बढ़ेगा।

मिथुन : घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। मनोरथ सिद्धि का योग है। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे।

कर्क : सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। प्रेमभाव बढ़ेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा।

सिंह : कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे।

कन्या : आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा।

तुला : व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संताप को कष्ट अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय समान रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। मेल-मिलाप से कोशिश सफल होगी।

वृश्चिक : कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें, क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा।

धनु : यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी।

मकर : मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। सफलता मिलेगी।

कुंभ : परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। सफलता मिलेगी।

मीन : अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। इच्छित कार्य सफल होंगे। सुख-आनंद कारक समय है।

नैनीताल के आसमान में दिखा दुर्लभ खगोलीय नजारा

नैनीताल। नैनीताल के आसमान में एक रोमांचक और दुर्लभ खगोलीय नजारा रिकॉर्ड किया गया है। यहां धूमकेतु सी/2023 ए-3 सुचिनशान एवं एटलस यानी एस्ट्रोइड टेरेस्ट्रियल एंड इंमैक्ट लास्ट अलर्ट सिस्टम को नैनीताल के आकाश से गुजरते हुए देखा गया। एक एस्ट्रो फोटोग्राफर ने इसे अपने कैमरे में कैद करने में भी सफलता पाई है। इस धूमकेतु पर एरीज के वैज्ञानिक भी नजर रखे हैं। वैज्ञानिक के अनुसार इसे 12-13 अक्टूबर को भी बिना किसी उपकरण के आंखों से देखा जा सकता है। बताया गया है कि धूमकेतु सी/2023 ए-3 सुचिनशान एवं एटलस को जनवरी 2023 में जिजियांग वेधशाला, चीन, एटलस, हवाई ने खोजा था। विशेषज्ञों ने बताया था कि यह धूमकेतु सूर्य के काफी नजदीक से गुजरने वाला है और यह वर्ष के सबसे चमकीले खगोलीय पिंडों में से एक हो सकता है। इसकी चमक लगातार बढ़ रही है और इस माह के दौरान सर्वाधिक करीब से नग्न आंखों से यानी बिना किसी उपकरण के भी उत्तरी गोलार्ध के आकाश में सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद पश्चिम दिशा में देखा जा सकेगा।

केदारनाथ धाम दर्शन को पहुंचे प्रधानमंत्री के भाई पंकज मोदी

केदारनाथ धाम। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छोटे भाई पंकज मोदी मंगलवार को भगवान केदारनाथ के दर्शन के लिए धाम पहुंचे। केदारनाथ का जलाभिषेक कर उन्होंने जनकल्याण की कामना की। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने हेलीपैड पर उनकी अगवानी की और तीर्थ पुरोहितों सहित मंदिर समिति ने हैलीपेड पर पंकज मोदी का स्वागत किया। इसके पश्चात पंकज मोदी सीधे केदारनाथ मंदिर पहुंचे। भगवान केदारनाथ का जलाभिषेक किया और रूद्राभिषेक पूजा संपन्न की।

सुपरस्टार रजनीकांत की तबीयत अचानक बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

एजेंसी। मुंबई

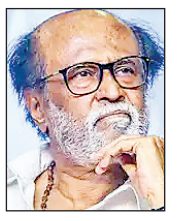

सुपरस्टार रजनीकांत की हालत अचानक बिगड़ने पर उन्हें चेन्नई के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पेट दर्द की शिकायत के बाद रजनीकांत को सोमवार रात अस्पताल में भर्ती कराया गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, आधी रात को रजनीकांत ने पेट दर्द की शिकायत की। 73 वर्षीय रजनीकांत की हालत अब स्थिर है और कुछ मेडिकल टेस्ट के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी जाएगी। रजनीकांत की पत्नी लता ने उनकी सेहत पर अपडेट दिया है। हालांकि, उन्होंने ज्यादा जानकारी नहीं दी है। उन्होंने कहा कि फिलहाल सबकुछ ठीक है। रजनीकांत के अस्पताल में भर्ती होने की खबर के बाद बड़ी संख्या में उनके प्रशंसक सोशल मीडिया पर रजनीकांत के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर लगे सहायक उपकरण वितरण शिविर

नई दिल्ली। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ वीरेंद्र कुमार ने मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के मौके पर देश भर के 51 स्थानों पर लगाए गए सहायक उपकरण वितरण शिविर का उद्घाटन किया। नई दिल्ली स्थित डॉ अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अंतर्गत शिविरों में वरिष्ठ नागरिकों को दैनिक दिनचर्या में सहायक उपकरण प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में राज्य मंत्री बीएल वर्मा भी मौजूद रहे।

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा की पहली महिला महानिदेशक बनीं आरती सरीन

एजेंसी। नई दिल्ली

शल्य चिकित्सक वाइस एडमिरल आरती सरीन, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (डीजीएएफएमएस) की पहली महिला महानिदेशक बनी हैं। वाइस एडमिरल आरती सरीन ने 1 अक्टूबर 2024 को सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा की महानिदेशक का पदभार संभाला। वह यह पदभार संभालने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। सुप्रीम कोर्ट द्वारा मेडिकल प्रोफेशनल्स के लिए सुरक्षित कार्य स्थितियों और प्रोटोकॉल तैयार करने के लिए हाल ही में आरती सरीन को राष्ट्रीय टास्क फोर्स के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया है। वाइस एडमिरल आरती सरीन को भारतीय सशस्त्र बलों की तीनों शाखाओं में सेवाएं देने का दुर्लभ गौरव प्राप्त है। उन्हें भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट से कैप्टन तक, भारतीय नौसेना में सर्जन लेफ्टिनेंट से सर्जन वाइस एडमिरल तक तथा भारतीय वायु सेना में एयर मार्शल के रूप में कार्य करने का अनुभव है। 46वें डीजीएएफएमएस के रूप में पदभार संभालने से पहले, वाइस एडमिरल आरती सरीन ने डीजी मेडिकल सर्विसेज (नौसेना), डीजी मेडिकल सर्विसेज (वायु) और पुणे स्थित सशस्त्र बल चिकित्सा महाविद्यालय के निदेशक और कमांडेंट के पदों पर कार्य किया है। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक वाइस एडमिरल आरती सरीन, एएफएमसी, पुणे की पूर्व छात्रा हैं। उन्होंने दिसंबर 1985 में सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं में कार्यभार संभाला था। वह एएफएमसी, पुणे से रेडियो डायग्नोसिस में एमडी हैं। मुंबई के टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल से रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड होने के साथ ही उन्होंने पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से गामा नाइफ सर्जरी में प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। अपने 38 वर्षों के कार्यकाल में वाइस एडमिरल आरती सरीन, ने प्रोफेसर और प्रमुख, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी, आर्मी हॉस्पिटल में काम किया है। वह कमांड हॉस्पिटल पुणे में कमांडिंग ऑफिसर रह चुकी हैं। उन्होंने दक्षिणी और पश्चिमी नौसेना कमान में कमांड मेडिकल ऑफिसर के पदों पर कार्य किया है। वाइस एडमिरल आरती सरीन को वर्ष 2024 में अति विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया था। इससे पहले उन्हें वर्ष 2021 में विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें विशिष्ट सेवा के लिए चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ प्रशस्ति (2017), चीफ ऑफ नेवल स्टाफ प्रशस्ति (2001) और जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ प्रशस्ति (2013) से भी सम्मानित किया गया है।

सुकन्या समृद्धि योजना के नियमों में हुआ है बड़ा बदलाव

नई दिल्ली। सितंबर खत्म हो गया है और अक्टूबर का आगाज हो गया। ऐसे में नए महीने की शुरुआत होते ही सुकन्या समृद्धि योजना में बड़ा बदलाव हुआ है। नए नियम के मुताबिक, सुकन्या समृद्धि योजना के खातों का संचालन बेटी के कानूनी अभिभावक या उसके माता-पिता ही कर सकते हैं। सुकन्या समृद्धि योजना की शुरुआत पीएम मोदी ने साल 2015 में की थी। पीएम मोदी ने बेटियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस योजना को शुरू करने का निर्णय लिया था, ताकि माता-पिता को कम उम्र से ही अपनी बेटी के लिए बचत शुरू करने को प्रोत्साहित किया जा सके। एक बेटी के नाम पर केवल एक ही सुकन्या समृद्धि खाता खोला जा सकता है। इस योजना में महज 250 रुपये से अकाउंट को ओपन कराया जा सकता है। सरकार की ओर से इस योजना में लगभग आठ फीसद से अधिक ब्याज मिलता है। इस खाते को बेटी के जन्म के समय या फिर 10 साल की उम्र तक ही खोला जा सकता है।अगर आपको सुकन्या समृद्धि योजना में खाता खुलवाना हो, तो आप अपने घर के पास स्थित डाकघर या इस योजना के तहत पंजीकृत बैंक के कार्यालय जा सकते हैं।

उत्तर बिहार में हाहाकार अररिया में दो की मौत

एजेंसी। पटना

नेपाल की बारिश से उत्तर बिहार में आई बाढ़ रोज नए क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है। पश्चिम चंपारण-पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी के बाद यह अब मुजफ्फरपुर और दरभंगा के नए इलाकों में फैलने लगा है, जिससे बाढ़ क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए मुसीबत खड़ी हो गई है। अररिया जिले में मंगलवार को बाढ़ के पानी से दो शवों को निकाला गया है। अररिया में बाढ़ के पानी में डूबने से दो की मौत हो गई है। अररिया में बहने वाली नदियों के जलस्तर में इजाफा के कारण निचले इलाकों में फैले पानी के कारण उत्पन्न बाढ़ की समस्या के बीच मंगलवार को एक किशोरी समेत एक अन्य युवक के शव मिले हैं। दोनों मामले दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों रानीगंज और जोकीहाट के हैं। जोकीहाट थाना क्षेत्र के धनपुरा के पास बलुआ धार में डूबने से हबीबा नाम की किशोरी की मौत हो गई। दूसरा मामला, रानीगंज थाना क्षेत्र के कोशकापुर उत्तर पंचायत का है। यहां वार्ड संख्या एक नित्यानंद ऋषिदेव टोला के रहने वाले 40 वर्षीय सिकेंद्र ऋषिदेव खेत मवेशी लाने के क्रम में गहरे पानी में डूब गया।

नीतीश और चिराग ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया दौरा

नेपाल के तराई क्षेत्र में हुई भारी बारिश ने उत्तर बिहार के 12 जिलों का हाल बेहाल कर रखा है। बीते 28 सितंबर को कोसी बराज (सुपौल जिला) और गंडक बराज (पश्चिम चंपारण) जिले से 11 लाख क्यूसेक पानी डिस्चार्ज होने के बाद उत्तर बिहार के करीब सभी जिले बाढ़ की चपेट में हैं। बाढ़ की विभिषिका को देखते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने मंगलवार को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। सहरसा में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण करने पहुंचे चिराग ने कहा कि प्रत्येक वर्ष आने वाली इस त्रासदी से निबटने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। चिराग पासवान यहां सड़क मार्ग से नवहट्टा स्थित ई-2 घाट पहुंचे, जहां से नाव के जरिए बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का मुआयना करते हुए केदली गांव पहुंचे।

गांधीजी ने देश को अंग्रजी हुकूमत से मुक्त कराने को किया था **संघर्ष**

सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया था

अहिंसा की वह राह जिस पर चलते हुए गांधीजी ने निभाई

आजादी में बड़ी भूमिका

गांधी जी की शिक्षा-दीक्षा : गांधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबंदर में हुई थी। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की, इसके बाद इनके पिता का राजकोट ट्रांसफर हो जाने की वजह से उन्होंने राजकोट से अपनी बची हुई शिक्षा पूरी की। साल 1887 में राजकोट हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिये भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया, लेकिन घर से दूर रहने के कारण वह अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाएं और अस्वस्थ होकर पोरबंदर वापस लौट गए। 4 सितम्बर 1888 को इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुए। गांधीजी ने लंदन में लंदन वेजीटेरियन सोसायटी की सदस्यता ग्रहण की और इसके कार्यकारी सदस्य बन गये। गांधी जी लंदन वेजीटेरियन सोसाइटी के सम्मेलनों में भाग लेने लगे और पत्रिका में लेख लिखने लगे। यहां 3 सालों (1888-1891) तक रहकर अपनी बैरिस्टरी की पढ़ाई पूरी की और सन 1891 में वापस भारत आ गए।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर में 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद गांधी और माता का नाम पुतलीबाई था। ब्रिटिश हुकूमत में इनके पिता पोरबंदर और राजकोट के दीवान थे। महात्मा गांधी का असली नाम मोहनदास करमचंद गांधी था और यह अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। गांधी जी का सीधा-सरल जीवन इनकी मां से प्रेरित था। गांधी जी का पालन-पोषण वैष्णव मत को मानने वाले परिवार में हुआ, और उनके जीवन पर भारतीय जैन धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण वह सत्य और अहिंसा में अटूट विश्वास करते थे और आजीवन उसका अनुसरण भी किया। 2 अक्टूबर को देश भर में गांधी जयंती मनायी जाती है। इस साल महात्मा गांधी की 155वां जयंती मनाया जाएगा. गांधी जी ने देश को अंग्रेजी हुकूमत से आजादी दिलाने में काफी बलिदान दिए और संघर्ष किया. अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है. इन सारी बातों को कोई कभी भी नहीं भूल सकता. हमेशा अहिंसा की राह पर चलते हुए आजादी की लड़ाई लड़ी. भारतवर्ष को ब्रिटिश राज से आजाद कराया.

गांधी जयंती

विशेष

गांधी जी का वैवाहिक जीवन

गांधी जी का विवाह सन 1883 में मात्र 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा से हुआ था। लोग उन्हें प्यार से 'बा' कहकर पुकारते थे। कस्तूरबा गांधी के पिता एक धनी व्यवसायी थे । शादी से पहले तक कस्तूरबा पढ़ना-लिखना नहीं जानती थीं। गांधी जी ने उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाया। एक आदर्श पत्नी की तरह बा ने गांधी जी का हर एक काम में साथ दिया। साल 1885 में गांधी जी की पहली संतान ने जन्म लिया, लेकिन कुछ समय बाद ही निधन हो गया था।

गांधी जी बने राष्ट्रपिता

4 जून 1944 को सिंगापुर में एक रेडियो मैसेज देते हुए नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी को देश का पिता (राष्ट्रपिता) कहकर संबोधित किया था। आगे चलकर भारत सरकार ने इस नाम को मान्यता दी। हालांकि गांधी जी को बापू इससे बहुत पहले से कहा जाता था। इतिहासकारों के अनुसार, 1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान एक किसान ने उन्हें बापू (पिता) कहकर संबोधित किया था।

अंतिम यात्रा...

30 जनवरी 1948 को, उनके उपर बम फेंके जाने के दस दिन बाद, गांधी को जब वे बिरला भवन में एक प्रार्थना सभा को संबोधित करने मंच पर जा रहे थे, गोली मार दी गई। गांधी जी गिर गये और उनके होठों से 'हे राम! हे राम!' शब्द निकले। 1919 से 1948 में उनकी मृत्यु तक, वे भारत के केंद्र में रहे और उस महान ऐतिहासिक नाटक के मुख्य नायक रहे जिसकी परिणति उनके देश की आजादी के रुप में हुई। उन्होंने भारत के राजनैतिक परिदृश्य का पूरा चरित्र बदल दिया। जो कभी अछूत माने जाते थे उनके लिए भी उन्होंने जो किया वो कम महत्व का नहीं था। उन्होंने लाखों लोगों को जाति अत्याचार और सामाजिक अपमान के बंधनों से मुक्त कर दिया। उनके व्यक्तित्व के नैतिक प्रभाव और अहिंसा की तकनीक की तुलना नहीं की जा सकती। और ना ही इसकी कीमत किसी देश या पीढ़ी तक सीमित है। यह मानवता के लिए उनका अविनाशी उपहार है।

21 जुलाई, 1906 को गांधी जी ने भारतीय जनमत इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 2 भारतीयनिवासियों के विरुद्ध चलाए गए ऑपरेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है।

महात्मा गांधी शाकाहारी भोजन को देते थे बढ़ावा

अपने 19वें जन्मदिन से लगभग एक महीने पहले ही 4 सितम्बर 1888 को गांधी यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने और बैरिस्टर बनने के लिये इंग्लैंड चले गये। भारत छोड़ते समय जैन भिक्षु बेचारजी के समक्ष हिन्दुओं को मांस, शराब तथा संकीर्ण विचारधारा को त्यागने के लिए अपनी अपनी माता जी को दिए गये एक वचन ने उनके शाही राजधानी लंदन में बिताये गये समय को काफी प्रभावित किया। हालांकि गांधी जी ने अंग्रेजी रीति रिवाजों का अनुभव भी किया जैसे उदाहरण के तौर पर नृत्य कक्षाओं में जाने आदि का। फिर भी वह अपनी मकान मालकिन द्वारा मांस एवं पत्ता गोभी को हजम.नहीं कर सके। उन्होंने कुछ शाकाहारी भोजनालयों की ओर इशारा किया। अपनी माता की इच्छाओं के बारे में जो कुछ उन्होंने पढा था उसे सीधे अपनाने की बजाय उन्होंने बौद्धिकता से शाकाहारी भोजन का अपना भोजन स्वीकार किया। उन्होंने शाकाहारी समाज की सदस्यता ग्रहण की और इसकी कार्यकारी समिति के लिये उनका चयन भी हो गया जहाँ उन्होंने एक स्थानीय अध्याय की नींव रखी। बाद में उन्होने संस्थाएँ गठित करने में महत्वपूर्ण अनुभव का परिचय देते हुए इसे श्रेय दिया। वे जिन शाकाहारी लोगों से मिले उनमें से कुछ थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य भी थे। इस सोसाइटी की स्थापना 1875 में विश्व बन्धुत्व को प्रबल करने के लिये की गयी थी और इसे बौद्ध धर्म एवं सनातन धर्म के साहित्य के अध्ययन के लिये समर्पित किया गया था।

उन्हों लोगों ने गांधी जी को श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ने के लिये प्रेरित किया। हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम और अन्य धर्मों .के बारे में पढ़ने से पहले गांधी ने धर्म में विशेष रुचि नहीं दिखायी। इंग्लैंड और वेल्स बार एसोसिएशन में वापस बुलावे पर वे भारत लौट आये किन्तु बम्बई में वकालत करने में उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। बाद में एक हाई स्कूल शिक्षक के रूप में अंशकालिक नौकरी का प्रार्थना पत्र अस्वीकार कर दिये जाने पर उन्होंने जरूरतमन्दों के लिये मुकदमे की अर्जियाँ लिखने के लिये राजकोट को ही अपना स्थायी मुकाम बना लिया। परन्तु एक अंग्रेज अधिकारी की मूर्खता के कारण उन्हें यह कारोबार भी छोड़ना पड़ा। अपनी आत्मकथा में उन्होंने इस घटना का वर्णन अपने बड़े भाई की ओर से परोपकार की असफल कोशिश के रूप में किया है। यही वह कारण था जिस वजह से उन्होंने सन् 189* में एक भारतीय फर्म से नेटाल दक्षिण अफ्रीका में, जो उन दिनों ब्रिटिश साम्राज्य का भाग होता था, एक वर्ष के करार पर वकालत का कारोवार स्वीकार कर लिया।

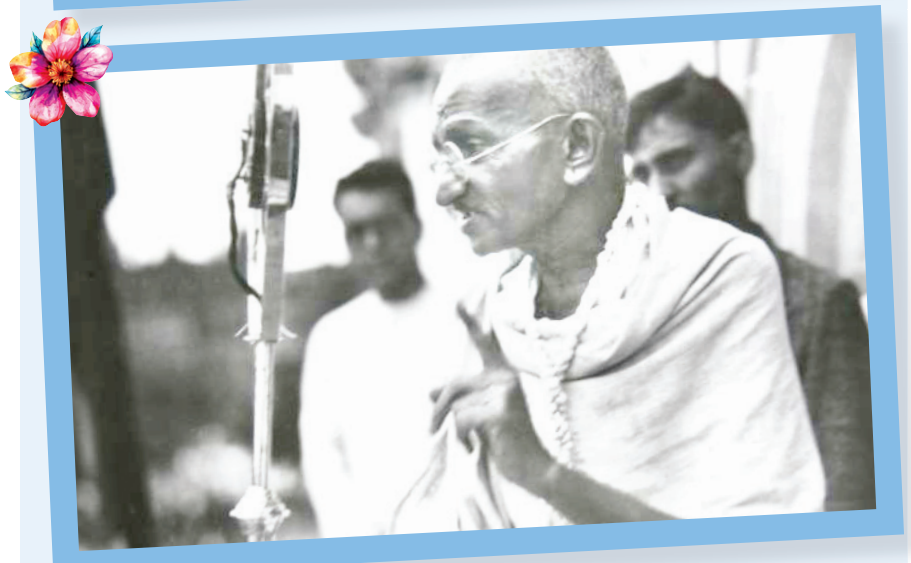

12 फरवरी वर्ष 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि कलश जिन 12 तटों पर विसर्जित किए गए थे, त्रिमोहिनी संगम भी उनमें से एक है।

1921 दिसंबर में गांधीजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यकारी अधिकारी नियुक्त हुए थे।

दक्षिण अफ्रीका (1893-1914) में नागरिक अधिकार आंदोलन

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुईं। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

गांधीजी कस्तूरबा को प्यार से बा कहकर पुकारा करते थे

वर्ष की आयु पूर्ण करते ही उनका विवाह 14 वर्ष की कस्तूर बाई मकनजी से कर दिया गया। पत्नी का पहला नाम छोटा करके कस्तूरबा कर दिया गया और उसे लोग प्यार से बा कहते थे। यह विवाह उनके माता पिता द्वारा तय किया गया व्यवस्थित बाल विवाह था जो उस समय उस क्षेत्र में प्रचलित था। परन्तु उस क्षेत्र में यही रीति थी कि किशोर दुल्हन को अपने माता पिता के घर और अपने पति से अलग अधिक समय तक रहना पड़ता था। 1885 में जब गान्धी जी 15 वर्ष के थे तब इनकी पहली सन्तान ने जन्म लिया। किन्तु वह केवल कुछ दिन ही जीवित रही। और इसी वर्ष उनके पिता करमचन्द गांधी भी चल बसे। मोहनदास और कस्तूरबा के चार सन्तान हुईं जो सभी पुत्र थे। हरीलाल गान्धी 1888 में, मणिलाल गान्धी 1892 में, रामदास गान्धी 1897 में और देवदास गांधी 1900 में जन्मे। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल और राजकोट से हाई स्कूल किया। दोनों परीक्षाओं में शैक्षणिक स्तर वह एक साधारण छात्र रहे।

गांधीजी की चंपारण सत्याग्रह आंदोलन में थी अहम भूमका

गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नील नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी।

महालया आज

महालया अमावस्या पर पूजा : विधि की बात करें तो सुबह जल्दी उठकर स्नान कर लें। इसके बाद दक्षिण दिशा में पितरों को जल अर्पित करें। इसके बाद घर पर सात्विक भोजन बनाकर पितरों के नाम का भोजन निकालकर दक्षिण दिशा में रख दें। फिर ब्राह्मण, गरीब, गाय, कुत्ता और कौए के लिए भी भोजन खिलाएं। मान्यता है कि इससे पितरों की आत्मा को शांति मिलती है. शाम के समय दक्षिण दिशा में दीया भी जलाएं।

जरूर करें ये पाठ

आप माता रानी की कृपा के लिए महालया के विशेष दिन पर दुर्गा सप्तशती श्लोक का पाठ कर सकते हैं। इससे आपको जीवन में बेहतर परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

15 दिनों के पितृ पक्ष के बाद धरती पर देवी के आगमन के साथ देवी पक्ष प्रारंभ होता है। इसी संधी काल में देवी के आगमन का आह्वान मंत्र को महालया कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष अश्विन माह कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि के ब्रह्म मुहुर्त में महालया का वाचन होता है। महालया के दिन सुबह पितरों का श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान करके उनको श्रद्धापूर्वक विदा किया जाता है और शाम को देवी भगवती की विधिवत पूजा की जाती है। महालया महा+आलय शब्द से मिलकर बना है। इसका मतलब है महान आलय या देवी का आवास। महालया के दिन मां पार्वती अपने मायके आने के लिए कैलाश पर्वत से विदा लेती हैं। इसलिए महालया के दिन मां की अगवानी में वंदना की जाती है और स्वागत के लिए खास प्रार्थना की जाती है। 1931 में पहली बार महिषासुरमर्दिनी नाटक कलकत्ता रेडियो स्टेशन से प्रसारित किया गया था। इसी नाटक में बीरेंद्र कृष्ण भद्र के स्वर में इसे पहली बार महालया का अखिल भारतीय स्तर पर प्रसारण हुआ। नाटक के लेखक वाणी कुमार थे और पंकज कुमार मल्लिक ने इसे संगीतबद्ध किया था। आज भी हम महालया सुनते हैं, वैसे तो कालांतर में इसे कई कलाकारों ने इसे आवाज दिया लेकिन अब भी सबसे ज्यादा बीरेंद्र कृष्ण भद्र के गाए महालया को मां के भक्त पसंद करते हैं।

जागो तुमी जागो, जागो दुर्गा जागो दस पहर धारिणी

महालया के साथ शुरू होती है मां के नौ रूपों की पूजा...

हिंदू धर्म में नवरात्रि के 9 दिनों में मां दुर्गा के नौ अलग-अलग स्वरूपों की पूजा-आराधना का बड़ा महत्व है। शारदीय नवरात्रि से ही त्योहारों की शुरूआत होती है। महालया के अगले दिन से ही नवरात्रि की शुरूआत होती है। इस साल 02 अक्टूबर को महालया है। धार्मिक मान्यता है कि महालया पर्व से ही देवी भगवती कैलाश पर्वत से अपनी यात्राएं शुरू करती है। मान्यता है कि मां दुर्गा, गणेश, कार्तिकेय, लक्ष्मी और सरस्वती के साथ अपने पंसदीदा वाहन पर सवार होकर धरती लोक पर आती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, महालया के दिन मां दुर्गा धरती लोक पर आती हैं। इस दिन देवी भगवती जोश-उत्साह और विधि-विधान से पूजा-अर्चना के साथ उनका भव्य स्वागत किया जाता है। नवरात्रि के दौरान मां दुर्गा की पूजा-आराधना से सभी कष्ट दूर होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है। यदि महालया देवी दुर्गा मनुष्यों के बीच नहीं आतीं तो नवरात्रि के नौ दिनों तक देवी मां के विभिन्न रूपों की पूजा संभव नहीं हो पाती। इस प्रकार महालया, नवरात्रि के उत्सवों को शुरू करने का एक तरीका है। नवरात्रि में देवी दुर्गा की पूजा करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है और सुख, समृद्धि और शक्ति की प्राप्ति होती है।

दुर्गा सप्तशती श्लोक

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो: स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिर्द्य दु:ख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।
शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।
सर्वस्वरुपे सवेर्शे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते।।
रोगानशेषानपंहसि तुष्टारुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतां प्रयान्ति।।
सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यम् अस्मद् वैरि विनाशनम्।।

शारदीय नवरात्र 2024 कैलेंडर

महालया-(2 अक्टूबर, सोमवार) मां दुर्गा का आगमन
पहला दिन- (3 अक्टूबर, मंगलवार) मां शैलपुत्री की पूजा
दूसरा दिन- (4 अक्टूबर, बुधवार) मां ब्रह्मचारिणी की पूजा
तीसरा दिन- (5 अक्टूबर गुरुवार) मां चंद्रघंटा की पूजा
चौथा दिन- (6 अक्टूबर शुक्रवार) मां कूष्मांडा की पूजा
पांचवा दिन-(7 अक्टूबर, शनिवार) मां स्कंदमाता की पूजा
छठा दिन- (8 अक्टूबर, रविवार) मां कात्यायनी की पूजा
सातवां दिन- (9 अक्टूबर सोमवार) मां कालरात्रि की पूजा
आठवां दिन-10 अक्टूबर मंगलवार मां महागौरी की पूजा
नौवां दिन- (11 अक्टूबर बुधवार) मां सिद्धिदात्री की पूजा
दसवां दिन-12 अक्टूबर गुरुवार विजयादशमी या दशहरा

महिषासुर को हराने के लिए हुई प्रकट हुई थीं मां दुर्गा

माना जाता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने राक्षस राज महिषासुर को हराने के लिए मां दुर्गा की रचना की थी। राक्षस राजा को एक वरदान मिला था, इसलिए उसे कोई भी देवता या मनुष्य नहीं मार सकता। ऐसे में जब देवता राक्षस राजा से हार गए, तो उन्होंने आदि शक्ति से मदद मांगी और मां दुर्गा ने राक्षस राजा महिषासुर को हरा दिया। बताया जाता है कि लड़ाई के दौरान, देवी को लड़ने के लिए देवताओं द्वारा कई हथियार दिए गए थे। इसलिए, मां दुर्गा को शक्ति की देवी कहा जाता है। दुर्गा पूजा के नौ दिनों में लोग मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। माता रानी का पहला रूप मां शैलपुत्री, दूसरा रूप मां बह्मचारिणी, तीसरा रूप मां चंद्रघंटा, चौथा रूप मां कूष्मांडा, पांचवां रूप मां स्कंदमाता, छठा रूप मां कात्यायनी, सातवां रूप मां कालरात्रि, आठवां रूप मां महागौरी, नौवां रूप मां सिद्धिदात्री है। कई तस्वीरों और प्रतिमाओं में माता दुर्गा को 10 भुजाओं के साथ देखा जाता है।

महालया से शुरु हो जाती है शक्ति की पूजा

सनातन धर्म में दुर्गा पूजा का उत्सव बहुत धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसका शास्त्रों में बहुत ही महत्व है। महालया सर्व पितृ अमावस्या के दिन मनाई जाती है। इस दिन को महालया अमावस्या के नाम से भी जाना जाता है। महालया के दिन से ही बंगाल में दुर्गा पूजा का उत्साह देखने को मिलता है। महालया के दिन ब्रह्माण भोजन कराया जाता है और दान किये जाते हैं। मां दुर्गा की उत्पति ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने राक्षस राजा महिषासुर को हराने के लिए किया था। तब से ही नवरात्रि के समय में मां दुर्गा की पूजा की जाती है।

भारत ने बांग्लादेश को 7 विकेट से हराया

दो मैचों की श्रृंखला में किया क्लीन स्विप

कानपुर, (हि.स.)। भारत ने यहां ग्रीन पार्क में खेले जा दूसरे टेस्ट मैच में लगभग ढाई दिन बारिश के कारण रद्द होने के बावजूद बांग्लादेश को 7 विकेट से हराकर दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला 2-0 अपने नाम किया।

इस मैच में टॉस जीतकर भारतीय टीम ने बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर समेट दी और उसके बाद तेजी से खेलते हुए अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 285 रन बनाकर घोषित की और पहली पारी के आधार पर 52 रनों की बढ़त हासिल की। दूसरी पारी में बांग्लादेश की टीम 146 रन पर सिमट गई थी, जिसके बाद भारत को केवल 95 रनों का लक्ष्य मिला। 95 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 17.2 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर 98 रन बनाकर मैच जीत लिया। दूसरी पारी में भारत के लिए सलामी बल्लेबाज यशस्वी जयसवाल ने शानदार अर्धशतक लगाते हुए 51 रन बनाए। यशस्वी के अलावा विराट कोहली ने 29 रनों की नाबाद पारी खेली। कोहली के साथ ऋषभ पंत भी 4 रन बनाकर नाबाद लौटे। कप्तान रोहित शर्मा ने 8 और शुंभमन गिल ने 6 रन बनाए।

बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर सिमटी

इससे पहले बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर सिमट गई थी। मोमिनुल हक ने नाबाद शतकीय पारी खेलते हुए 107 रन बनाए। मोमिनुल के अलावा शादमान इस्लाम ने 24, कप्तान नजमुल हसन शांतों ने 31 और मेहदी हसन मिराज ने 20 रन बनाए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने 3, रविचंद्रन अश्विन, मोहम्मद सिराज और आकाश दीप ने 2-2 व रवींद्र जडेजा ने 1 विकेट लिया।

दूसरी पारी में बांग्लादेशी बल्लेबाजों ने टेके घुटने

बांग्लादेश की दूसरी पारी की शुरूआत खराब रही भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने जाकिर हसन को एलबीडब्ल्यू आउट कर भारत को पहली सफलता दिलाई। जाकिर ने 10 रन बनाए। अश्विन ने बांग्लादेश का दूसरा विकेट भी झटका। उन्होंने हसन महमूद बोल्ड कर पवेलियन भेजा। हसन ने चार रन बनाए। बांग्लादेश का तीसरा विकेट पहली पारी के शतकवीर मोमिनुल हक के रूप में गिरा। हक को अश्विन ने 36 रनों के कुल योग पर पवेलियन भेजा। हक ने 2 रन बनाए। इसके बाद बांग्लादेश के विकेट नियमित अंतराल पर गिरते रहे और पूरी टीम 146 रनों पर सिमट गई। दूसरी पारी में बांग्लादेश के लिए केवल शादमान इस्लाम और मुश्फिकुर रहीम ही कुछ टिक कर खेल सके। शादमान ने शानदार अर्धशतक लगाते हुए 50 रन बनाए, जबकि मुश्फिकुर ने 37 रन बनाए।

भारत ने अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 285 रन बनाकर की घोषित

इससे पहले भारतीय टीम ने अपनी पहली पारी में ताबड़तोड़ शुरूआत की। कप्तान रोहित शर्मा ने यशस्वी जायसवाल के साथ मिलकर शुरूआती तीन ओवर में ही 50 रन का आकड़ा पार कर लिया। चौथे ओवर में 55 के स्कोर पर भारतीय टीम का पहला विकेट गिरा। कप्तान रोहित 11 गेंद में एक चौका और तीन छक्कों की मदद से 23 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद यशस्वी जायसवाल ने भी तेजी से बल्लेबाजी करते हुए 31 गेंद में अर्धशतक जड़ दिया। यशस्वी 51 गेंदों पर ताबड़तोड़ 72 रनों की पारी खेलकर आउट हुए। चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत आए। उन्होंने शुभमन गिल के साथ पारी को आगे बढ़ाया। भारतीय टीम को 141 के स्कोर पर तीसरा झटका लगा। शुभमन 36 गेंद में चार चौके और एक छक्के की मदद से 39 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद 159 के स्कोर पर चौथा विकेट गिरा। ऋषभ कोई कमाल नहीं कर सके और नौ रन बना कर आउट हुए।

कानपुर में टीम इंडिया की ऐतिहासिक जीत, जय शाह ने भी की सराहना

टी20 विश्व कप को लेकर थोड़ी नर्वस हूं : सोफी मोलिनेक्स

दुबई,(आईएएनएस)। महिला टी20 विश्व कप काउंटडाउन शुरू हो चुका है। टूर्नामेंट की सबसे मजबूत और खतरनाक टीम ऑस्ट्रेलिया एक बार फिर अपना दबदबा कायम करना चाहेगी। वहीं, स्टार ऑलराउंडर सोफी मोलिनेक्स राष्ट्रीय टीम में वापसी के बाद यूएई में होने वाले मेगा इवेंट को लेकर थोड़ी नर्वस हैं।

दो बार की विश्व कप विजेता ने 2021 और 2024 के बीच पैर और घुटने की गंभीर चोटों के कारण दो साल से अधिक समय तक टीम से बाहर बिताया।

वह ऑस्ट्रेलिया के लिए वनडे विश्व कप 2022, राष्ट्रमंडल खेल और टी20 विश्व कप 2023 से चूक गईं। अब टीम में वापसी के बाद यह ऑलराउंडर कोई भी भूमिका निभाने के लिए तैयार है लेकिन, यह उनके लिए इतना आसान नहीं होगा। क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू ने मोलिनेक्स के हवाले से कहा, मैं पिछले कुछ वर्षों से विश्व कप के लिए नहीं खेली हूं। इसलिए इस समय मैं थोड़ा नर्वस महसूस कर रही हूं, लेकिन यह टी20 विश्व कप है और मुझे अपना बेस्ट देना होगा।

26 वर्षीय खिलाड़ी इस साल की शुरूआत में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऑस्ट्रेलियाई टीम में लौटी। मार्च में बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज में उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज का पुरस्कार मिला। हालांकि, चोट के कारण उनकी विश्व कप की तैयारियां बाधित हुईं, लेकिन उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ हाल ही में टी20 सीरीज में शानदार वापसी की। उन्होंने कहा, ईमानदारी से कहूं तो मैं इस टीम में किसी भी भूमिका का आनंद लेती हूं। (पावर प्ले और डेथ ओवर) काफी महत्वपूर्ण हैं और मुझे लगता है कि उन परिस्थितियों में एक गेंदबाज के रूप में आप हमेशा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे लेकिन, ऐसी चुनौतियों से लड़ना और कमबैक करने में सक्षम होना ही एक अच्छे खिलाड़ी की पहचान है।

अंडर -19 टेस्ट में सबसे तेज शतक लगाने वाले दूसरे बल्लेबाज बने 13 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी

नई दिल्ली। चेन्नई में भारत और ऑस्ट्रेलिया अंडर 19 टीमों के बीच चल रहे युवा टेस्ट मैच में, वैभव सूर्यवंशी ने मंगलवार को भारत के लिए अंडर -19 टेस्ट में सबसे तेज शतक दर्ज किया। भारत के लिए पहली पारी में बल्लेबाजी करते हुए, 13 वर्षीय खिलाड़ी ने केवल 58 गेंदों पर अपना शतक पूरा किया। उनकी पारी में 14 चौके और चार छक्के शामिल थे। वह 104 रन रन बनाकर रन आउट हुए। कुल मिलाकर, यह अंडर -19 टेस्ट में दूसरा सबसे तेज शतक है, इंग्लैंड के मोइन अली अभी भी रिकॉर्ड धारक हैं। मोईन ने यह रिकॉर्ड 2005 में बनाया था, जब उन्होंने 56 गेंदों पर शतक जड़ा था। वैभव पिछले साल तब सुर्खियों में आए थे जब वह 12 साल की उम्र में बिहार के लिए खेलते हुए रणजी ट्रॉफी के इतिहास में सबसे कम उम्र में डेब्यू करने वाले खिलाड़ी बन गए थे और उन्होंने सचिन तेंदुलकर और युवराज सिंह के रिकॉर्ड को तोड़ दिया था। उन्होंने अब तक दो प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं।

महिला टी20 रैंकिंग में ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर जॉर्जिया वेयरहैम ने किया सुधार

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया महिला क्रिकेट टीम की ऑलराउंडर जॉर्जिया वेयरहैम की आईसीसी महिला टी-20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में बड़ा सुधार हुआ है। वेयरहैम ने हाल ही में घरेलू धरती पर न्यूजीलैंड के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की तीन मैचों की टी20 श्रृंखला के अंतिम मैच में अपने प्रभावशाली प्रदर्शन के दम पर सभी तीन रैंकिंग श्रेणियों में बड़ी बढ़त हासिल की है। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप से पहले यह उनकी बड़ी उपलब्धि है। 25 वर्षीय खिलाड़ी ने ब्रिस्बेन में कीवी टीम के खिलाफ तीसरे टी20 मैच में प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता था। उन्हें तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए भेजा गया था और उन्होंने सिर्फ 16 गेंदों पर 26 रन बनाए थे। इसके अलावा उन्होंने 21 रन देकर 2 विकेट भी चटकाए थे। ऑस्ट्रेलिया ने पांच विकेट से जीत दर्ज कर यह श्रृंखला 3-0 से अपने नाम की थी।

बांग्लादेश के मुख्य कोच ने बताई भारत से हार की वजह

कानपुर। बांग्लादेश के मुख्य कोच चंडिका हथुरुसिंघे ने मंगलवार को स्वीकार किया कि उनकी टीम भारत की ह्यपहले नहीं देखी गई' आक्रामक बल्लेबाजी के तूफानी में उड़ गई जिसके कारण मौसम से प्रभावित दूसरे टेस्ट में अंततः नतीजा निकला। शुरूआती तीन दिन में लगातार बारिश के कारण आठ सत्र का नहीं हो पाया और ऐसा लग रहा था कि मुकाबला नीरस ड्रॉ की ओर बढ़ रहा है। भारत ने हालांकि बांग्लादेश को पहली पारी में 233 रन पर आउट करने के बाद सिर्फ 34.4 ओवर में नौ विकेट पर 285 रन बनाकर पारी घोषित की और 52 रन की बढ़त हासिल की। भारत के इस रवैये ने नतीजे की उम्मीद जगाई और फिर दूसरी पारी में बांग्लादेश को 146 रन पर ढेर करने के बाद मेजबान टीम ने 17.2 ओवर में 95 रन के लक्ष्य को हासिल कर लिया।

हम जोखिम लेने के लिए तैयार थे : रोहित

कानपुर,(आईएएनएस)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर में दूसरा टेस्ट सात विकेट से जीतने और सीरीज को 2-0 से क्लीन स्वीप करने के बाद मंगलवार को कहा कि टीम जीत के लिए कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थी।

रोहित ने मैच के बाद कहा,"हम सभी आगे बढ़ते रहते हैं। जाहिर है कि किसी न किसी स्तर पर हमें अलग-अलग लोगों के साथ काम करना शुरू करना पड़ा। जब राहुल भाई ने कहा कि वह यहां नहीं रह सकते - हमने शानदार समय बिताया लेकिन जीवन आगे बढ़ता रहता है। हम सभी को आगे बढ़ना है।"

कप्तान ने कहा,"कोच गौतम गंभीर, मैंने उनके साथ खेला है और जानता हूं कि वह किस तरह की मानसिकता के साथ आते हैं और खिलाड़ियों को खेलने की अनुमति देते हैं। शुरूआती दिन लेकिन यह एक अच्छी शुरूआत रही है। हमें इस बारे में बहुत सोचना था कि खेल को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। एक बार जब हमने ढाई दिन खो दिए, जब हम चौथे दिन आए तो हम उन्हें जितनी जल्दी हो सके आउट करना चाहते थे और देखना चाहते थे कि हम बल्ले से क्या कर सकते हैं।"

रोहित ने कहा,"सब कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि वे कितने रन बनाते हैं। जब वे 230 रन पर आउट हो गए, तो यह हमारे द्वारा बनाए गए रनों के बारे में नहीं था, बल्कि उन ओवरों के बारे में था जिन्हें हम उन्हें फेंकना चाहते थे। इसका मतलब था कि हमें रन रेट बढ़ाने की कोशिश करनी थी और जितना संभव हो सके उतने रन बनाने थे।"

उन्होंने कहा," पिच में गेंदबाजों के लिए बहुत कुछ नहीं था। उस पिच पर खेल को बेहतर बनाना गेंदबाजों का शानदार प्रयास था। और फिर बल्लेबाजों ने इस मानसिकता के साथ जल्दी से जल्दी रन बनाने की सोची। यह एक जोखिम था जिसे हम लेने के लिए तैयार थे क्योंकि जब आप इस तरह से बल्लेबाजी करने की कोशिश करते हैं, तो आप कम स्कोर पर आउट हो सकते हैं। लेकिन हम इसके लिए तैयार थे, भले ही हम 100-150 रन पर आउट हो जाएं।"

भारत ने बांग्लादेश को 233 रन पर समेटने के बाद अपनी पहले पारी में टी20 अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए 34.3 ओवर में नौ विकेट पर 285 रन बनाकर पारी घोषित कर दी।

ब्राजीलियाई सीरी ए क्लब फ्लेमेंगो ने मुख्य कोच टिटे से नाता तोड़ा

रियो डी जनेरियो(हि.स.)। ब्राजील के पूर्व मुख्य कोच टिटे को ब्राजीलियाई सीरी ए क्लब फ्लेमेंगो ने सोमवार को बर्खास्त कर दिया। क्लब ने एक बयान में कहा कि 63 वर्षीय खिलाड़ी की जगह साल के अंत तक पूर्व एटलेटिको मैड्रिड, चेल्सी और फ्लेमेंगो के डिफेंडर फिलिप लुइस लेंगे। यह घोषणा ब्राजील की सीरी ए चैंपियनशिप में फ्लेमेंगो की एथलेटिको पैरानेंस पर 1-0 की घरेलू जीत के एक दिन से भी कम समय बाद आई। पिछले गुरुवार को, फ्लेमेंगो को कोपा लिबटाडोरेस - दक्षिण अमेरिका की शीर्ष क्लब प्रतियोगिता - से क्वार्टर फाइनल चरण में उरुग्वे के पेनारोल द्वारा बाहर कर दिया गया था। फ्लेमेंगो वर्तमान में 20-टीम ब्राजीलियाई सीरी ए स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर है, और सीजन में 10 गेम शेष रहते हुए शीर्ष पर चल रहे बोटाफोगो से नौ अंक पीछे है।

दिग्गज बास्केटबॉल खिलाड़ी डिकेम्बे मुटोम्बो का 58 वर्ष की आयु में निधन

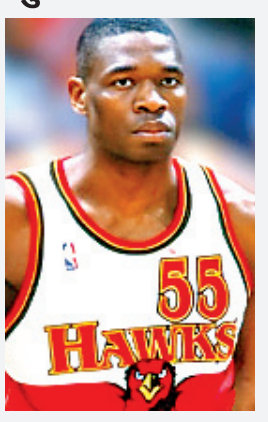

किंशासा, (हि.स.)। एनबीए के वैश्विक राजदूत और नाइस्मिथ बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेमर डिकेम्बे मुटोम्बो, जिनका जन्म डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) में हुआ था, का सोमवार को 58 साल की उम्र में मस्तिष्क कैंसर से निधन हो गया। एनबीए ने सोमवार को उक्त घोषणा की। एनबीए कमिश्नर एडम सिल्वर ने एक बयान में कहा, डिकेम्बे मुटोम्बो जीवन से भी बड़े थे। कोर्ट पर, वह एनबीए में सबसे महान शॉट अवरोधक और रक्षात्मक खिलाड़ियों में से एक थे। मैदान से बाहर, उन्होंने दूसरों की मदद करने में अपना दिल और आत्मा लगा दी। मुटोम्बो को बास्केटबॉल के सबसे सम्मानित रक्षात्मक खिलाड़ियों और रिबाउंडर्स में से एक माना जाता है। उन्हें चार बार एनबीए का वर्ष का रक्षात्मक खिलाड़ी नामित किया गया, यह रिकॉर्ड उन्होंने बेन वालेस के साथ साझा किया है। मुटोम्बो 3,298 ब्लॉक और 12,359 रिबाउंड जमा करने और आठ ऑल-स्टार प्रदर्शन करने के बाद 2009 में सेवानिवृत्त हो गए। उस वर्ष बाद में, उन्हें तत्कालीन आयुक्त डेविड स्टर्न द्वारा एनबीए के लिए वैश्विक राजदूत के रूप में नियुक्त किया गया था। 2015 में, मुटोम्बो को नाइस्मिथ मेमोरियल बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था। ह्यूस्टन रॉकेट्स के पूर्व स्टार को दुनिया भर में उनके मानवीय कार्योंके लिए खेल से परे भी बहुत सम्मान दिया गया था। मुटोम्बो ने धर्मार्थ कार्यों में लाखों डॉलर का निवेश किया है, जिसमें हजारों लोगों के लिए स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच में सुधार के लिए डीआरसी में एक अस्पताल का निर्माण भी शामिल है।

व्यापार/लाइफ व साइंस

विशाल मेगा मार्ट और हुंडई मोटर समेत 5 कंपनियों के आईपीओ को सेबी की मंजूरी

नई दिल्ली, (हि.स.)। मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने हुंडई मोटर इंडिया समय पांच कंपनियों को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी दे दी है। इन कंपनियों में फूड डिलीवरी कंपनी स्विगी, विशाल मेगा मार्ट, एक्मे सोलर होल्डिंग्स और ममता मशीनरी के नाम भी शामिल हैं।

सेबी से मिली जानकारी के मुताबिक हुंडई मोटर इंडिया और स्विगी को मार्केट रेगुलेटर ने 24 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर इशू किया है, जबकि विशाल मेगा मार्ट को 25 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर जारी हुआ है। इसी तरह ममता मशीनरी और एक्मे सोलर होल्डिंग्स को 27 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर दिया गया है। ऑब्जरवेशन लेटर इशू होने के बाद कंपनी को अगले 1 साल की अवधि में अपना आईपीओ लॉन्च करने की अनुमति मिल जाती है।

हुंडई मोटर इंडिया के आईपीओ का निवेशकों को लंबे समय से इंतजार हैं। देश की इस दूसरी सबसे बड़ी कार निमार्ता कंपनी का आईपीओ अभी तक का सबसे बड़ा आईपीओ हो सकता है। कंपनी ने 14 जून को सेबी के पास ड्राफ्ट पेपर जमा कराया था। इस आईपीओ के तहत 14.21 करोड़ इक्विटी शेयर की बिक्री सिर्फ ऑफर फॉर सेल ऑफ (ओएफएस) के जरिए की जाएगी। बताया जा रहा है कि कंपनी का लगभग 3 अरब डॉलर का ये आईपीओ इसी महीने लॉन्च हो सकता है।

इसी तरह विशाल मेगा मार्ट ने 29 जुलाई को सेबी के पास ड्राफ्ट पेपर जमा कराया था। केदारा कैपिटल और पार्टनर्स ग्रुप के निवेश वाली ये कंपनी फैशन से जुड़ी हाइपरमार्केट चेन है। कंपनी अपने आईपीओ के जरिए बाजार से करीब एक अरब डॉलर की राशि जुटाना चाहती है। इस आईपीओ का कामकाज देखने के लिए कोटक महिंद्रा कैपिटल, जेपी मॉर्गन, मॉर्गन स्टेनली, आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज और जेफरीज को लीड मैनेजर नियुक्त किया गया है।

सेबी से जिन कंपनियों को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी मिली है, उनमें देश की दूसरी सबसे बड़ी फूड डिलीवरी कंपनी स्विगी का नाम भी शामिल है। कंपनी ने सेबी के पास 7 अप्रैल को आईपीओ के लिए अपना ड्राफ्ट पेपर दाखिल किया था। इसके बाद 26 सितंबर को कंपनी ने दोबारा अपडेटेड ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया। इन दस्तावेजों के मुताबिक कंपनी 3,750 करोड़ रुपये के फ्रेश इक्विटी शेयर जारी करेगी। इसके साथ ही मौजूद शेयर होल्डर्स द्वारा 18.52 करोड़ इक्विटी शेयरों की बिक्री ऑफर फॉर सेल के जरिए की जाएगी।

आरबीआई की सख्ती से गोल्ड लोन ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका

एजेंसी। नई दिल्ली

गोल्ड लोन देने की प्रक्रिया में गड़बड़ी पाए जाने के बाद भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) सख्त हो गया है। हालांकि केंद्रीय बैंक की इस सख्ती का देश की टॉप ब्रोकरेज कंपनियों ने स्वागत जरूर किया है लेकिन इसके साथ ही गोल्ड लोन के ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका भी जताई है। एक दिन पहले ही आरबीआई ने एक सर्कुलर जारी करके कर्ज देने वाली एंटिटीज को अपनी पॉलिसी और पोर्टफोलियो की समीक्षा करने तथा तुरंत एक्शन लेने का निर्देश दिया था। इस सर्कुलर में कंपनियों को 3 महीने में पर्याप्त सुधार करने की चेतावनी दी गई है। आरबीआई की सख्ती के बाद ब्रोकरेज फर्म मॉर्गन स्टेनली ने एक विज्ञप्ति जारी करके कहा है कि इस सख्ती के कारण गोल्ड लोन की ग्रोथ घट सकती है। गोल्ड लोन देने वाली बड़ी कंपनियों को इससे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मॉर्गन स्टेनली ने कहा है कि आरबीआई की ये सख्ती गोल्ड लोन मार्केट की बेहतरी के लिए जरूरी तो है लेकिन इससे तत्काल कंपनियों के सामने परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। विज्ञप्ति में ये भी कहा गया है कि केंद्रीय बैंक ने गोल्ड लोन कंपनियों को गड़बड़ी दूर करने के लिए 3 महीने का समय दिया है। इस तीन महीने की अवधि में अगर कंपनियां जरूरी सुधार कर लेती हैं तो आरबीआई का रेगुलेटरी एक्शन टल सकता है। इसी तरह जेफरीज ने भी आरबीआई की सख्ती को जरूरी बताते हुए इसका स्वागत किया है। हालांकि जेफरीज ने भी इस सख्ती की वजह से आने वाले दिनों में गोल्ड लोन के ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका जताई है। उल्लेखनीय की भारतीय रिजर्व बैंक ने सोने के बदले कर्ज देने वाली एंटिटीज के कामकाज में कई गड़बड़ियां पाए जाने के बाद सख्त रुख अपनाते हुए सर्कुलर जारी किया है।

दिन भर उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद लाल निशान में बंद हुआ बाजार

एजेंसी। नई दिल्ली

पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार आज मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरूआत भी कमजोरी के साथ हुई थी। दिन के कारोबार में खरीदारी के जोर से शेयर बाजार कुछ देर के लिए हरे निशान में भी आया लेकिन बाद में बिकवाली का दबाव बन जाने की वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.04 प्रतिशत और निफ्टी 0.05 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान मेटल, मीडिया और आईटी इंडेक्स में सबसे अधिक खरीदारी होती रही। इसी तरह ऑटोमोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थ केयर और टेक इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स, एफएमसीजी और ऑयल एंड गैस सेक्टर के शेयरों में बिकवाली होती रही। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर मजबूती बनी रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.27 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ।

अक्टूबर के पहले दिन सस्ता हुआ सोना, चांदी में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली,अक्टूबर (हि.स.)। अक्टूबर के पहले दिन ही मंगलवार को घरेलू सराफा बाजार में गिरावट नजर आ रही है। इसके कारण आज सोना 150 से 160 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। इस कमजोरी के कारण देश के ज्यादातर सराफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 77,380 रुपये से लेकर 77,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 70,940 रुपये से लेकर 70,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी की कीमत में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली सराफा बाजार में ये चमकीली धातु आज भी 94,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 77,380 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 70,940 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस और एआईएक्स कनेक्ट का विलय पूरा हुआ : डीजीसीए

नई दिल्ली। एयरलाइंस कंपनी एआईएक्स कनेक्ट का एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ विलय पूरा हो गया है। डीजीसीए ने विलय के लिए अपेक्षित विनियामक अनुमोदन प्रदान कर दिया है।

ये दोनों विमानन कंपनियां टाटा समूह का हिस्सा हैं। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने मंगलवार को जारी बयान में यह जानकारी दी है। डीजीसीए ने एक बयान में कहा कि एक अक्टूबर, 2024 से एआईएक्स कनेक्ट के सभी विमान को एआईएक्स के एयर ऑपरेटर सर्टिफिकेट (एओसी) पर स्थानांतरित कर दिया गया है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि संयुक्त इकाई का एयरलाइन परिचालन बिना किसी व्यवधान के जारी रहेगा, ताकि यात्रियों को सुरक्षित और सुचारू अनुभव मिल सके।

बुजुर्गों को पेंशन, महिलाओं को सम्मान व युवाओं को दे रहे हैं रोजगार : मुख्यमंत्री

हेमंत सोरेन ने 1240 करोड़ 57 लाख की लागत से 50 योजनाओं की दी सौगात

नवीन मेल संवाददाता

रांची/बोकारो। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने बोकारो जिले के चंदनक्यारी प्रखंड स्थित चंडीपुर में आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य, सड़क परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्र में तीन बड़ी सौगात सहित 50 विकास योजनाओं का मंगलवार को ऑनलाइन उद्घाटन-शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने यहां 500 बिस्तर की क्षमता वाले मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की आधारशिला रखी। साथ ही तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 500 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन और रामगढ़ जिला के पतरातू में रेल ओवरब्रिज का ऑनलाइन शिलान्यास किया। लोगो को संबोधित करते हुए हेमंत ने कहा कि झारखंड अलग राज्य की लड़ाई इसलिए भी लड़ी गई थी कि यहां की आर्थिक गतिविधियों में आदिवासियों-मूलवासियों को रोजगार और अधिकार मिले लेकिन अलग राज्य गठन के 20 वर्षों तक यहां के आदिवासी-मूलवासियों को आर्थिक गतिविधियों से अलग रखने का कार्य किया जाता रहा। जब हमारी सरकार बनी तो हमने यहां के सभी सभी निजी संस्थानों में स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने के लिए नीति बनाई। इसी नीति का नतीजा है कि राज्य में संचालित कल-कारखानों और संस्थानों में स्थानियों को रोजगार मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के हर वर्ग और तबके को आगे बढ़ाने के लिए सरकार की योजनाएं हैं। आज हर बुजुर्ग को पेंशन मिल रहा है।

बोकारो, रामगढ़ व हजारीबाग जिले को मिली कई सौगातें

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर बोकारो, रामगढ़ और हजारीबाग जिले को 1240 करोड़ 57 लाख रुपये की 50 योजनाओं की सौगात दी। इसमें 1204 करोड़ 11 लाख रुपये की 48 योजनाओं का शिलान्यास और 36 करोड़ 40 लाख रुपये की दो योजनाओं का उद्घाटन शामिल है। इसमें बोकारो जिले में 1081 करोड़ 61 लाख रुपये की लागत से 46 योजनाओं का शिलान्यास हुआ। रामगढ़ जिले में 108 करोड़ 53 लाख रुपये की लागत से एक योजना का शिलान्यास तथा हजारीबाग जिले में 36 करोड़ 46 लाख रुपये की दो योजनाओं का उद्घाटन एवं 13 करोड़ 97 लाख रुपये की एक योजना का ऑनलाइन शिलान्यास संपन्न हुआ। इनमें बोकारो जिले में मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 50 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन, रामगढ़ के पतरातू में रेलवे ओवरब्रिज व हजारीबाग में झील का ब्यूटीफिकेशन शामिल है जबकि हजारीबाग नगर निगम के नए भवन को सीएम ने वहां की जनता को समर्पित किया।

पेज एक का शेष

एके 47 के साथ दो...

चलाया गया। सभी पहाड़ के तलहटी में झाड़ियों के पास एक महुआ पेड़ के नीचे दो उग्रवादी हथियार के साथ देखे गए। छापेमारी दल द्वारा रणनीति बना कर उक्त दोनों की घेराबंदी कर दी गई। दोनों उग्रवादी अचानक आये पुलिस के जवान व पदाधिकारियों को देख वहां से हथियार के साथ में भागने का प्रयास किए लेकिन पुलिस की घेराबंदी होने के कारण वे भाग नहीं पाएं। पुलिस बल के ने दोनों को पकड़ लिया। तलाशी के दौरान इसके बाद एक उग्रवादी खुर्शीद आलम के पास से एक एके 47 मैगजीन लगा बरामद किया गया। साथ ही 4 जिंदा गोली, एक की पैड मोबाईल बरामद हुआ। दूसरे उग्रवादी फेंकू भुइयां उर्फ सर्वनाश ने 4 जिंदा गोली, दो मोबाईल, एक जियो नेट चलाने के लिये जियो फाई राउटर बरामद किया गया। अवैध हथियार एवं गोली रखने के आरोप में एवं उग्रवादी संगठन जेजेएमपी के सक्रिय रहने तथा उग्रवादी गतिविधि में शामिल रहने के कारण दोनों को गिरफ्तार किया गया। अविनाश उग्रवादी संगठन में सब जोनल कमांडर के रूप में सक्रिय है। लातेहार, चतरा, हजारीबाग, रांची जिलों में कुल 9 कांडो में वांछित है। खुर्शीद अंसारी पर लातेहार जिला अंतर्गत कुल 7 कांडो में अरोपी रहा है।

कमलेश सिंह के भाजपा में...

के विपरीत कार्य कर सकते हैं और पार्टी को नुकसान पहुंचा सकते हैं। भाजपा नेताओं ने प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी से अपनी चिंताओं को स्पष्ट रूप से रखा। इस पर मरांडी ने जवाब दिया कि अभी तक कमलेश सिंह के पार्टी में शामिल होने की कोई आधिकारिक सूचना प्रदेश नेतृत्व तक नहीं पहुंची है। हालांकि, यह स्थिति पार्टी के भीतर चल रहे असंतोष को उजागर करती है, जहां कई नेता बाहरी लोगों के प्रवेश से नाराज हैं, खासकर तब जब उनका राजनीतिक जनाधार सवालों के घेरे में हो। इस विवाद ने भाजपा के भीतर गहरे असंतोष को सामने ला दिया है, जो आगामी चुनावों में पार्टी के लिए चुनौती बन सकता है। हालांकि भाजपा कार्यकर्ताओं का कहना है कि भाजपा में शामिल होने मात्र से किसी को टिकट मिल जाय इसकी कोई गारंटी नहीं होती है।

योजनाओं को घर-घर तक...

से आपकी कई अपेक्षाओं को पूरा करने में हमारी सरकार सफल भी रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी दीदी-बहनों को फिर से एक ताकतवर कड़ी बनाने का हमारा उद्देश्य है। हमारी सरकार संवेदनशील सरकार है। हमारी सरकार विशुद्ध रूप से इस राज्य के मूलवासियों-आदिवासियों की सरकार है। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूं हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांव से चलने वाली सरकार है। यही कारण है कि आप सभी की आवाज मेरे कानों तक पहुंचती है।

स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता : मुख्यमंत्री ने कहा कि आज गांव-गांव, जन-जन तक स्वच्छ पानी पहुंचाना बहुत बड़ी चुनौती है। स्वच्छ जल मिलेगा, तभी लोग बीमार नहीं होंगे। यदि हम सभी लोग मिलजुल कर गांव-गांव तक स्वच्छ पानी पहुंचाने में कामयाब होंगे, तो जिस तरह से हमारे पूर्वज मजबूत हुआ करते थे, वैसे ही गांव के लोग मजबूत होंगे। ग्रामीण स्तर तक स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विभागीय स्तर पर कई कार्य योजना तैयार की गई है। राज्य सरकार द्वारा कहीं टंकी, कहीं बोरिंग, कहीं पाइपलाइन के जरिए शुद्ध जल पहुंचाने का कार्य हो रहा है। कई जगहों पर शिकायत मिल रही है कि ठेकेदार गड़बड़ी कर रहे हैं, इस पर नजर रखने, इसकी चौकीदारी करने के लिए जलसहिया दीदियों को जिम्मा मिलेगा। यह काम मजबूती से आपके हाथ में रहेगा। अब जो ठेकेदार गड़बड़ी करेगा, उसके खिलाफ आप शिकायत दर्ज करें, उस पर राज्य सरकार त्वरित कार्रवाई करने का काम करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा यह मानना है कि जब गांव मजबूत होगा, तभी राज्य मजबूत होगा। जब राज्य मजबूत होगा, तभी देश मजबूत हो सकता है। बहुत सारे लोग आज देश को मजबूत करने की बात करते हैं, लेकिन गांव की स्थिति बदतर है। ऐसी स्थिति में देश मजबूत कैसे हो सकता है। आज भी इस देश में 80 करोड़ लोग सरकार द्वारा दिए जा रहे अनाज पर आश्रित है। इस स्थिति को बदलने की जरूरत है, तभी विकसित भारत का सपना पूरा हो सकेगा। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने मोबाइल क्रय के लिए चेक प्रारूप का वितरण, पेयजल एवं स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए जलसहियाओं, मुखिया एवं एसएचजी के बीच प्रशस्ति पत्र का वितरण किया।

महिला स्वयं सहायता समूहों को दिए 12 हजार करोड़ : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के कहा कि अलग-अलग तरह से हमारी सरकार ने महिला स्वयं सहायता समूहों को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए, उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए कार्य योजना बनाई है। राज्य में महिला स्वयं सहायता समूहों की दीदियों को अधिक से अधिक रोजगार से जोड़ा जा सके, इस निमित्त निरंतर प्रयास किया गया है। साथ ही, कहा कि पिछले 19 वर्षों में सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को पूर्व की सरकारों द्वारा मात्र 600 से 700 करोड़ रुपये का फंड उपलब्ध कराया गया था। हमारी सरकार ने विगत 4 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों के सर्वांगीण विकास के लिए 12 हजार करोड़ रुपये का फंड उपलब्ध कराया है।

सरकार विष कन्या की...

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता की टिप्पणियों पर निशाना साधते हुए विपक्षी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) और शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि अगर सरकार में शामिल लोग ही कह रहे हैं कि राज्य की अर्थव्यवस्था संकट में है, तो यह चिंता का विषय है। वहीं, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सांसद संजय राउत ने सोमवार को पत्रकारों से कहा, गडकरी ने बहुत सही बयान दिया है। ऐसे समय में अगर धन का दुरुपयोग और कुप्रबंधन होता है, जब खजाने में धन की कमी है और सरकार अन्य योजनाओं को निलंबित कर रही है, तो क्या केंद्र सरकार की कोई जिम्मेदारी (राज्य की योजना के संबंध में) बनती है? एनसीपी (शरद चंद्र पवार) की लोकसभा सदस्य सुप्रिया सुले ने भी राज्य की वित्तीय स्थिति पर चिंता जताई। इससे पहले भाजपा विधायक टेकचंद सावरकर ने पिछले हफ्ते लाडली बहिन योजना को नवंबर में होने वाले चुनावों में महिलाओं के वोट हासिल करने के लिए एक जुगाड़ कहा था। उपमुख्यमंत्री और भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने गडकरी की टिप्पणियों पर कहा कि उनका बातें कहने और अपने विचार रखने का एक अलग अंदाज है।

आजसू पार्टी प्रदेशभर में करेगी झारखंड नवनिर्माण यात्रा

रांची । आजसू पार्टी राज्य के अलग अलग विधानसभा क्षेत्रों में झारखंड नवनिर्माण यात्रा का आयोजन करेगी। इसकी शुरूआत 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर गोमिया विधानसभा से होगी। जिसके बाद यह यात्रा राज्य के विभिन्न विधानसभाओं में आयोजित होगी। गोमिया में यह यात्रा गोमिया हाई स्कूल से 1बी मार्केट होते हुए स्वांग डीएवी स्कूल तक जाएगी। इस यात्रा में पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो मुख्य रूप से शामिल होंगे। उनके साथ पार्टी के अन्य पदाधिकारी और हजारों की संख्या में कार्यकर्ता भी उपस्थित रहेंगे।

कार्यालय उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, पलामू
(जिला समादेष्टा का कार्यालय
झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, पलामू।)

आम सूचना

जिला समादेष्टा का कार्यालय, झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, पलामू में गृह रक्षकों के नवनामांकन के लिए प्रकाशित विज्ञापन सं0–01/2010 को गृह रक्षक नवनामांकन संबधी नियमावली बनने तक स्थगित रखा गया था। वर्ष–2014 में गृह रक्षकों के नवनामांकन हेतु गृह रक्षक (स्वयंसेवक) नियमावली–2014 बनाई गई है। उक्त नियमावली के आलोक में वर्ष–2023 में पलामू जिला में गृह रक्षक नवनामांकन हेतु विज्ञापन सं0–01/2023 प्रकाशित कर अंतिम रूप से नवनामांकन की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। वर्णित स्थिति मे वर्ष–2010 में गृह रक्षक नवनामांकन हेतु प्रकाशित विज्ञापन सं0–01/2010 को काफी लम्बा समय बीत जाने/अन्य तकनीकि कारणों से स्थगित रखे रहने का कोई औचित्य नहीं है। अतः गृह रक्षकों के नवनामांकन हेतु प्रकाशित विज्ञापन सं0–01/2010 को रद्द किया जाता है। जिसका पी0आर0नं0–34539 है। ह0/–

PR 337717 (Palamu)24-25*D — उपायुक्त,पलामू

झारखण्ड सरकार जिला खनन कार्यालय, पलामू।

आम सूचना

Draft DSR लघु खनिजों (बालू छोड़कर)

एतद द्वारा सूचित करना है कि पलामू जिला हेतु तैयार Draft DSR पत्थर/मिट्टी लघु खनिजों (बालू छोड़कर) Ministry of Environment Forest and Climate Change के अधिसूचना संख्या S.O. 3611 (E), date 25.07.2018 के आलोक में Public Viewing एवं Comments हेतु जिला के बेबसाईट https://palamu.nic.in में Upload किया गया है, जो Public Domain पर उपलब्ध रहेगी।

अतः आमजनों एवं Stakeholders से अनुरोध है कि उक्त तैयार Draft DSR लघु खनिज पत्थर आदि (बालू छोड़कर) के बावत सुझाव एवं Comments जिला खनन पदाधिकारी, पलामू के कार्यालय में पत्र अथवा जिला खनन कार्यालय, पलामू के Email id :- dmo-palamau@jharkhandmail.gov.in में भेजा जा सकता है।

ह0/–
जिला खनन पदाधिकारी, पलामू।

PR 337714 District(24-25)D

जिला अभियंता का कार्यालय, जिला परिषद्, लातेहार

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण-सूचना
निविदा आमंत्रण सूचना संख्या– 31 वर्ष 2024–25
D.M.F.T मद

1. विज्ञापन दाता का नाम : जिला अभियंता, जिला परिषद्, लातेहार।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि : 08.10-2024 (अपराहन् 01:00 बजे तक)
3. परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान : जिला अभियंता, जिला परिषद्, लातेहार।
4. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : 09.10.2024 को 01:00 बजे अपराहन् तक
5. निविदा प्राप्ति, का स्थान : जिला नियंत्रण कक्ष, (पुलिस अधीक्षक, लातेहार के कार्यालय के समक्ष)
6. निविदा खोलने की तिथि, समय एवं स्थान : 09.10.2024 को 03:00 बजे अपराहन्, कार्यालय जिला परिषद, लातेहार।
7. कार्य का विस्तृत विवरण :–

ग्रुप संख्या	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य पूर्ण करने की तिथि
1	प्रखण्ड गारू पंचायत धांगरटोला में उत्क्रमित मध्य विद्यालय मारोमार का चाहरदिवारी निर्माण।	1324500	26500	2500	03 माह
2	प्रखण्ड गारू पंचायत रूद में राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय बारीबांध का चाहरदिवारी निर्माण।	1508700	30500	5000	03 माह

8. परिमाण विपत्र भारतीय स्टेट बैंक से निर्गत ही मान्य होगा जो **जिला अभिंयता, लातेहार** के पदनाम से देय होगा एवं भारतीय स्टेट बैंक, लातेहार में भुगतेय होगा। परिमाण विपत्र का मूल्य लौटाया नहीं जायेगा।
9. परिमाण विपत्र का मूल्य निविदा निर्गत की तिथि के बाद का निर्गत मान्य होगा एवं संबंधित संवेदक/फर्म के नाम से Bank Draft/DD निर्गत होना अनिवार्य होगा।
10. अग्रधन की अंकित राशि (NSC) 05 वर्षीय/03 वर्षीय/डाकघर सावधि जमा पत्र/03 वर्षीय/05 वर्षीय/बैंक सावधि जमा पत्र (F.D) 05 वर्षीय/03 वर्षीय, कम्पनी के मामले में झारखण्ड राज्य के राष्ट्रीयकृत बैंक का B.G जो **जिला अभियंता, लातेहार** के नाम से प्रतिज्ञिप्त (प्लेज) कराते हुए निविदा के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा।
11. उक्त निविदा में जिला परिषद, लातेहार अन्तर्गत समुचित श्रेणी में निबंधित संवेदक भाग लेंगे।
12. उक्त निविदा में प्रखण्ड गारू, सरयू एवं बरवाडीह के संवेदक भाग लेंगे।
13. Ucan Certificate (Updated New Version) की प्रति संलग्न करना अनिवार्य होगा।
14. वैसे संवेदक जिनके पास पूर्व से D.M.F.T अन्तर्गत ली गयी योजना लंबित है उन्हे B.O.Q निर्गत नहीं किया जाएगा।

जिला अभियंता
जिला परिषद्, लातेहार

PR 337716 Rural Development (24-25)_D

पलामू समाहरणालय
प्रपत्र VI 'क'
झारखण्ड सरकार
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
(भू-अर्जन निदेशालय) या समाहर्त्ता या समुचित सरकार

प्रारंभिक अधिसूचना
(अधिनियम–30/2013 की धारा–11 (1) के अधीन)

अधिसूचना संख्या :–730(M)/भू0अ0, पलामू, दिनांक :–25.09.2024

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि ग्राम–भजनिया, थाना सं0–527, थाना–मोहम्मदगंज, अंचल–मोहम्मदगंज, जिला–पलामू में भूमि सार्वजनिक प्रयोजन, यथा परियोजना भजनिया मोहम्मदगंज से हैदरनगर (मोहम्मदगंज से दंगवार) पथ भाया कोलहुवा, बरडीहा, पन्सा, अधौड़ी तथा रानीदेवा पथ निर्माण हेतु अपेक्षित है।

प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्त्ता अथवा नियम 2 (1) (ख) के तहत नियुक्त पदाधिकारी प्रशासक के रूप में नियुक्त किए गए है। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि ग्राम–भजनिया, थाना सं0–527, थाना–मोहम्मदगंज, अंचल–मोहम्मदगंज, जिला–पलामू में उपर्युक्त कथित परियोजना के लिए कमोवेश **4.0427** एकड़ यानि 1.6360 हेक्टेयर मानक माप का भू–खण्ड, जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है, अर्जनाधीन है :–

ग्राम–भजनिया, थाना सं0–527, कुल रकबा–4.0427 एकड़

क्र0 सं0	खाता सं0	सर्वे भूखंड सं0	भूमि का किस्म	भूमि स्वामित्व का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0	अभियुक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	236	1277	टाड दो	रैयती	0.0597	राजा सिंह वो निरंतर सिंह पिता सुरज सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	मकान, पेड़
2	237	1276	टाड दो	रैयती	0.2086	राजा सिंह वो निरंतर सिंह पिता सुरज सिंह जाति राजपुत एवं मोसमात कलीवाश कुवंर पति सुरज सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
3	20	1269	घर बारी	रैयती	0.0342	कामेश्वर सिंह वों जगेश्वर सिंह पिता अन्तु सिंह अंश समान जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
4	20	1268	टाड दो	रैयती	0.1711	तदैव	–	–	–	–	–
5	166	1264	टाड दो	रैयती	0.103	बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत एवं वृजनारायन सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एवं मोसोमात सुर्यमति कुवंर पति धनु सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
6	180	1260	टाड दो	रैयती	0.0468	वृजनारायण सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एंव बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
7	166	1261	टाड दो	रैयती	0.1101	बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत एवं वृजनारायन सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एवं मोसोमात सुर्यमति कुवंर पति धनु सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
8	180	1262	टाड दो	रैयती	0.0613	वृजनारायण सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एंव बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
9	180	1257	टाड दो	रैयती	0.0115	तदैव	–	–	–	–	–
10	236	1242	टाड दो	रैयती	0.0502	राजा सिंह वो निरंतर सिंह पिता सुरज सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
11	286	1256	टाड दो	रैयती	0.0711	सरयु सिंह पिता कनइया सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
12	236	1244	टाड दो	रैयती	0.0512	राजा सिंह वो निरंतर सिंह पिता सुरज सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
13	286	1255	टाड दो	रैयती	0.0619	सरयु सिंह पिता कन्हया सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
14	242	1253	टाड दो	रैयती	0.0839	रामअधार सिंह वो रामजनम सिंह वो रामकुमार सिह पिता भिखारी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम वो भरदुल सिंह पिता भिखारी सिंह	–	–	–	–	–
15	180	1247	टाड दो	रैयती	0.0142	वृजनारायण सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एंव बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
16	166	1248	टाड दो	रैयती	0.0493	बनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत एवं वृजनारायन सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एवं मोसोमात सुर्यमति कुवंर पति धनु सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
17	166	1227	टाड दो	रैयती	0.0918	तदैव	–	–	–	–	–
18	166	1226	टाड दो	रैयती	0.0019	तदैव	–	–	–	–	–
19	20	1225	टाड दो	रैयती	0.0696	कामेश्वर सिंह वो जगेश्वर सिंह पिता अन्तु सिंह अंश समान जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
20	242	1228	टाड दो	रैयती	0.0925	रामअधार सिंह वो रामजनम सिंह वो रामकुमार सिह पिता भिखारी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
21	286	1217	टाड दो	रैयती	0.0025	सरयु सिंह पिता कन्हया सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
22	242	1218	टाड दो	रैयती	0.1653	रामअधार सिंह वो रामजनम सिंह वो रामकुमार सिह पिता भिखारी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
23	166	1220	टाड दो	रैयती	0.0635	वनवारी सिंह वो साधु सिंह पिता इश्वरी सिंह जाति राजपुत एंव वृजनारायण सिंह पिता धनु सिंह जाति राजपुत एवं मोसोमात सुर्यमति कुवंर पति धनु सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
24	93	1221/1772	टाड दो	रैयती	0.0948	द्वारीका सिंह वो अवध विहारी सिंह पिता बालकेश्वर सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
25	43	1199	धनहर दो	रैयती	0.0042	धुरा सिंह पिता धरमी सिंह जाति राजपूत	–	–	–	–	–
26	92	1205	धान दो	रैयती	0.1478	द्वारीका सिंह वो अवध विहारी सिंह पिता बालकेश्वर सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
27	43	1200	धनहर दो	रैयती	0.0085	धुरा सिंह पिता धरमी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
28	43	1204	धनहर दो	रैयती	0.0227	तदैव	–	–	–	–	–
29	92	1201	धान दो	रैयती	0.1248	द्वारीका सिंह वो अवध विहारी सिंह पिता बालकेश्वर सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
30	131	1202	धनहर दो	रैयती	0.0373	नोजादी सिंह वो जगनारायण सिंह पिता रमजित सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
31	30	1196	धनहर दो	रैयती	0.154	कैलाश ठाकुर वो भुनेश्वर ठाकुर वो दशरथ ठाकुर पिता जगेश्र ठाकुर जाति हजाम निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
32	131	1203	धनहर दो	रैयती	0.0112	नोजादी सिंह वो जगनारायण सिंह पिता रमजित सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
33	164	1194	धनहर दो	रैयती	0.0239	बबन सिंह वो मुनी सिंह वो नारद सिंह पिता भगवत सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
34	31	1134	धानि दोयम	रैयती	0.0978	कोमली देवी पति बालधनि महतो जाति कोईरी निवासी निज ग्राम मोहम्मदगंज वो राम प्रवेश मेहता पिता स्व0 चन्द्रदेव मेहता	–	–	–	–	–
35	267	1135	धनहर दो	रैयती	0.132	लक्ष्मण महतो वो मोती महतो पिता देवा महतो एवं प्रमोद महतो पिता जवाही महतो एवं करीम महतो वो बासुदेव उर्फ मोदी पिता शिवरतन महतो एवं केशो वे अमेरिका पिता नेमा एवं विदेश्वरी महतो वो रामप्रसाद महतो वो सिता राम महतो वो बचन महतो पिता डोमन महतो एवं कोमली महतेवाईन पिता जानकी महतो जाति काईरी निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
36	1	1136	धनहर दो	रैयती	0.2409	अर्जुन साह पिता दुर्गा साहु एवं सखिचंद साहु पिता सुखदेव साहु एंव गोप्तेश्वर साहु पिता रूपनारायान साहु एवं नारायण साह वो रमेश्र साहु वो धनु साहु वो मुरारी साहु पिता जगमोहन साहु एवं मुखलाल साह वो उमेश साह पिता छेदी साहु जाति कान्दु निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
37	120	1137	धनहर दो	रैयती	0.0482	नन्हकु महतो पिता रामपति महतो जाति कोईरी निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
38	18	1143	धनहर दो	रैयती	0.0082	करीमन महतो पिता शिवरतन महतो एवं केशो महतो एवं अमेरीका महतो पिता नेमा महतो एवं विन्देश्वरी महतो वो रामप्रसाद महतो वो सिता राम महतो वो बंचन महतो पिता डोमन महतो एवं नन्हकु महतो पिता रामपति महतो एंव शिवनारायण महतो पिता जगेश्वर महतो जाति कोईरी एवं बगाली महतो पिता रामनन्दन महतो जाति कोईरी निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
39	17	1064	टाड दो	रैयती	0.0007	करमु दुसाध पिता बालकिशुन दुसाध जाति दुसाध निवासी निज ग्राम वो राजबलि दुसाध पिता रामसुन्दर दुसाध	–	–	–	–	–
40	18	1138	धनहर दो	रैयती	0.0014	करीमन महतो पिता शिवरतन महतो एवं केशो महतो एवं अमेरीका महतो पिता नेमा महतो एवं विन्देश्वरी महतो वो रामप्रसाद महतो वो सिता राम महतो वो बंचन महतो पिता डोमन महतो एवं नन्हकु महतो पिता रामपति महतो जाति कोईर निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
41	65	1082	टाड दो	रैयती	0.03	जदुनन्दन दुसाध वो रघु दुसाध वो स्वारथ दुसाध पिता मटर दुसाध वो जवाहीर वो विनोद वो मनोरमा कुमारी पिता रामभरत दुसाध वो मोसमात धनपतिया पति देवा दुसाध	–	–	–	–	–
42	164	1063	धनहर दो	रैयती	0.1024	बबन सिंह वो मुनी सिंह वो नारद सिंह पिता भगवत सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
43	209	1062	टाड दो	रैयती	0.267	महेश्वरी सिंह पिता नौरंगी सिंह जाति राजपुत निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
44	209	1044	टाड दो	रैयती	0.0254	तदैव	–	–	–	–	–
45	209	1061	टाड दो	रैयती	0.0737	तदैव	–	–	–	–	–
46	197	1056	धान दो	रैयती	0.1703	भिखारी महतो वो मलुकी महतो वो भोला महतो पिता सुवेदार महतो जाति कोईरी निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
47	265	1055	धनहर दो	रैयती	0.0435	लक्ष्मण महतो वो मोती महतो पिता देवा महतो एवं प्रमोद महतो पिता जवाही महतो एवं करीम महतो वो बासुदेव उर्फ मोदी पिता शिवरतन महतो एवं केशो वे अमेरिका पिता नेमा जाति कोईरी एवं विदेश्वरी महतो वो रामप्रसाद महतो निवासी निज ग्राम	–	–	–	–	–
48	265	1054	धनहर दो	रैयती	0.0976	तदैव	–	–	–	–	–
49	321	1254	टाड दो	गै0मा0	0.0417	अनावाद झारखण्ड सरकार					
50	321	1245	टाड दो	गै0मा0	0.0132	अनावाद झारखण्ड सरकार					
51	321	1246	परती	गै0मा0	0.0195	अनावाद झारखण्ड सरकार					
52	321	1229	टाड दो	गै0मा0	0.0134	अनावाद झारखण्ड सरकार					
53	321	1224	टाड दो	गै0मा0	0.033	अनावाद झारखण्ड सरकार					
54	321	1219	टाड दो	गै0मा0	0.0256	अनावाद झारखण्ड सरकार					
55	321	1221	टाड दो	गै0मा0	0.1303	अनावाद झारखण्ड सरकार					
56	321	1133	धनहर दो	गै0मा0	0.0342	अनावाद झारखण्ड सरकार					
57	321	1058	मोटा आर	गै0मा0	0.0739	अनावाद झारखण्ड सरकार					
58	321	1057	धनहर दो	गै0मा0	0.0144	अनावाद झारखण्ड सरकार					
				कुल :–	4.0427						

यह अधिसूचना भू–अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर एवं पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (अधिनियम संख्या 30/2013), की धारा–11 (1) के उपबंधों के अधीन सभी संबंधित व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है।

भूमि की योजना का निरीक्षण जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, पलामू के कार्यालय में किसी कार्य दिवस को कार्यावधि में किया जा सकेगा। झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता–सह–समुचित सरकार उक्त अधिनियम की धारा–12 में यथाउपबंधित एवं यथाविनिर्दिष्ट कार्यो के समुचित निष्पादन हेतु अपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उसकी प्रविष्टि करने, किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अवभूमि खोदने या भू–वेधन–छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यो के संचालन करने हेतु जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, पलामू और उनके कर्मचारियों को प्राधिकृत करती है।

अधिनियम की धारा–11 (4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला समाहर्त्ता के पूर्विक अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्ट भूमि का कोई अंतरण यथा क्रय/विक्रय नहीं करेगा या ऐसा कोई अंतरण नहीं करवाएगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नहीं उत्पन्न करेगा। अधिनियम की धारा–15 के अधीन यथाउपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से साठ (60) दिनों के अंतर्गत भू–अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियां हितबद्ध व्यक्ति द्वारा जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, पलामू के समक्ष दर्ज की जा सकेगी।

कानूनगो, जिला भू–अर्जन कार्यालय, पलामू। — जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, पलामू। — अपर समाहर्त्ता, पलामू। — उपायुक्त, पलामू।

PR.NO.337460 Palamu(24-25):D

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

" Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट

Facilities

- आरसीटी
- पायरिया का ईलाज
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- स्माईल डिजाइन
- इनविजिवल क्लिप
- दंत रोपण
- फिक्स दाँत लगाना
- अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

पश्चिमी प्रतिबंधों का मुकाबला करने को रूस के साथ मजबूत रिश्ते जरूरी : ईरान

तेहरान (आईएएनएस)। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने पश्चिम के 'क्रूर' प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए रूस के साथ द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत बनाने पर जोर दिया। सोमवार को उनके कार्यालय की वेबसाइट पर प्रकाशित एक बयान के मुताबिक, पेजेशकियन ने तेहरान में रूसी प्रधानमंत्री मिखाइल मिशुस्टिन के साथ बैठक में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि ईरान और रूस के बीच राजनयिक प्रतिनिधिमंडलों के आदान-प्रदान से द्विपक्षीय बातचीत और संबंधों को बढ़ाने में मदद मिलेगी। रूसी प्रधानमंत्री ने ईरान के साथ ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, कृषि, स्वास्थ्य और संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की मॉस्को की इच्छा व्यक्त की। मिशुस्टिन ने पिछले कुछ महीनों में द्विपक्षीय ट्रेड एक्सचेंज में 'बहुत अच्छी' वृद्धि की सराहना की।

जापान की संसद ने शिगेरू इशिबा को चुना प्रधानमंत्री

टोक्यो (आईएएनएस)। जापान के प्रधानमंत्री फूमियो किशिदा ने मंगलवार को अपने मंत्रिमंडल के साथ इस्तीफा दे दिया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, इसके साथ ही राजनीतिक घोटालों और बढ़ती महंगाई से प्रभावित उनके तीन साल के कार्यकाल का अंत हो गया। इस बीच, जापान की सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के नेता 67 वर्षीय शिगेरू इशिबा को मंगलवार को संसदीय मतदान में देश का अगला प्रधानमंत्री चुन लिया। वे फूमियो किशिदा की जगह लेंगे। जापानी संसद के निचले और ऊपरी दोनों सदनों ने इशिबा का समर्थन किया।

सूर्य ग्रहण आज, भारत में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा

भोपाल (हि.स.)। देशभर में 03 अक्टूबर से शारदीय नवरात्रि का पर्व शुरू हो जाएगा। इससे पहले बुधवार (02 अक्टूबर) को भारतीय समयानुसार रात्रि में लगभग 9 बजकर 13 मिनट से सूर्यग्रहण की घटना होने जा रही है। रात्रि में यह खगोलीय घटना होने के कारण इस ग्रहण को भारत में तो नहीं देखा जा सकेगा। लेकिन, अर्जेंटीना एवं चिली में इसे एन्यूलर या वलयाकार ग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। वहीं फिजी, उरुग्वे, ब्राजील पेरू आदि देशों में पार्शियल या आंशिक सूर्यग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। यह ग्रहण रात्रि 3 बजकर 17 मिनट पर समाप्त हो जाएगा।

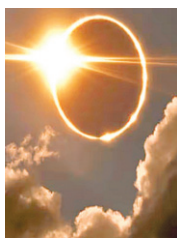

चीन सीमा पर भारत किसी भी आकस्मिक हालात से निपटने का तैयार

एलएसी पर स्थिति स्थिर, पर सामान्य नहीं : जनरल द्विवेदी

एजेंसी

नई दिल्ली (आईएएनएस)। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी के मुताबिक चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर स्थिति स्थिर, लेकिन सामान्य नहीं है। दिल्ली कैंट में मंगलवार को चाणक्य रक्षा संवाद में बोलते हुए, जनरल द्विवेदी ने यह बात कही। डिफेंस डायलॉग के दौरान उन्होंने कहा कि वर्तमान स्थिति संवेदनशील बनी हुई है। इसके साथ ही सेना प्रमुख ने यह भी बताया कि भारत किसी भी आकस्मिक स्थिति के लिए तैयार है।

गौरतलब है कि मई 2020 में भारत चीन सीमा पर सैन्य गतिरोध शुरू हुआ था। जनरल द्विवेदी ने बताया कि भारत का लक्ष्य मई 2020 में शुरू हुए सैन्य गतिरोध से पहले की स्थिति को बहाल करना है। इसमें लैंड ऑक्यूपेशन, बफर जोन और पेट्रोलिंग की स्थितियों को पहले की स्थिति में बहाल करना है। जनरल द्विवेदी ने कहा कि जब तक उस स्थिति की बहाली नहीं हो जाती, वहां स्थिति संवेदनशील बनी रहेगी। सीमा पर चीन के संदर्भ में जनरल द्विवेदी ने कहा, स्थिति स्थिर है, लेकिन सामान्य नहीं है और संवेदनशील है। अगर ऐसा है तो हम क्या चाहते हैं, हम चाहते हैं कि अप्रैल 2020 से पहले की स्थिति बहाल हो। इसलिए जब तक वह स्थिति बहाल नहीं हो जाती, जहां तक हमारा सवाल है, स्थिति संवेदनशील रहेगी और हम (सेना) किसी भी प्रकार की आकस्मिक स्थिति का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

जनरल द्विवेदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच चल रही कूटनीतिक वार्ता के बावजूद, किसी भी समझौते का क्रियान्वयन जमीन पर सैन्य कमांडरों पर निर्भर करता है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कूटनीतिक वार्ता से सकारात्मक संकेत मिले हैं। बावजूद इसके अभी तक सेनाओं की पूरी तरह से वापसी नहीं हो सकी है।

सेना प्रमुख ने कहा

भारत का लक्ष्य है वर्ष 2020 के सैन्य गतिरोध से पहले की स्थिति को बहाल करना

कूटनीतिक वार्ता से मिले सकारात्मक संकेत, पर नहीं हो पाई है सेनाओं की पूरी वापसी

अब राज्य सरकारों को भी संसाधन जोड़ने का अधिकार है

चीन के साथ सीमा मुद्दे पर चर्चा करते हुए सेना प्रमुख ने कहा कि जबतक अप्रैल 2020 से पहले की स्थिति बहाल नहीं हो जाती, तब तक स्थिति संवेदनशील बनी रहेगी और हम पूरी तरह से परिचालन के लिए तैयार हैं। वहीं, चीन द्वारा आधुनिक सीमावर्ती गांव बसाए जाने की भी खबर है। आर्मी चीफ ने भारतीय सीमावर्ती गांवों के विषय में कहा कि हमारे देश में इस तरह के मॉडल विलेज बनते आ रहे हैं। अब राज्य सरकारों को भी संसाधन जोड़ने का अधिकार है। अब सेना, राज्य सरकारें और केंद्र सरकार की निगरानी सब एक साथ जारी है, इसलिए अब जो नए मॉडल विलेज बन रहे हैं, वे और भी बेहतर होंगे। जम्मू-कश्मीर पर आर्मी चीफ ने कहा कि आर्टिकल 370 हटने के बाद अब वहां स्कूली बच्चों को मालूम हैं कि उन्हें कौन सा झंडा ड्रॉ करना है। भारतीय सेना प्रमुख का कहना है कि उन्हें लगता है कि हम शांति और समृद्धि की तरफ अग्रसर हैं।

साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

एजेंसी

नई दिल्ली (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। उन्होंने सभी से इस मुद्दे की गंभीरता को समझने और इसे दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह किया। राष्ट्रपति मुर्मू मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में 64वें राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय पाठ्यक्रम के संकाय और पाठ्यक्रम सदस्यों को संबोधित कर रही थीं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि गतिशील वैश्विक भू-राजनीतिक वातावरण कई चुनौतियां पेश करता है। हाल के दिनों में जिस तेज गति से घटनाएं सामने आई हैं, उसका शायद एक दशक पहले अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। इस प्रकार सभी अधिकारी, चाहे वे सिविल सेवाओं के हों या रक्षा सेवाओं के, उन्हें उन चुनौतियों और कमजोरियों के बारे में पता होना चाहिए, जिनका वे सामना करते हैं

और उन शक्तियों के बारे में पता होना चाहिए, जो ऐसी चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकती हैं। एक ताकत जो उनके पास होनी चाहिए और जिसके बिना काम नहीं चल सकता, वह है अपने संगठनों, देशों और मानवता की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम होना। नवाचार एक और कारक है, जो उन्हें भविष्य के लिए तैयार रखेगा।

राष्ट्रपति ने कहा कि आज हमारी सुरक्षा चिंताएं क्षेत्रीय अखंडता के संरक्षण से आगे बढ़कर राष्ट्रीय कल्याण के अन्य क्षेत्रों, जैसे आर्थिक, पर्यावरणीय, ऊर्जा सुरक्षा और साइबर सुरक्षा मुद्दों को भी शामिल करती हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए गहन शोध की आवश्यकता है और एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। साइबर हमलों से निपटने और उनका मुकाबला करने के लिए उच्च-स्तरीय तकनीकी हस्तक्षेप के साथ-साथ मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे के साथ-साथ एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और विशेष मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। यह उन क्षेत्रों में से एक है, जहां सिविल सेवाओं और सशस्त्र बलों को एक साथ मिलकर एक सुरक्षित राष्ट्रव्यापी प्रणाली बनाने में सक्षम होना चाहिए, जो ऐसे हमलों को विफल कर सके। उन्होंने कहा कि तकनीकी विकास ने देशों के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचे को स्थापित करना और उसका उपयोग करना अनिवार्य बना दिया है।

मोदी और जमैका के पीएम के बीच द्विपक्षीय वार्ता, व्यापार-निवेश पर चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस के बीच मंगलवार को नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय वार्ता हुई। इस दौरान दोनों नेताओं ने संबंधों को अधिक मजबूत करने और व्यापार, निवेश, नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल परिवर्तन, विकास साझेदारी, शिक्षा, क्षमता निर्माण और लोगों से लोगों से संपर्कों में सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस के बीच मंगलवार को प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता के बाद दोनों नेताओं ने संयुक्त पत्रकार सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान दोनों नेताओं की उपस्थिति में भारत और जमैका के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) का आदान-प्रदान किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर कहा कि भारत और जमैका के

संबंध साझा इतिहास, लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों के बीच संबंधों की मजबूती पर टिके हुए हैं। दोनों देशों को चार सी कल्चर (संस्कृति), क्रिकेट, कॉमनवेल्थ (राष्ट्रमंडल) और कैरिकॉम (कैरेबियन समुदाय) जोड़ता है। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि जमैका उच्चायोग के सामने सड़क का नाम जमैका मार्ग रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सड़क भावी पीढ़ियों के लिए हमारी गहरी मित्रता और हमारे सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगी। जमैका की विकास यात्रा में भारत को विश्वसनीय और प्रतिबद्ध विकास बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि डिजिटल सार्वजनिक ढांचा, लघु उद्योग, जैव ईंधन, नवाचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि जैसे क्षेत्र में जैसे क्षेत्रों में भारत अपना अनुभव जमैका के साथ साझा करने के लिए तैयार हैं। रक्षा के क्षेत्र में भारत द्वारा जमैका की सेना की ट्रेनिंग और क्षमता निर्माण पर दोनों देश आगे बढ़ेंगे। भारत और जमैका के बीच व्यापार और निवेश बढ़ रहा है। आईटीईसी और आईसीसीआर छात्रवृत्ति के माध्यम से भारत जमैका के लोगों के कौशल, विकास और क्षमता निर्माण में योगदान दिया है।

एजुकेशन/करियर

स्वयम प्रभा का उद्घाटन 07 जुलाई, 2017 को हुआ था। स्वयम प्रभा डीटीएच चैनलों का एक समूह है, जो सप्ताह में 7 दिन, 24 घंटे गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण करने के लिए समर्पित है। यह जीसैट -15 उपग्रह का उपयोग कर संचालित होता है। स्वयम प्रभा कम से कम (4) घंटे के लिए दैनिक नई सामग्री होस्ट करती है। यह एक दिन में 5 बार दोहराया जाता है, जिससे छात्र अपनी सुविधा का समय चुन सकते हैं। चैनल बीआईएसएजी (भास्कराचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस एप्लिकेशन और भू-सूचना विज्ञान), गांधीनगर से अपलिंक किए गए हैं । एनपीटीईएल, आईआईटी, यूजीसी, सीईसी, इग्नू, एनसीईआरटी और एनआईओएस द्वारा सामग्री प्रदान की जाती है। इनफ्लिबनेट सेंटर वेब पोर्टल का रखरखाव करता है।

फ्री पढ़ाई का प्लेटफार्म है स्वयं प्रभा

स्कूली शिक्षा के लिए

नमूना सामग्री

- दूरदर्शन की डीटीएच सेवा फ्री डिश के सब्सक्राइबर इन शैक्षिक चैनलों को उसी सेट टॉप बॉक्स और टीवी का उपयोग करके देख सकते हैं। किसी अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता नहीं है।
- वेब पोर्टल swayamprabha.gov.in पर टेलीकास्ट किए गए वीडियो का एक संग्रह भी है, जिसे कभी भी ऑनलाइन एक्सेस किया जा सकता है। छात्र वेबसाइट पर वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी के बारे में जानकारी पा सकते हैं।
- इनफ्लिबनेट केन्द्र ने भी स्वयम प्रभा ऐप विकसित की है। छात्र इसे प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। सभी वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी ऐप पर देखी जा सकती है।

कक्षा 1 से 10 तक : कक्षा 1 से 10 के लिए, स्वयम प्रभा डीटीएच टीवी चैनल पर प्रतिदिन 9.00 बजे से 11.00 बजे तक दो घंटे के टेलीकास्ट शेड्यूल रिकॉर्डेड और लाइव प्रोग्राम के साथ ही 04.00 से 06.00 के बीच दो घंटे पुनःप्रसारण की योजना बनाई गई है।

कक्षा 11 और 12 : कक्षा 11 और 12 के लिए स्वयम प्रभा डीटीएच टीवी चैनल पर प्रतिदिन 9.00 बजे से 12.00 बजे तक तीन घंटे का टेलीकास्ट शेड्यूल रिकॉर्डेड और लाइव प्रोग्राम)के साथ ही तीन घंटे 04.00 से 07.00 तक के पुनः प्रसारण की योजना हर दिन छह घंटे टेलीकास्ट करने की बनाई गई है।

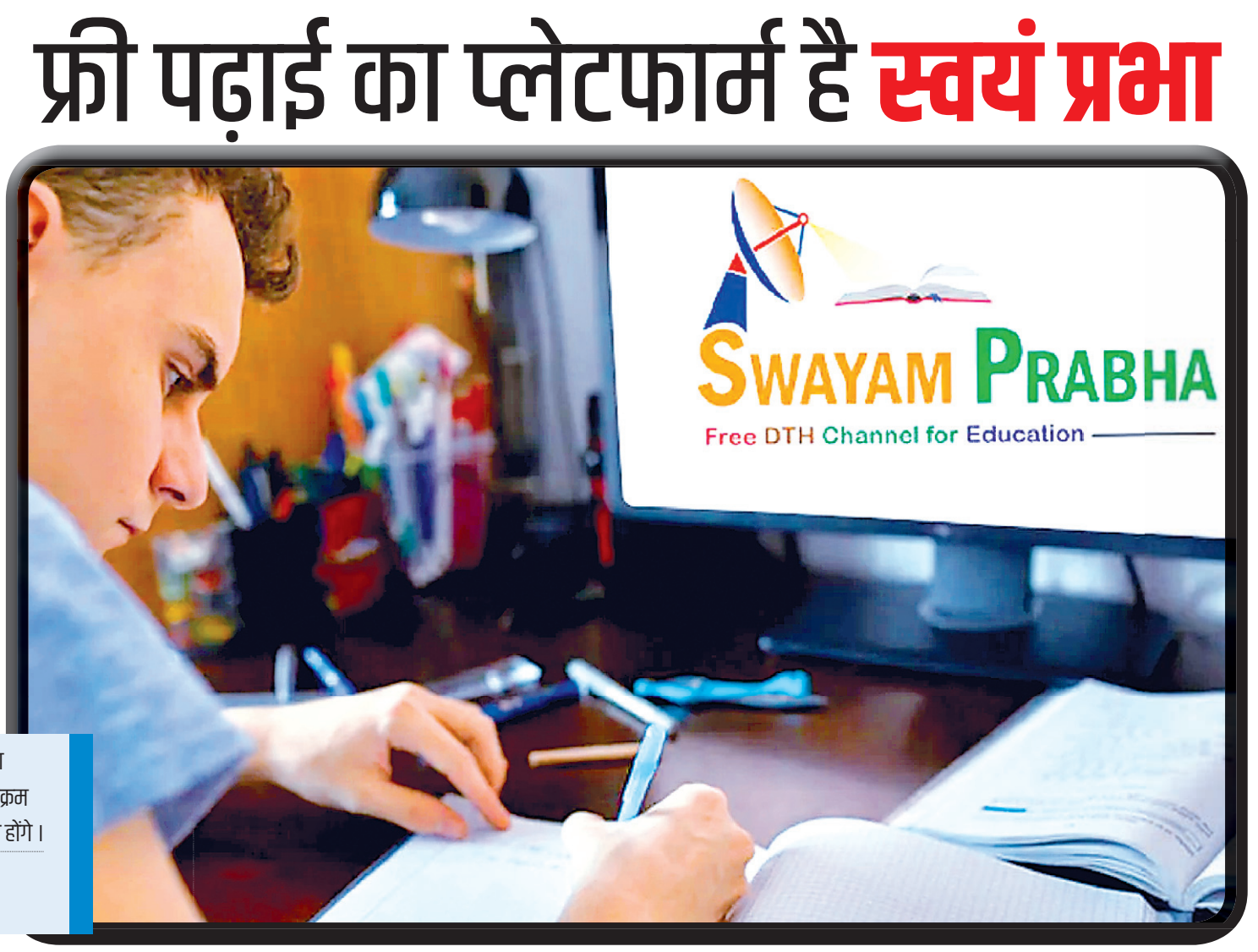

- यह प्रत्येक बच्चे को स्लॉट्स को सुविधाजनक रूप से चुनने और शैक्षिक कार्यक्रमों का सार्थक उपयोग करने और सीखने की सुविधा प्रदान करेगा। साप्ताहिक प्रसारण कार्यक्रम सीआईईटी-एनसीईआरटी वेबसाइट के साथ ही स्वयम प्रभा वेबसाइट पर भी उपलब्ध होंगे ।
- चैनल 22 भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित पर आईआईटी पाल व्याख्यान के लिए एकीकृत किया जाएगा।

12 डीटीएच टीवी चैनल शामिल हैं

1. स्वयं प्रभा — चैनल 23 - कक्षा-1
2. स्वयं प्रभा — चैनल 24 - कक्षा-2
3. स्वयं प्रभा — चैनल 25 - कक्षा-3
4. स्वयं प्रभा — चैनल 26 - कक्षा-4
5. स्वयं प्रभा — चैनल 27 - कक्षा-5
6. स्वयं प्रभा — चैनल 28 - कक्षा-6
7. स्वयं प्रभा — चैनल 29 - कक्षा-7
8. स्वयं प्रभा — चैनल 30 - कक्षा -8
9. स्वयं प्रभा — चैनल 31 - कक्षा-9
10. स्वयं प्रभा — चैनल 32 - कक्षा-10
11. स्वयं प्रभा — चैनल 33 - कक्षा-11